सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 14, नई दिल्ली । मंगलवार, 25 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 संस्कारशाला: जिंदगी की सरलता और हमारी उम्मीदों का भार

06 चुनौती बनता ठोस कचरे का निपटान

08 भुवनेश्वर मेट्रो रेल परियोजना और 400 इलेक्ट्रिक बसों को केंद्र सरकार का समर्थन मिलेगा

डेटा लीक और अवैध गतिविधियों के बारे में

संजय बाटला

नई दिल्ली। वाहनों से संबंधित डेटा लीक के मुद्दों के बारे में पहले भी कई बार हम आपको जानकारी दे चुके है लेकिन इसके बावजूद परिवहन विभाग/सरकार की ओर से अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। टेलीग्राम ऐप पर खुले आम आप बॉट के माध्यम से आप किसी भी वाहन नंबर से संबंधित पूर्ण जानकारी सिर्फ़ 800 रुपये प्रति प्रोग्राम उपलब्ध कर सकते है और वह इसे बेखौफ खुले आम बेच रहे हैं जो वाहन के विवरण तक पूरी पहुँच देता है। इसके अलावा, आप किसी भी वाहन मालिक का मोबाइल नंबर सिर्फ़ 25 रुपये में इनके द्वारा पा सकते हैं। यह सब खुले आम हो रहा है और यह संभव ही नहीं हो सकता जब तक परिवहन विभाग के किसी व्यक्ति की

इसमें संलिप्तता न हो। यह आश्चर्य की बात है कि विभाग अपनी नाक के नीचे चल रही ऐसी अवैध गतिविधियों को रोकने में इतना अक्षम है, लेकिन इसके अलावा यह भी हो सकता है की परिवहन विभाग का आला अधिकारी की ही संलिप्तता इसमें हो। **दिल्ली परिवहन के आला अधिकारी/ आयुक्त परिवहन/सह मुख्य सचिव/सचिव आई.टी के पदों पर एक ही अधिकारी विराजमान है और पूर्ण जानकारी होने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं करना इसका कारण हो सकता हैं।** इसके अलावा लगता है इसमें मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों की संलिप्तता भी हो सकती है क्योंकी वीवींआईपी के भी वाहनों का डेटा भी यहां आम आदमी के डेटा के समान उपलब्ध करवाया जा रहा है और फिर भी कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है, **मंत्रालय और विभाग के वरिष्ठ अधिकारी के संलिप्त हुए बिना ऐसा कैसे हो सकता है, आप ही बताए ?** हम भारत सरकार, दिल्ली सरकार से आग्रह करते हैं की आप इस पर यथाशीघ्र गौर करें और स्थिति और खराब होने से पहले कार्रवाई करें।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

परिवहन विभाग ने प्रवर्तन शाखा ग्रुप डी और ग्रुप सी कर्मचारियों के लिए 21 मार्च 1997 से आज तक 5वें, 6वें, 7वें वेतन आयोग के अनुसार आर.आर.संशोधन नही किया

परिवहन विशेष न्यूज

- परिवहन विभाग के आला अधिकारी के द्वारा गैर कानूनी तरीके से बिना आर.आर. सशोधन करें विभागीयें पदोन्नति
- मौलिक अधिकारो का हनन करने वाले अधिकारी के खिलाफ Rule 14 (14) of the CCA/CCS Rules 1965 के तहत सम्बधित धाराओं में उचित कर्यवाही होनी चाहिए।

नई दिल्ली। परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा प्रवर्तन शाखा के कर्मचारियों का 21 मार्च 1997 से आज तक वेतन निर्धारित नहीं किया।

1. 21/03/1997 से सिपाही पद पर भर्ती/ कार्यरत हूँ। विभाग द्वारा ग्रुप डी से ग्रुप सी की विभागीय पदोन्नति/ आर.आर. संशोधन करके तीन वर्ष बाद पदोन्नति करनी थी। परन्तु दिनांक 21/03/1997 से आज तक आर.आर. सशोधन नहीं किया। परिवहन विभाग के प्रवर्तन शाखा में 1997 में सिपाही पद पर वेतन 775 1150, 2610 4000 ग्रेड पे पर ग्रुप D में भर्ती डी ग्रेड कर्मचारियों का आज तक आर.आर. संशोधन नही किया गया और न ही वेतन निर्धारित किया गया।

2. पांचवा वेतन आयोग के अनुसार आर.आर. संशोधन करके वेतन निर्धारित करना और तीन वर्ष (20/03/2000) के बाद विभागीय पदोन्नती करनी थी परन्तु आज तक नही की गई।

परिवहन विभाग के आला अधिकारी के अनुसार आज तक प्रवर्तन शाखा के कर्मचारियो का आर.आर. संशोधन नही किया गया और ना ही वेतन निर्धारित किया और ना ही आर.आर. संशोधन करके किसी भी प्रवर्तन शाखा के कर्मचारियों का प्रमोशन किया।

3. परिवहन विभाग के आला अधिकारी ने 5थ, 6थ, 7थ पे कमीशन के अनुसार जानबूझ कर आज तक आर.आर. संशोधन नही किया और सभी प्रमोशन गैरकानूनी तरीके से किए है।

आपकी जानकारी के अनुसार नियमानुसार आर.आर. संशोधन के बाद पे निर्धारित किए बिना किया या कागजों में जनता को दिखाया जाने वाली पदोन्नति अमान्य है और इस तरह दिल्ली प्रवर्तन शाखा का कोई भी कर्मचारी/अधिकारी चालान नही कर सकता है। क्योंकि सभी क्लास IV के कर्मचारी है।

4. बिना आर.आर. संशोधन के प्रवर्तन शाखा के क्लास IV ग्रेड पे 1800/- के सभी कर्मचारियों से गैर कानूनी तरीके से चालान कराने वाले परिवहन विभाग के अधिकारी के खिलाफ निष्पक्ष एजेंसी द्वारा जाँच करवा कर सेक्शन - 14 के तहत उचित कार्यवाही होनी चाहिए।

5. दिनांक 21/03/1997 से आज तक ग्रेड पे 1800 से आर.आर. संशोधन 21/03/2000 (तीन वर्ष) तक नहीं करने और ग्रेड पे 1900 और विभागीय पदोन्नति नहीं करने पर कार्यवाही होनी चाहिए।

विभाग द्वारा ग्रुप डी से ग्रुप सी की विभागीय पदोन्नति तीन वर्ष बाद आर आर को संशोधन करके वेतन निर्धारित ग्रेड पे 1900/- Six Pay Commission 5 October 2006 Pay Fixation S 6 (3200-85-3950-80-4590) PAY Band 5200-20200 Garde Pay Fixation 2000/- As per Rule Six Pay Commission और 7th Pay commission के DOP&T VIDE OM NO. - 14017/48/2020 ESTT. (RR) DATED 31/12/2010, SUBJECT- REVIEW OF The S 7 (4000-100-6000 5200-20200) SERVICE(RRS/SRs) - reg के अनुसार आज तक लागू नही किया है। यह जाँच का विषय है। Garde Pay Fixation 2400 as per Seven Pay Commission RECRUETMENT RULE/

6. परिवहन विभाग के आला अधिकारी ने ग्रुप डी के प्रवर्तन शाखा के कर्मचारियों का प्रमोशन प्रधान सिपाही से लेकर प्रवर्तन शाखा अधिकारी तक बिना आर.आर. संशोधन कर रहा है। **ऐसे सभी गैर कानूनी तरीके से किए गए प्रमोशन संज्ञेय अपराध है और जांच का विषय है।**

मौलिक अधिकारो का हनन करने वाले अधिकारी के खिलाफ Rule 14 (14) of the CCA/CCS Rules 1965 के तहत सम्बधित धाराओं में उचित कर्यवाही होनी चाहिए।

नौ दिन बाद हवा फिर खराब, ग्रेप एक की पाबंदियां लागू; जानें एनसीआर का हाल

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की हवा एक बार फिर खराब हो गई है जिसके चलते ग्रेप के पहले चरण की पाबंदियां लाग कर दी गई। 15 मार्च को हवा की गुणवत्ता में सुधार के बाद सभी पाबंदियां हटा दी गई थीं लेकिन अब फिर से वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है। इस बार भी अपनी समयावधि पूरी कर चुके पेट्रोल और डीजल के वाहनों पर रोक रहेगी।

नई दिल्ली। नौ दिन तक संतोषजनक एवं मध्यम श्रेणी में रहने के बाद सोमवार को दिल्ली की हवा एक बार फिर से हवा खराब हो गई। इसी के चलते ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के पहले चरण की पाबंदियां भी लागू कर दी गईं।

15 मार्च को ही हवा के स्तर में सुधार आने के बाद सभी पाबंदियां हटा दी गई थीं, लेकिन वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने सोमवार को ग्रेप के पहले चरण के प्रतिबंध लागू करने का फैसला किया है। इसके तहत अपनी समयावधि पूरी कर चुके पेट्रोल और डीजल के वाहनों पर रोक रहेगी। कचरा जलाने पर भी रोक रहेगी। साथ ही रेस्टोरेंट और होटलों में कोयला और लकड़ी जलाने पर भी रोक रहेगी।

दिल्ली में लगातार बढ़ रहा प्रदूषण

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार सोमवार को राजधानी का एक्यूआई 206 रहा जो खराब श्रेणी में आता है। 15 फरवरी को यह 100 से नीचे 85 यानी संतोषजनक श्रेणी में दर्ज किया गया था। उसके बाद से यह लगातार 100 या 200 से नीचे यानी संतोषजनक या मध्यम श्रेणी में चल रहा था। एनसीआर के शहरों में भी सोमवार को यह मध्यम से खराब श्रेणी में रहा। अभी अगले कई दिन इसमें बहुत बदलाव होने के कोई आसार नहीं हैं।

गाजियाबाद की हवा रही सबसे प्रदूषित

जिले के लोगों को जहरीली हवा से राहत नहीं मिल रही है। सोमवार को जिले की हवा देश में सबसे खराब दर्ज की गई। हाजीपुर और बागपत 226 एक्यूआई के साथ दूसरे नंबर पर रहे। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 297 दर्ज किया गया। लोनी का एक्यूआई 400 पार गंभीर श्रेणी में पहुंच गया। वहीं, अधिकारियों को प्रदूषण का स्तर बढ़ने का कारण पता नहीं है।

गुरुग्राम में प्रचंड हुई गर्मी

गुरुग्राम में लगातार पारे में उछाल दर्ज किया जा रहा है। सोमवार को दिन का तापमान 35.3 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। सुबह की शुरुआत तेज धूप से हुई और दोपहर में एक से दो बजे के बीच प्रचंड धूप से लोग बेहाल हो गए। घरों और कार्यालयों में अब एसी चलने लगे हैं। दोपहर से शाम तक गर्मी झुलसाती रही। न्यूनतम तापमान 14.7 डिग्री सेल्सियस रहा।

28 मार्च तक मौसम साफ रहने का अनुमान

धूप और गर्मी के कारण दोपहर में शहर के बाजार भी सुनसान हो गए। पार्कों में भी सुबह आठ बजे तक और शाम को छह बजे के बाद ही चहल-पहल नजर आती है। मौसम विभाग के अनुसार 28 मार्च तक मौसम साफ रहने का अनुमान है। अधिकतम तापमान 36.0 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

अवैध रूप से खड़े वाहनों पर दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की सख्त कार्रवाई, काटे 24 हजार चालान, 700 वाहन जब्त

परिवहन विशेष न्यूज

पूर्वी दिल्ली में अवैध पार्किंग की समस्या विकराल रूप ले चुकी है। सड़कों पर अवैध रूप से खड़े वाहनों के कारण जाम की स्थिति बनी रहती है। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने अवैध पार्किंग करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए दो महीने में 24 हजार चालान किए हैं और करीब 700 वाहनों को जब्त किया है। इसके बावजूद भी सड़कों पर अवैध पार्किंग की समस्या बनी हुई है।

दिल्ली। यमुनापार में सड़कों पर होने वाली अवैध पार्किंग की समस्या विकराल है। कोई ऐसी सड़क नहीं है, जहां पर अवैध पार्किंग न होती हो। दिल्ली यातायात पुलिस ने अवैध पार्किंग करने वालों के खिलाफ दो माह में 24 हजार चालान किए हैं। करीब सात सौ वाहनों को जब्त किया है। इतनी कार्रवाई होने के बाद भी सड़कों पर हालात नहीं बदले हैं।

पीडब्ल्यूडी की तरफ से सड़कों पर जगह-जगह बोर्ड भी लगे हैं कि वाहन खड़ा न करे। इसके बावजूद उन्हीं बोर्ड के पास धड़ल्ले से वाहनों की पार्किंग हो रही है। गांधी नगर पुश्ता रोड, सीलमपुर, वजीराबाद रोड, जाफराबाद रोड, जीटी रोड, पटपड़गंज रोड, विकास मार्ग, स्वामी दयानंद मार्ग, कोंडली, त्रिलोकपुरी, मयूर विहार फेज-तीन, दिलशाद गार्डन, सीमापुरी, नंद नगरी समेत अधिकतर सड़कों के हालात अमूमन एक जैसे हैं।

बीते दो माह में 24 हजार चालान किए गए

सड़कों पर पार्किंग होने से आधी से ज्यादा सड़कें घिर जाती हैं, रास्ता संकरा होने से सड़कों पर जाम लगता है। हर रोज लोगों को जाम से जूझना पड़ता है। दोपहर के वक्त स्कूलों की छुट्टी के समय हालत ज्यादा खराब होते हैं। लोगों को 30 से 40 मिनट तक जाम से जूझना पड़ता है। पुलिस की सख्ती के बाद भी हालात नहीं बदल रहे हैं। अवैध पार्किंग का चालान पांच सौ रुपये का होता है। जनवरी व फरवरी माह में पुलिस ने 24 हजार चालान किए।

अवैध पार्किंग को लेकर पुलिस सख्त

पूर्वी रेंज के जिला पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार रावल ने कहा कि अवैध पार्किंग को लेकर पुलिस सख्त है। 24 हजार अवैध पार्किंग के चालान किए गए हैं। सात सौ वाहनों को पुलिस ने जब्त किया है। यातायात पुलिसकर्मी सड़कों पर गश्त करते हैं, जहां भी अवैध पार्किंग दिखती है वहां पर कार्रवाई की जाती है। क्रेन के जरिये वाहनों को जब्त किया जाता है।

पार्किंग स्थल बढ़ाने की जरूरत

पुलिस ने कहा कि सड़कों पर अवैध पार्किंग को रोकने के लिए पार्किंग स्थल बढ़ाने की जरूरत है। यमुनापार में निगम व दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड की करीब 50 पार्किंग स्थल हैं। लेकिन वह कम पड़ जाते हैं। ज्यादा पार्किंग स्थल होंगे तो उसी में वाहन खड़े होंगे। कम पार्किंग स्थल होने से परेशानी बढ़ रही है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं मीन राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

पूर्वा भाद्रपद के अंतिम चरण से लेकर रेवती पर्यंत चंद्रमा का गोचर मीन राशि में होता है। मीन द्विस्वाभाव वाली,स्त्री जाति की,
कफ प्रकृति वाली,जल तत्व वाली रात्रि बली तथा उत्तर दिशा की स्वामी मानी गई है। इसके राशि स्वामी देव गुरु बृहस्पति हैं। इससे कुंडली में शरीर के अंगो के पैरो का विचार किया जाता है।

स्वभाव और गुण : मीन राशि के जन्मे जातक मध्यम या लंबे कद के, सुंदर शरीर वाले,तेजस्वी चेहरे वाले,उन्नत नाक और सुंदर आंखो वाले होते हैं। मीन राशि के लोग दयालु,सहयोगी,रूढ़िवादी,शर्मीले,दूसरों को प्रभावित करने वाले होते हैं। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं।इस राशि के जातक भ्रमित, डरपोंक ,कामुक,आत्मरोपी, अत्यंत भावुक,निर्णय लेने में कभी कभी अधीर हो जाते है। ये सही को गलत और गलत को सही समझ बैठते हैं।इन्हे यात्रा करना काफी पसंद होता है।

कैरियर : मीन राशि के जातक साहित्यकार,पुजारी,आध्यात्मिक, अभिनेता,फोटोग्राफी,नर्सिंग होम,पशु चिकित्सक,नौ सेना,नौ परिवहन,आयात निर्यात,अस्पताल कर्मचारी,काफी हाउस,रेस्टोरेंट, मैनेजर आदि में कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते है।

रोग : मीन राशि के लोगो को फेफड़े के रोग, सर्दी, क्षयरोग, अस्थमा, जलोदार, फिट आना, भुल्लकड़पन,पाचन तंत्र संबंधित रोग हो सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : मंगल,गुरु और रविवार

भाग्यशाली रंग : संतरी,पीला,लाल और गुलाबी

भाग्यशाली अंक :1,2,3,4,9

शुभ रत्न : पीला

उपाय : मीन राशि के लोगो को गुरुवार का व्रत तथा भगवान विष्णु की उपासना करना अत्यंत लाभकारी होता है। प्रत्येक गुरुवार को भगवान शिव पर चावल और तिल चढ़ाएं और कपूर से आरती करें।

जानिए शिवलिंग पर क्या चढ़ाने से क्या फल मिलता है ?

1. शिवलिंग पर दूध अर्पित करने से आरोग्य की प्राप्ति होती है।

2. शिवलिंग पर दही अर्पित करने से हमें जीवन में हर्ष और उल्लास की प्राप्ति होती है।

3. शिवलिंग पर शहद चडाने से रूप और सौंदर्य प्राप्त होता है , वाणी में मिठास रहती है, समाज में लोकप्रियता बढ़ती है।

4. शिवलिंग पर घी चढ़ाने से हमें तेज की प्राप्ति होती है।

5. शिवलिंग पर शकर चढ़ाने से सुख - समृद्धि और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

6. शिवलिंग पर ईत्र चढ़ाने से धर्म की प्राप्ति होती हैं।

7. शिवलिंग पर सुगंधित तेल चढ़ाने से धन धान्य की वृद्धि होती है, जीवन में सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

8. शिवलिंग पर चंदन चढ़ाने से समाज में यश और मान-सम्मान की प्राप्ति होती है।

9. शिवलिंग पर केशर अर्पित करने से दाम्पत्य जीवन सुखमय होता है , विवाह में आने वाली समस्त अड़चने दूर होती है, मनचाहा जीवन साथी प्राप्त होता है विवाह के योग शीघ्र बनते है ।

10. शिवलिंग पर भांग चढ़ाने से हमारे समस्त पाप समस्त बुराइयां दूर होती हैं।

11. शिवलिंग पर आँवला अथवा आँवले का रस चढ़ाने से दीर्घ आयु प्राप्त होती है ।

12. शिवलिंग पर गन्ने का रस चढ़ाने से समस्त पारिवारिक सुखो की प्राप्ति होती है , परिवार के सदस्यों के मध्य में प्रेम बना रहता है।

13. शिवलिंग पर गेहूं चढ़ाने से वंश वृद्धि होती है, योग्य संतान की प्राप्ति होती है, संतान आज्ञाकारी होती है।

14. शिवलिंग पर चावल चढ़ाने से धन और सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

15. शिवलिंग पर तिल चढ़ाने से पापों समस्त रोगो का नाश होता है।

16. शिवलिंग पर जौ अर्पित करने से सांसारिक सुखो की प्राप्ति होती है।

17. भगवान भोलेनाथ की बेलपत्र से पूजा करने से सभी संकट दूर होते है।

18. भगवान भोलेनाथ की दूर्वा से पूजन करने दीर्घ आयु की प्राप्ति होती है।

19. भगवान भोलेनाथ की हारसिंगार के फूलों से पूजन करने पर जीवन में सुख-संपत्ति और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

20. भगवान भोलेनाथ पर चमेली के फूल चढ़ाने से सुख समृद्धि प्राप्त होती है।

21. भगवान भोलेनाथ की धतूरे से पूजन करने पर भगवान शंकर सुयोग्य पुत्र प्रदान करते हैं, जो कुल का नाम रोशन करता है।

22. भगवान भोलेनाथ की आंकड़े के फूल से पूजन, श्रंगार करने से जीवन के सभी सुख मिलते है, पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

23. भगवान भोलेनाथ की अलसी के फूलों से पूजन करने से मनुष्य सभी देवताओं का प्रिय हो जाता है।

24. भगवान भोलेनाथ की बेला के फूल से पूजन करने पर मनचाहा, सुंदर जीवनसाथी मिलता है।

25. भगवान भोलेनाथ की जूही के फूल से पूजन करने से घर कारोबार में धन धान्य की कोई भी कमी नहीं होती है।

महादेव ने सिंहचर्म का वस्त्र क्यों धारण किया ?

भगवान शिव स्वयं परब्रह्म हैं। इसलिए वे अपने वास्तविक स्वरुप में यानी नग्न रहना पसंद करते हैं। लेकिन उन्होंने श्रीहरि की विनती स्वीकार करके बाघंबर या सिंहचर्म को वस्त्र के रुप में स्वीकार किया। यह कहानी भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार से जुड़ी हुई है। प्रह्लाद की रक्षा के लिए श्रीहरि ने नरसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु का वध अपने पंजे से कर दिया। लेकिन भक्त पर हुए अत्याचार से नाराज नरसिंह पूरी सृष्टि के विनाश के लिए उतारु हो गए। उन्होंने समस्त देवताओं यहां तक कि ब्रह्माजी और लक्ष्मी की प्रार्थना भी अस्वीकार कर दी तब सृष्टि की रक्षा के लिए महादेव ने अपने गण वीरभद्र को भेजा। वीरभद्र ने नरसिंह रुपी विष्णु को उनका असली स्वरुप याद दिलाने का प्रयास किया लेकिन मोह ग्रस्त नरसिंह ने एक न सुनी।

तब महादेव ने संसार की रक्षा के लिए शरभ अवतार धारण किया। जो वीरभद्र, गरुड़ और भैरव का सम्मिलित स्वरुप था। उसके आठ शक्तिशाली पंजे और शक्तिशाली पंख थे। शरभरूप में एक पंख में वीरभद्र एवं दूसरे पंख में महाकाली स्थित हुये, भगवान शरभ के मस्तक में भैरव एवं चोंच में सदाशिव स्थित हुये और शरभ रूपी शिव ने भगवान नृसिंह को अपने पंजों में जकड़ लिया और आकाश में उड़ गये।

शिव अपनी पूंछ में नृसिंह को लपेटकर छाती में चोंच का प्रहार करने लगे। फिर पंजों से उसकी नाभि को चीर दिया। नरसिंह का मोह नष्ट हो गया। उसका तेज अलग होकर महाविष्णु के रुप में प्रकट हुआ। उन्होंने महादेव से अनुरोध किया कि नरसिंह के चर्म को अपने वस्त्र के रुप में स्वीकार करके सम्मानित करें। इसके बाद महान पशुपति शिव ने उस चर्म को अपने वस्त्र और आसन के रुप में धारण किया और भक्तजनों के हृदय में अपना मोहक स्वरुप प्रकाशित किया।

मृत्यु के पश्चात मनुष्य के साथ मनुष्य की पाँच वस्तुएँ साथ जाती हैं

1. कामना-यदि मृत्यु के समय हमारे मन मे किसी वस्तु विशेष के प्रति कोई आसक्ति शेष रह जाती है,कोई इक्षा अधूरी रह जाती है,कोई अपूर्ण कामना रह जाती है तो मरणोपरांत भी वही कामना उस जीवात्मा के साथ जाती है।

2. वासना- वासना कामना की ही साथी है। वासना का अर्थ केवल शारिरिक भोग से नही अपितु इस संसार मे भोगे हुए हर उस सुख से है जो उस जीवात्मा को आनन्दित करता है। फिर वो घर हो ,पैसा हो ,गाड़ी हो, रूतबा हो,या शौर्य। मृत्यु के बाद भी ये अधूरी वासनाएं मनुष्य के साथ ही जाती हैं और मोक्ष प्राप्ति में बाधक होती है।

3. कर्म- मृत्यु के बाद हमारे द्वारा किये गए कर्म चाहे वो सुकर्म हो अथवा कुकर्म हमारे साथ ही जाता है। मरणोपरांत जीवात्मा अपने द्वारा कि ये गए कर्मो की पूँजी भी साथ ले जाता है। जिस के हिसाब किताब द्वारा उस जीवात्मा का यानी हमारा अगला जन्म निर्धारित किया जाता है।

4. कर्ज़- यदि मनुष्य ने आपने जीवन मे कभी भी किसी प्रकार का ऋण लिया हो तो उस ऋण को यथासम्भव उतार देना चाहिए,ताकि मरणोपरांत इस लोक से उस ऋण को उसलोक में अपने साथ न ले जाना पड़े।

5. पूण्य- हमारे द्वारा किये गए दान-दक्षिणा व परमार्थ के कार्य ही हमारे पुण्यों की पूंजी होती है इसलिए हमें समय-समय पर अपने सामर्थ्य अनुसार दान-दक्षिणा एवं परमार्थ और परोपकार आवश्य ही करने चाहिए।

इन्ही पांचों वस्तुओं से ही मनुष्य को इस मृत्युलोक को छोड़ कर परलोक जाने पर ।उस लोक अथवा अगले जन्म की प्रक्रिया का चयन किया जाता है।

शास्त्र ज्ञान- यह 6 काम बदल सकते हैं आपका भाग्य

सुखी और श्रेष्ठ जीवन के लिए शास्त्रों में कई नियम और परंपराएं बताई गई हैं। इन नियमों और परंपराओं का पालन करने पर अक्षय पुण्य के साथ ही धन-संपत्ति की प्राप्त होती है, भाग्य से संबंधित बाधाएं दूर हो सकती हैं। यहां जानिए एक श्लोक जिसमें 6 ऐसे काम बताए गए हैं जो भाग्य को भी बदल सकते हैं'

विष्णुरेकादशी गीता तुलसी विप्रधेनवः।
असारे दुर्गसंसारे षट्पदी मुक्तिदायिनी।।

इस श्लोक में 6 बातें बताई गई हैं, जिनका ध्यान दैनिक जीवन में रखने पर सभी प्रकार की बाधाएं दूर हो सकती हैं।

1. भगवान विष्णु का पूजन करना इन 6 बातों में पहला काम है भगवान विष्णु की पूजा करना। भगवान विष्णु परमात्मा के तीन स्वरूपों में से एक जगत के पालक माने गए हैं। श्रीहरि ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि और शांति के स्वामी भी हैं। विष्णु अवतारों की पूजा करने पर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष, सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

2. एकादशी व्रत करना इस श्लोक में दूसरी बात बताई गई है एकादशी व्रत। ये व्रत भगवान विष्णु को ही समर्पित है। हिन्दी पंचांग के अनुसार हर माह में 2 एकादशियां आती है। एक कृष्ण पक्ष में और एक शुक्ल पक्ष में। दोनों ही पक्षों की एकादशी पर व्रत करने की परंपरा प्राचीन समय से चली आ रही है। आज भी जो लोग सही विधि और नियमों का पालन करते हुए एकादशी व्रत करते हैं, उनके घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है।

3. श्रीमद् भागवत गीता का पाठ करना मान्यता है कि श्रीमद् भागवत गीता भगवान श्रीकृष्ण का ही साक्षात्ज्ञानस्वरूप है। जो लोग नियमित रूप से गीता का या गीता के श्लोकों का पाठ करते हैं, वे भगवान की कृपा प्राप्त करते हैं। गीता पाठ के साथ ही इस ग्रंथ में दी गई शिक्षाओं का पालन भी दैनिक जीवन में करना चाहिए। जो भी शुभ काम करें, भगवान का ध्यान करते हुए करें, सफलता मिलने की संभावनाएं बढ़ जाएंगी।

4. तुलसी की देखभाल करना घर में तुलसी होना शुभ और स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है, ये बात विज्ञान भी मान चुका है।

तुलसी की महक से वातावरण के सूक्ष्म हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। घर के आसपास की नकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है और सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। साथ ही, तुलसी की देखभाल करने और पूजन करने से देवी लक्ष्मी सहित सभी देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है।

5. ब्राह्मण का सम्मान करना पुरानी मान्यताओं के अनुसार ब्राह्मण सदैव आदरणीय माने गए हैं। जो लोग इनका अपमान करते हैं, वे जीवन में दुख प्राप्त करते हैं। ब्राह्मण ही भगवान और भक्त के बीच की अहम कड़ी है। ब्राह्मण ही सही विधि से पूजन आदि कर्म करवाते हैं। शास्त्रों का ज्ञान प्रसारित करते हैं। दुखों को दूर करने और सुखी जीवन प्राप्त करने के उपाय बताते हैं। अतः ब्राह्मणों का सदैव सम्मान करना चाहिए।

6. गाय की सेवा करना इस श्लोक में गौ यानी गाय का भी महत्व बताया गया है। जिन घरों में गाय होती है, वहां सभी देवी-देवता वास करते हैं। गाय से प्राप्त होने वाले दूध, मूत्र और गोबर पवित्र और स्वास्थ्यवर्धक हैं। ये बात विज्ञान भी स्वीकार कर चुका है कि गौमूत्र के नियमित सेवन से केंसर जैसी गंभीर बीमारी में भी राहत मिल सकती है। यदि गाय का पालन नहीं कर सकते हैं तो किसी गौशाला में अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार धन का दान किया जा सकता है।

भविष्य जानने की विद्या रमल प्रश्नावली के 7 रहस्य जानिए

मान्यता अनुसार रमल प्रश्नावली नामक एक विद्या से दिशा ज्ञान और भविष्य जाना जाता है। आखिर इस विद्या को किसने इजाद किया और कैसे इस विद्या से आप अपना भविष्य जान सकते हैं, जानिए इस संबंध में 7 रहस्यमयी बातें।

1. भारत से अरब में प्रचलित हुई यह विद्या : रमल प्रश्नावली की उत्पत्ति भारत में ही हुई थी। लेकिन इसका प्रचलत भिन्न रूप में अरब में ज्यादा रहा। कहते हैं कि एक व्यक्ति अरब के रेगिस्तान में भटक गया। तब साक्षात शक्ति ने आकर उसके सामने चार रेखा और चार बिन्दु बना दिए। उसे एक ऐसी विधि बताई कि वह गंतव्य स्थान का मार्ग जान गया। तभी से इस शास्त्र की उत्पत्ति हुई,

2. भारत से यूनान में प्रचलित हुई यह विद्या : नेपोलियन प्रश्नावली का मूल भी रमल प्रश्नावली ही है। पहली सदी में यह विद्या अरब में प्रचारित हुई और यवन के कई पुरोहितों ने इसे जानकर इसका नाम यवनीय ज्योतिष रख दिया था। इस शास्त्र के जानकार दानियल और लुकमान जैसे लोग भी थे। सिकंदर के साथ उनके सलाकार सुरखाब भी इस विद्या के जानकार थे।

3. भैरवनाथ ने खोजी थी यह विद्या : कहते हैं कि सती के वियोग से व्याकुल भगवान शिव के समक्ष भैरव ने चार बिन्दु बना दिए और उनसे उसी में अपनी इच्छित प्रिया सती को खोजने के लिए कहा। विशेष विधान से उन्होंने इसे सिद्ध करके सातवें लोक में अपनी प्रियतमा को देखा। तभी से इस तरह से भविष्य देखने का प्रचलन शुरू हुआ।

4. मय दावन जानता था यह विद्या : यह विद्या द्वापरयुग में भी प्रचलन में थी। कहते हैं कि पांडवों के दरबार में मय दानव इस विद्या का जानकार था। राम शलाका भी इसी तरह की विद्या है,

5. चाणक्य के काल में भी थी प्रचलित यह विद्या : जिमुतवाहन के दरबार में रहे विष्णुगुप्त शर्मा इस शास्त्र के उत्तम ज्ञाता थे। आदि शंकराचार्य भी इस विद्या के जानकार थे।

6. कैसी होती है रमल प्रश्नावली : रमल प्रश्नावली के अंतर्गत चंदन की लकड़ी का चौकोर पाट बनवाकर उस पर 1, 2, 3 और 4 खुदवा लिया जाता है। फिर उसी लकड़ी के तीन पासे बने होते हैं जिस पर इसी तरह से अंक लिखे होते हैं। फिर मां कुष्मांडा का ध्यान करते हुए तीनों पासे को छोड़ा जाता है। उसका जो अंक आता है उसी अंक पर फल लिखा होता है।

7. 444 प्रश्न होते हैं : इस तरह कम से कम 444 तक के प्रश्नों के फल होते हैं। रमल शास्त्र में पासा डालने के उपरांत प्रस्तार अर्थात 'जायचा' बनाया जाता है। प्रस्तार में 16 घर होते हैं। 13, 14, 15 और 16 पर गवाहन अर्थात साक्षी घर होते हैं। प्रस्तार के 1, 5, 7, 13 अग्नि तत्व के होते हैं। 2, 6, 10, 14, 13, 7, 11, 15 घर जल तत्व के होते हैं। यदि 1, 2, 5, 6, 9, 11, 12, 14 15 और 16 अंकों में से कोई एक अंक आए तो

क्या संकेत देता है तुलसी का मुरझाया पौधा ?

1. प्रकृति का महत्व : - प्रकृति की अपनी एक अलग विशेषता है। इसने अपनी हर एक रचना को बड़ी ही खूबी और विशिष्ट नेमत बख्शी है। इंसान तो वैसे भी प्रकृति की उम्दा रचनाओं में से एक है जो समझदारी और सूझबूझ से काम लेता है। इसके अलावा जानवरों की खूबी ये है कि वे आने वाले खतरे, मसलन भूकंप, सुनामी, पारलौकिक ताकतों आदि को पहले ही भांप सकने में सक्षम होते हैं। लेकिन बहुत ही कम लोग यह बात जानते हैं कि पौधों के भीतर भी ऐसी ही अलग विशेषता है, जिसे अगर समझ लिया जाए तो घर के सदस्यों पर आने वाले कष्टों को पहले ही टाला जा सकता है।

2. क्यों मुरझाता है तुलसी का पौधा : - शायद कभी किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि चाहे तुलसी के पौधे पर कितना ही पानी क्यों ना डाला जाए, उसकी कितनी ही देखभाल क्यों ना की जाए, वह अचानक मुरझाने या सूखने क्यों लगता है?

3. क्या बताना चाहता है : - आपको यकीन नहीं होगा लेकिन तुलसी का मुरझाया हुआ पौधा आपको यह बताने की कोशिश कर रहा होता है कि जल्द ही परिवार पर किसी विपत्ति का साया मंडरा सकता है। कहने का अर्थ यह है कि अगर परिवार के किसी भी सदस्य पर कोई मुश्किल आने वाली है तो उसकी सबसे पहली नजर घर में मौजूद तुलसी के पौधे पर पड़ती है।

4. हिन्दू शास्त्र : - शास्त्रों में यह बात भली प्रकार से उल्लिखित है कि अगर घर पर कोई संकट आने वाला है तो सबसे पहले उस घर से लक्ष्मी यानि तुलसी चली जाती है और वहां दरिद्रता का वास होने लगता है।

5. बुध ग्रह : - जहां दरिद्रता, अशांति और कलह का वातावरण होता है वहां कभी भी लक्ष्मी का वास नहीं होता। ज्योतिष के अनुसार ऐसा बुध ग्रह की वजह से होता है क्योंकि बुध का रंग हरा होता है और वह पेड़-पौधों का भी कारक माना जाता है।

6. लाल किताब : - ज्योतिष शास्त्र से संबंधित लाल किताब के अनुसार बुध को एक ऐसा ग्रह माना गया है जो अन्य ग्रहों के अच्छे-बुरे प्रभाव को व्यक्ति तक पहुंचाता है। अगर कोई ग्रह अशुभ फल देने वाला है तो उसका असर बुध ग्रह से संबंधित वस्तुओं पर भी होगा और अगर कोई अच्छा फल मिलने वाला है तो उसका असर भी बुध ग्रह से जुड़ी चीजों पर दिखाई देगा।

7. अच्छा और बुरा प्रभाव : - अच्छे प्रभाव में पेड़-पौधे फलने-फूलने लगते हैं और बुरे प्रभाव में मुरझाकर अपनी दुर्दशा बयां कर देते हैं।

8. विभिन्न प्रकार की तुलसी ; - शास्त्रानुसार तुलसी के विभिन्न प्रकार के पौधों का जिक्र मिलता है, जिनमें श्रीकृष्ण तुलसी, लक्ष्मी तुलसी, राम तुलसी, भू तुलसी, नील तुलसी, श्वेत तुलसी, रक्त तुलसी, वन तुलसी, ज्ञान तुलसी मुख्य रूप से उल्लिखित हैं। इन सभी के गुण अलग-अलग और विशिष्ट हैं। तुलसी मानव शरीर में कान, वायु, कफ, ज्वर, खांसी और दिल की बीमारियों के लिए खासी उपयोगी है।

9. वास्तुशास्त्र में तुलसी : - वास्तुशास्त्र में भी तुलसी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वास्तु के अनुसार तुलसी को किसी भी प्रकार के दोष से मुक्त रखने के लिए उसे दक्षिण-पूर्व से लेकर उत्तर-पश्चिम, किसी भी स्थान तक लगा सकते हैं। अगर तुलसी के गमले को रसोई के पास रखा जाए तो किसी भी प्रकार की कलह से मुक्ति पाई जा सकती है। जिद्दी पुत्र का हठ दूर करने के लिए पूर्व दिशा में लगी खिड़की के सामने रखें।

10. संतान में सुधार : - नियंत्रण या मर्यादा से बाहर निकल चुकी संतान को पूर्व दिशा से रखी गई तुलसी के तीन पत्तों को किसी ना किसी रूप में खिलाने पर वह आपकी आज्ञा का पालन करने लगती है।

11. कारोबार में वृद्धि : - कारोबार की चिंता सताने लगी है, घर में आय के साधन कम होते जा रहे हैं तो दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखी तुलसी पर हर शुक्रवार कच्चा दूध और मिठाई का भोग लगाने के बाद उसे किसी सुहागिन स्त्री को दे दें। इससे व्यवसाय में सफलता मिलती है।

12. नौकरी पेशा : - अगर आप नौकरी पेशा हैं और ऑफिस में आपका कोई सीनियर परेशान कर रहा है तो ऑफिस की खाली जमीन पर या किसी गमले में, सोमवार के दिन तुलसी के सोलह बीज किसी सफेद कपड़े में बांध कर ऑफिस जाते ही दबा दीजिए। इससे ऑफिस में आपका सम्मान बढ़ेगा।

13. शालिग्राम का अभिषेक : - घर की महिलाएं रोजाना पंचामृत बनाकर शालिग्राम का अभिषेक करती हैं तो घर में कभी भी वास्तुदोष की हालत नहीं आएगी।

14. शारीरिक फायदे : - ज्योतिष के अलावा शारीरिक तौर पर भी तुलसी के बड़े फायदे देखे गए हैं। सुबह के समय खाली पेट ग्रहण करने से डायबिटीज, रक्त की परेशानी, वात, पित्त आदि जैसे रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। प्रतिदिन अगर तुलसी के सामने कुछ समय के लिए बैठा जाए तो अस्थमा आदि जैसे श्वास के रोगों से जल्दी छुटकारा मिलता है।

15. वैद्य का दर्जा : - शास्त्रों में तुलसी को एक वैद्य का दर्जा भी दिया गया है, जिसका घर में रहना अत्यंत लाभकारी है। मनुष्य को अपने जीवन के प्रत्येक चरण में तुलसी की आवश्यकता पड़ती है। साथ ही आधुनिक रसायन शास्त्र भी यह बात स्वीकारता है कि तुलसी का सेवन, इसका स्पर्श, दीर्घायु और स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होता है।

यदि घर में लगा रखी है तुलसी तो जरूर जानिए यह बातें प्राचीन काल से ही यह परंपरा चली आ रही है कि घर में तुलसी का पौधा होना चाहिए। शास्त्रों में तुलसी को पूजनीय, पवित्र और देवी स्वरूप माना गया है, इस कारण घर में तुलसी हो तो कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। यदि ये बातें ध्यान रखी जाती हैं तो सभी देवी-देवताओं की विशेष कृपा हमारे घर पर बनी रहती है। घर में सकारात्मक और सुखद वातावरण बना रहता है, पैसों की कमी नहीं आती है और परिवार के सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। यहां जानिए शास्त्रों के अनुसार बताई गई तुलसी के संबंध में 10 खास बाते

1. इन दिनों में नहीं तोड़ना चाहिए तुलसी के पत्ते- शास्त्रों के अनुसार तुलसी के पत्ते कुछ खास दिनों में नहीं तोड़ने चाहिए। ये दिन हैं एकादशी, रविवार और सूर्य या चंद्र ग्रहण काल। इन दिनों में और रात के समय तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। बिना उपयोग तुलसी के पत्ते कभी नहीं तोड़ने चाहिए। ऐसा करने पर व्यक्ति को दोष लगता है। अनावश्यक रूप से तुलसी के पत्ते तोड़ना, तुलसी को नष्ट करने के समान माना गया है।

2. रोज करें तुलसी का पूजन- हर रोज तुलसी पूजन करना चाहिए के साथ ही यहां बताई जा रही सभी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए। साथ ही, हर शाम तुलसी के पास दीपक लगाना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि जो लोग शाम के समय तुलसी के पास दीपक लगाते हैं, उनके घर में महालक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

3. तुलसी से दूर होते हैं वास्तु दोष- तुलसी घर-आंगन में होने से कई प्रकार के वास्तु दोष भी समाप्त हो जाते हैं और परिवार की आर्थिक स्थिति पर शुभ असर होता है।

4. तुलसी का पौधा घर में हो तो नहीं लगती है बुरी नजर- ऐसी मान्यता है कि तुलसी का पौधा होने से घर वालों को बुरी नजर प्रभावित नहीं कर पाती है। साथ ही, सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा सक्रिय नहीं हो पाती है। सकारात्मक ऊर्जा को बल मिलता है।

5. तुलसी का सूखा पौधा नहीं रखना चाहिए घर में- यदि घर में लगा हुआ तुलसी का पौधा सूख जाता है तो उसे किसी पवित्र नदी में या तालाब में या कुएं में प्रवाहित कर देना चाहिए। तुलसी का सूखा पौधा घर में रखना अशुभ माना जाता है।

6. सूखा पौधा हटाने के बाद तुरंत लगा लेना चाहिए तुलसी का दूसरा पौधा- एक पौधा सूख जाने के बाद तुरंत ही दूसरा तुलसी का पौधा लगा लेना चाहिए। सूखा हुआ तुलसी का पौधा घर में होने से बरकत पर बुरा असर पड़ सकता है। इसी वजह से घर में हमेशा पूरी तरह स्वस्थ तुलसी का पौधा ही लगाया जाना चाहिए।

7. तुलसी है औषधि भी- तुलसी का धार्मिक महत्व तो है, साथ ही आयुर्वेद में इसे संजीवनी बुटि के समान माना जाता है। तुलसी में कई ऐसे गुण होते हैं जो कई बीमारियों को दूर करने और उनकी रोकथाम करने में सहायक हैं। तुलसी का पौधा घर में रहने से उसकी सुगंध वातावरण को पवित्र बनाती है और हवा में मौजूद बीमारी फैलाने वाले कई सूक्ष्म कीटाणुओं को नष्ट कर देती है।

8. रोज तुलसी की एक पत्ती सेवन करने से मिलते हैं ये फायदे- तुलसी की सुंगध हमें श्वास संबंधी कई रोगों से बचाती है। साथ ही, तुलसी की एक पत्ती रोज सेवन करने से हम सामान्य बुखार से बचे रहते हैं। मौसम परिवर्तन के समय होने वाली स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से बचाव हो सकता है। तुलसी की पत्ती सेवन करने से हमारे शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता काफी बढ़ जाती है, लेकिन हमें नियमित रूप से तुलसी की पत्ती का सेवन करते रहना चाहिए।

9. तुलसी के पत्ते चबाना नहीं चाहिए- तुलसी के पत्तों का सेवन करते समय ध्यान रखना चाहिए कि इन पत्तों को चबाए नहीं बल्कि निगल लेना चाहिए। इस प्रकार तुलसी का सेवन करने से कई रोगों में लाभ प्राप्त होता है। तुलसी के पत्तों में पारा धातु के तत्व भी विद्यमान होते हैं जो कि पत्तों को चबाने से दांतों पर लग जाते हैं। ये तत्व दांतों के लिए फायदेमंद नहीं है। अतः तुलसी के पत्तों को बिना चबाए निगलना चाहिए।

10. शिवलिंग और गणेश पूजन में वर्जित है तुलसी के पत्ते- यूँ तो पूजन में तुलसी का विशेष महत्तव है पर शिव पूजन और गणेश पूजन में तुलसी का प्रयोग वर्जित है। इसके लिए पुराणो में दो कथा बताई गई है। एक कथा के अनुसार भगवान शिव ने तुलसी के पति दैत्यों के राजा शंखचूड़ का वध किया था, जिसके फलस्वरूप न तो शिव पूजन में तुलसी काम में लेते है और नाहि शंख से शिवलिंग पर जल चढ़ाते है।

जबकि एक अन्य कथा के अनुसार एक बार गणेशजी ने तुलसी का विवाह प्रस्ताव यह कह कर अस्वीकार कर दिया की वो ब्रह्मचारी है जिससे रुष्ट होकर तुलसी ने उन्हें दो विवाह का श्राप दे दिया, प्रतिक्रिया स्वरुप गणेश जी ने तुलसी को एक राक्षस से विवाह का श्राप दे दिया। इसलिए गणेश पूजन में भी तुलसी का प्रयोग वर्जित है।

गाड़ी पर लिखा था प्रेस, पुलिस ने रूकवाई कार; अंदर का हाल देख दंग रह गई क्राइम ब्रांच की टीम

दिल्ली पुलिस ने ड्रग्स की आपूर्ति करने वाले तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपितों की कार से करीब 120 किलो प्रतिबंधित गांजा बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान कंचन सिंह हर्ष प्रताप सिंह और ईशान सिंह के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट समेत संबंधित धाराओं में केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा की टीम ने कार की खिड़कियों पर प्रेस स्टिकर लगाकर प्रतिबंधित दवाओं की सप्लाई करने वाले तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों की कार से करीब 120 किलो प्रतिबंधित गांजा बरामद किया है।

मामला दर्ज कर जांच शुरू

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान कंचन सिंह, हर्ष प्रताप सिंह और ईशान सिंह के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट समेत संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अर्टिगा कार से गांजा सप्लाई

पुलिस अधिकारी के मुताबिक, शनिवार दोपहर क्राइम ब्रांच की टीम को सूचना मिली कि कुछ लोग सफेद रंग की अर्टिगा कार में सवार होकर गांजा की तस्करी करने यूपी से दिल्ली आ रहे हैं। गिरोह लंबे समय से इस धंधे में लिप्त है और लगातार द्वारका व आसपास के इलाकों में मादक पदार्थ की सप्लाई कर रहा है।

गाड़ी में चिपका रखा था मीडिया का स्टीकर

पुलिस को यह भी पता चला कि आरोपी सफेद रंग की अर्टिगा कार में आएंगे। उन्होंने कार के आगे व पीछे के शीशे पर प्रेस के स्टीकर लगा रखे हैं, ताकि पुलिस उन्हें मीडिया की गाड़ी समझकर रास्ते में न रोके। आरोपियों को पकड़ने के लिए एक टीम बनाई गई।

टीम ने द्वारका सेक्टर-23 के पास भारत वंदना पार्क के पीछे वाली सड़क पर जाल बिछाया और शाम करीब साढ़े पांच बजे जब आरोपी कार में सवार होकर पहुंचे तो टीम ने उन्हें पकड़ लिया। तलाशी लेने पर पीछे की सीट के नीचे पांच बोरियों में करीब 120 किलो गांजा बरामद हुआ। आरोपियों ने कार पर फर्जी नंबर प्लेट भी लगा रखी थी।

संस्कारशाला: ज़िंदगी की सरलता और हमारी उम्मीदों का भार

- डॉ. अंकुर शरण

ज़िंदगी अपने आप में बहुत सरल होती है, लेकिन हमारी चतुराई और हद से ज़्यादा उम्मीदें इसे अक्सर निराशाजनक बना देती हैं। हम हर छोटे-बड़े फैसले में बुद्धिमत्ता दिखाने की कोशिश करते हैं और बदले में उम्मीद रखते हैं कि हर चीज़ हमारे मुताबिक़ हो। जब ऐसा नहीं होता, तो हम खुद को असफल मानने लगते हैं।

सोशल मीडिया इसका एक बड़ा उदाहरण है। आज के दौर में, हम जो भी पोस्ट करते हैं, उसके लाइक्स, कमेंट्स और शेयर की गिनती से अपनी ख़ुशी तय करने लगे हैं। अगर किसी की तस्वीर या विचार को सराहना नहीं मिलती, तो लोग इसे अपनी असफलता समझने लगते हैं। कई बार देखा गया है कि कोई अच्छी पोस्ट या विचार भी लोगों को पसंद नहीं आता, और हम इसे व्यक्तिगत अस्वीकृति मान बैठते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हर व्यक्ति की रुचि और प्राथमिकता अलग होती है।

उदाहरण के लिए, एक लेखक ने बहुत सोच-समझकर एक प्रेरणादायक लेख लिखा, लेकिन अगर उसे कम प्रतिक्रियाएँ मिलीं, तो वह निराश हो सकता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि लेख अच्छा नहीं था। ठीक वैसे ही, एक कलाकार अपनी पेंटिंग को लेकर उत्साहित होता है, लेकिन अगर उसे अपेक्षित तारीफ नहीं मिलती, तो वह अपने टैलेंट पर ही शक करने लगता है। असल में, ज़िंदगी का आनंद उसी में है जब हम इसे अपनी सहजता से जीते हैं, न कि दूसरों की प्रतिक्रिया के आधार पर। सोशल मीडिया और बाहरी मानदंडों से ज़्यादा अपनी आंतरिक शांति और संतोष पर ध्यान देना ज़रूरी है। अगर हम हर बात को सहजता से लें और अपनी उम्मीदों को वास्तविकता के करीब रखें, तो ज़िंदगी सच में आसान हो जाएगी।

नए कम्युनिटी हॉल के निर्माण से डीडीए ने बनाई दूरी, आखिर क्यों आई ऐसी नौबत?

डीडीए के सामुदायिक भवन उपेक्षित हाल में हैं। सेक्टर-13 में दो सामुदायिक भवन एक वर्ष से बनकर तैयार हैं लेकिन अभी तक कोई बुकिंग नहीं हुई है। डीडीए का कहना है कि जितने सामुदायिक भवन हैं उनका ही इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है तो नए की क्या जरूरत है लेकिन निजी बैंक्वेट हॉल में बुकिंग के लिए लोग खड़े रहते हैं।

दिल्ली। करीब एक दशक पहले उपनगरी में सामुदायिक भवन निर्माण को लेकर दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने खूब दिलचस्पी दिखाई, लेकिन अब डीडीए को लग रहा है कि उपनगरी में नए सामुदायिक भवन की जरूरत नहीं है, लिहाजा अब कोई नया सामुदायिक भवन नहीं बनाया जाएगा। डीडीए का कहना है कि जितने सामुदायिक भवन हैं, अभी उनका ही इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है, तो नए की भला क्या ही जरुरत होगी। हाल ही में पालम के विधायक कुलदीप सोलंकी द्वारका परियोजना के मुख्य अभियंता के समक्ष क्षेत्र की समस्याओं को लेकर मिलने पहुंचे।

इस दौरान सामुदायिक भवन निर्माण का मुद्दा उठा, लेकिन डीडीए अधिकारियों ने उन्हें भी साफ-साफ कह दिया कि अब नए सामुदायिक भवन कहीं नहीं बनेंगे, लेकिन बड़ा सवाल यह है कि आखिर ऐसी नौबत क्यों आई। एक तरफ उपनगरी के निजी बैंक्वेट हाल में बुकिंग के लिए लोग खड़े रहते हैं वहीं डीडीए के सामुदायिक भवनों को बुकिंग के लिए लोग नहीं मिलते। सेक्टर 13 में दो सामुदायिक

भवन में आज तक नहीं हुआ कोई समारोह

द्वारका सेक्टर 13 में दो सामुदायिक भवन पिछले एक वर्ष से बनकर तैयार हैं। इसमें एक मेट्रो व्यू अपार्टमेंट के नजदीक तो दूसरा इस्कान मंदिर के पास है, लेकिन दोनों में से किसी में आज तक कोई समारोह आयोजित नहीं हुआ।

पूरी इमारत में देखरेख का अभाव साफ-साफ नजर आता है। दीवारों मे सीलन व कोने में जाले नजर आते हैं। सफाई को तो शायद यहां लंबे समय से ध्यान ही नहीं रखा गया है। यहां केवल गार्ड की तैनाती की गई है।

नहीं लगा है कोई बोर्ड

दोनों सामुदायिक भवन में कोई ऐसा बोर्ड नहीं है, जिससे आपको लगे कि यह सामुदायिक भवन है। यहां तैनात गार्ड से यदि आप बुकिंग के बारे में या बुकिंग से जुड़े किसी अधिकारी के बारे में पता करना चाहेंगे तो आपको निराशा हाथ लगेगी। यहां ऐसी कोई जानकारी आपको नहीं मिलेगी जिससे आप यहां से जुड़ी कोई जानकारी प्राप्त कर बुकिंग के बारे में एक निश्चित राय कायम कर सकें।

डीडीए अधिकारी समस्या के प्रति गंभीर नहीं

आखिर ऐसी नौबत क्यों आ रही है कि लोगों ने डीडीए के सामुदायिक भवनों में बुकिंग से तौबा कर ली है। इस संबंध में डीडीए अधिकारियों का कहना है कि ऐसा क्यों हो रहा है, यह समझ से परे की बात है। हम लोगों ने सामुदायिक भवन बनाया, लेकिन बुकिंग के लिए लोगों को ही आगे आना होगा।

क्या लोगों को जागरुक करने के लिए या सामुदायिक भवन कहां कहां है, इसके बारे में कभी कोई कार्यक्रम या कोई आकर्षक योजना लॉन्च की गई है, तो डीडीए अधिकारी इस पर सीधे ना में उत्तर देते हैं। लोगों की राय उपनगरी सेक्टर 10 निवासी मनोज गुप्ता का कहना है कि डीडीए ने खुद अपने सामुदायिक भवनों को उपेक्षित हाल में छोड़ रखा है।

डीटीसी को लेकर कैग रिपोर्ट में चौंकाने वाले तथ्य, पिछली सरकार की व्यवस्था पर उठे सवाल

डीटीसी को लेकर दिल्ली विधानसभा में पेश की गई कैग रिपोर्ट में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। रिपोर्ट में परिवहन को लेकर पिछली सरकार की पूरी व्यवस्था पर सवाल उठाए गए हैं। 2015-16 में 28263 करोड़ रुपये का घाटा 2021-22 में बढ़कर 65274 करोड़ रुपये हो गया। कैबिनेट मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा से लेकर सत्तापक्ष के विधायक संजय गोयल आदि ने पिछली आप सरकार को जमकर घेरा।

नई दिल्ली। डीटीसी (दिल्ली परिवहन निगम) को लेकर सोमवार को दिल्ली विधानसभा में पेश की गई कैग रिपोर्ट में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। रिपोर्ट में परिवहन को लेकर पिछली सरकार की पूरी व्यवस्था पर ही सवाल उठाए गए हैं। यह तथ्य व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा करता है कि डीटीसी का जो घाटा 2015-16 में 28,263 करोड़ रुपये था, वह 2021-22 में बढ़कर 65,274 करोड़ रुपये हो गया।

इसी अवधि के दौरान 14,000 करोड़ रुपये से अधिक का परिचालन घाटा हुआ है। यहां तक कि जो परिचालक खर्च कम होना चाहिए था वह और बढ़ गया है। वह भी बढ़ कर दोगुना हो गया है। रिपोर्ट पर सदन में चर्चा के दौरान कैबिनेट मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा से लेकर सत्तापक्ष के विधायक संजय गोयल आदि ने पिछली आप सरकार को जमकर घेरा।

परिवहन के लिए कोई योजना तैयार नहीं

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बजट सत्र में 31 मार्च, 2022 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए डीटीसी के कामकाज पर रिपोर्ट पेश की। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि सार्वजनिक परिवहन को लेकर कोई व्यवसाय योजना तैयार नहीं की गई और न ही निगम ने अपने कामकाजी घाटे को कम करने के लिए राज्य सरकार के साथ कोई समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

जांच में यह भी पाया गया है कि निगम ने अन्य राज्य परिवहन उपक्रमों के मुकाबले अपने प्रदर्शन का आकलन करने के लिए बेंचमार्क निर्धारित नहीं किया। डीटीसी ने लाभप्रदता पर कोई अध्ययन नहीं किया, जबकि उसे लगातार घाटा हो रहा था।

2022-23 के दौरान केवल 300 इलेक्ट्रिक बसें ही खरीदीं

रिपोर्ट के अनुसार 2015 से 2023 के बीच डीटीसी के बेड़े में बसों की संख्या बढ़ने की जगह कम हो गईं। डीटीसी के पास 2015 में 4,344 बसें थीं जो 2023 में घटकर 3,937 रह गईं। सरकार से धन उपलब्ध होने के बावजूद यह 2021-22 और 2022-23 के दौरान केवल 300 इलेक्ट्रिक बसें ही खरीदीं।

इस मामले में कैग ने एक बड़ा सवाल यह भी उठाया है कि बेड़े में इलेक्ट्रिक बसें समय पर न देने पर के लिए ऑपरेटर पर जो 29.86 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया

जाना था वह भी नहीं लगाया गया।

ऑपरेटर को लाभ पहुंचाया गया

यानी निगम को इस तरीके से हानि और आपरेटर को लाभ पहुंचाया गया। घटते बेड़े के बारे में रिपोर्ट में कहा गया है कि 2015 में डीटीसी में लोफ्लोर ओवरएज बसों की संख्या 0.13 प्रतिशत यानी पांच बसें थीं जो 2022 के दौरान बढ़कर 17.44 प्रतिशत यानी 656 बसें हो गई और 31 मार्च 2023 तक बढ़कर कुल बेड़े का 44.96 प्रतिशत 1,770 बसें हो गई।

डीटीसी की परिचालन दक्षता कम

रिपोर्ट के अनुसार अगर डीटीसी नई बसें खरीदने या जोड़ने के लिए ईमानदारी से प्रयास नहीं करती है, तो ओवरएज बसों का अनुपात बढ़ता रहेगा।जब बेड़े के उपयोग और वाहन उत्पादकता की बात आती है तो अखिल भारतीय औसत की तुलना में डीटीसी की परिचालन दक्षता कम है।

अपनी परिचालन लागत तक नहीं निकाल पाई

रिपोर्ट में यह भी गंभीर सवाल उठाया गया है कि 31 मार्च 2022 तक डीटीसी सभी रूटों पर बसें भी नहीं चला रही थी, लापरवाही का आलम यहां तक था कि कुल 814 रूटों में से 468 रूटों (57 प्रतिशत) पर ही बसों का परिचालन हो रहा था और जिन रूटों पर बसें चल भी रही थीं उनमें से एक भी रूट पर डीटीसी मुनाफा तो दूर, अपनी परिचालन लागत तक नहीं निकाल पाई।

राजस्व में 668.60 करोड़ रुपये का नुकसान

2015 में जो परिचालन खर्च 213 रुपये प्रति किलोमीटर था वह 2022 में बढ़कर 457 रुपये हो गया। कुल मिलाकर 2015-22 के दौरान परिचालन 14,198.86 करोड़ रुपये का परिचालन घाटा हुआ। इस दौरान प्रति वर्ष 10,000 किलोमीटर परिचालन पर ब्रेकडाउन की दर 2.90 से 4.57 प्रतिशत रही, जिससे संभावित राजस्व में 668.60 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ।

3,697 बसों में सीसीटीवी सिस्टम स्थापित

रिपोर्ट में उन परियोजनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है जो लागू नहीं हो पाई। इसमें डीटीसी ने स्वचालित किराया संग्रह प्रणाली (एएफसीएस) चरण-एक की परियोजना दिसंबर 2017 में शुरू की गई थी, लेकिन सिस्टम इंटीग्रेटर की अक्षमता के कारण यह मई 2020 से कार्यात्मक नहीं है। हालांकि मार्च 2021 में 3,697 बसों में सीसीटीवी सिस्टम स्थापित और चालू किया गया था।

दिल्ली इंटीग्रेटेड मल्टी-माडल ट्रांजिट सिस्टम लिमिटेड डीआईएमटीएस द्वारा संचालित क्लस्टर बसों का प्रदर्शन, निगम बसों के प्रदर्शन की तुलना में प्रति किलोमीटर परिचालन राजस्व को छोड़कर हर परिचालन पहलू में बेहतर था, भले ही दोनों एक ही शहर में और समान परिस्थितियों में चल रहे थे।

#Volunteershala: युवाओं के साथ सड़क सुरक्षा की ओर एक मजबूत कदम

डॉ. अंकुर शरण की पहल – सड़क सुरक्षा स्क्वाड के लिए वालंटियर्स की तलाश

सड़क सुरक्षा एक ऐसा विषय है, जो केवल नियमों तक सीमित नहीं बल्कि हर नागरिक की जिम्मेदारी भी है। भारत में सड़क दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए, #Volunteershala के माध्यम से एक नए आंदोलन की शुरुआत की जा रही है, जो युवाओं को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक और जिम्मेदार बनाएगा। डॉ. अंकुर शरण, जो एक सोशलप्रेन्योर और रोड सेफ्टी एक्सपर्ट हैं, इस पहल को आगे बढ़ा रहे हैं, ताकि स्कूल और कॉलेज के छात्र सड़क सुरक्षा स्क्वाड में शामिल होकर इसकी मूल बातें सीख सकें और समाज में बदलाव लाने का हिस्सा बन सकें।

#Volunteershala – एक परिवर्तनकारी पहल

#Volunteershala सिर्फ एक वॉलंटियरिंग प्लेटफॉर्म नहीं, बल्कि एक ऐसा आंदोलन है, जो युवाओं को सामाजिक परिवर्तन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। सड़क सुरक्षा इस अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां छात्रों को विभिन्न माध्यमों से जागरूक किया जाएगा, जैसेः

✓ रोड सेफ्टी अवेयरनेस प्रोग्राम्स – यातायात नियमों की जानकारी और सही व्यवहार सिखाने के लिए विशेष कार्यशालाएँ।

✓ ग्राउंड एक्टिविटीज – ट्रैफिक सिग्नल पर लोगों को जागरूक करने और सुरक्षित ड्राइविंग को बढ़ावा देने के लिए ऑन-फील्ड वॉलंटियरिंग।

✓ स्कूल-कॉलेज में ट्रेनिंग सेशंस – छात्रों को सड़क सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं, जैसे हेलमेट पहनना, सीट बेल्ट लगाना, स्पीड लिमिट का पालन करना, और नशे में ड्राइविंग से बचाव के उपायों पर प्रशिक्षण।

✓ डिजिटल कैंपेनिंग – सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों से सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए कंटेंट क्रिएशन और प्रचार।

क्यों जुड़ें #Volunteershala अभियान से?

✓ सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का अवसर – सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए योगदान देकर एक जागरूक नागरिक बनें।

✓ सीखने और नेतृत्व करने का मंच – वॉलंटियरिंग के माध्यम से न केवल सड़क सुरक्षा की समझ विकसित होगी, बल्कि नेतृत्व कौशल भी निखरेंगे।

✓ रिज़्यूमे में एक विशेष उपलब्धि – सड़क सुरक्षा स्क्वाड में शामिल होने से करियर में भी एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

✓ समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का मौका – छोटी-छोटी कोशिशें बड़ी प्रेरणाएँ बन सकती हैं, जो सड़कों को सुरक्षित बना सकती हैं।

कैसे बनें #Volunteershala के सदस्य?

इस अभियान से जुड़ने के लिए स्कूल और कॉलेज के छात्र सीधे #Volunteershala के प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर कर सकते हैं या अपने संस्थान में आयोजित किए जा रहे जागरूकता कार्यक्रमों का हिस्सा बन सकते हैं। इच्छुक युवा डॉ. अंकुर शरण और उनकी टीम के साथ मिलकर इस नेक पहल में योगदान दे सकते हैं।

आपका एक कदम, कई ज़िंदगियाँ बचा सकता है!

अभी जुड़ें और सड़क सुरक्षा स्क्वाड का हिस्सा बनें! Email : roadsafetysquad@gmail.com

बजट से पहले सीएम रेखा गुप्ता ने बनाई खीर

आतिशी ने पूछा- महिलाओं को कब मिलेंगे 2500 रुपये?

भाजपा सरकार का पांच दिवसीय बजट सत्र सोमवार को सुबह 11 बजे खीर समारोह के साथ शुरू हो चुका है। पहले दिन दिल्ली परिवहन निगम पर सीएजी की रिपोर्ट पेश किए जाने की संभावना है। मंगलवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पहला बजट पेश करेंगी। दिल्ली बजट 2025-26 में बुनियादी ढांचे के विकास यमुना की सफाई और वायु प्रदूषण से निपटने पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना है।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा का पांच दिवसीय बजट सत्र सोमवार को 'खीर' समारोह के साथ शुरू हुआ। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने खुद खीर बनाई और फिर भगवान राम को भोग लगाया। इस दौरान बीजेपी नेताओं ने कहा कि ₹मिठास प्रगति का प्रतीक है₹। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सदन में वित्त वर्ष 2025-26 का बजट 25 मार्च दिन मंगलवार को पेश करेंगी।

विधानसभा में विकसित दिल्ली बजट के दौरान मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने खीर बनाया और मंत्री प्रवेश साहिब सिंह सहित अन्य नेताओं को खिलाया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बजट में सहयोग करने वाले व्यापारी वर्ग, डॉक्टर, वकील,व अन्य वर्ग को के लोगों को भी अपने हाथ से खीर वितरित की।

बता दें कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता वित्त विभाग भी संभालती हैं। 27 साल बाद दिल्ली की सत्ता में वापसी करने वाली भाजपा के पहले बजट में चुनावी घोषणापत्र की झलक दिखेगी। हालांकि इस बार बजट से दिल्लीवालों को क्या-क्या मिलने वाला है यह तो कल यानी 25 फरवरी को ही साफ हो सकेगा।

#WATCH | Delhi CM Rekha Gupta prepares ceremonial 'Kheer' ahead of the beginning of the inaugural Budget session of this government. pic.twitter.com/U6vN1F5s1p

दिल्ली की महिलाओं को कब मिलेंगे 2500 रुपये?- आतिशी

दिल्ली विधानसभा बजट सत्र पर विपक्ष की नेता आतिशी ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा सरकार पर हमला बोला है।

उन्होंने कहा, चुनाव से पहले भाजपा ने बहुत सारे वादे किए थे। हमें उम्मीद है कि इस बजट सत्र में वे वादे पूरे होंगे। सबसे पहला और सबसे अहम वादा था कि 8 मार्च को दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए मिलेंगे। आज तक उस स्कीम का रजिस्ट्रेशन भी शुरू नहीं हुआ है। यह साफ है कि पीएम मोदी ने झूठ बोला और दिल्ली की जनता को धोखा दिया। हमें उम्मीद है कि इस बजट में दिल्ली की जनता को धोखा नहीं दिया जाएगा... ₹

कैग रिपोर्ट पर क्या बोलीं आतिशी?

कैग रिपोर्ट पेश किए जाने पर उन्होंने कहा, ₹वे कोर्ट में मांग लेकर गए थे कि कैग रिपोर्ट विधानसभा में पेश की जाए। वे सभी रिपोर्ट क्यों नहीं पेश कर रहे हैं? कैग रिपोर्ट को एपिसोड में क्यों पेश किया जा रहा है? अगर स्पीकर के पास 14 कैग रिपोर्ट हैं, तो उन्हें तुरंत सभी पेश करनी चाहिए...।

इससे पहले, बजट सत्र समारोह में कैबिनेट मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा, ₹बजट सत्र ऐतिहासिक महत्व रखता है। आज व्यवसायी, ऑटो ड्राइवर, दलित भाई-बहन समेत विविध पृष्ठभूमि के लोग एक साथ खीर खाएंगे। बजट कल पेश किया जाएगा।₹

दिल्ली का विकास पटरी पर है- सतीश उपाध्याय

वहीं, भाजपा नेता सतीश उपाध्याय ने मुख्यमंत्री को शुभकामनाएं दीं और कहा कि बजट दिल्ली के लिए प्रगति का संदेश है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सीएम गुप्ता ने महिलाओं और युवाओं से लेकर व्यवसायियों और कॉलोनियों के निवासियों तक के व्यापक लोगों से बातचीत की है और बजट को आकार देने के लिए सुझाव इकट्ठे किए हैं।

उन्होंने कहा, मिठास प्रगति का प्रतीक है। सीएम संदेश दे रही हैं कि दिल्ली का विकास पटरी पर है। यह बजट महिलाओं, युवाओं, व्यवसायियों और यहां तक कि कॉलोनी निवासियों की आवाज को दर्शाता है और यह सुनिश्चित करता है कि उनकी राय इस प्रक्रिया का हिस्सा हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम समावेशी प्रगति के लिए प्रतिबद्ध हैं।

उल्लेखनीय है कि फरवरी में हुए दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने आम आदमी पार्टी (आप) को हराकर राजधानी की सत्ता में 27 साल बाद वापसी की है।

जबरन कब्जों में जुटे वकीलों के खिलाफ श्रमिक नेता राकेश मणि ने लिखा सुप्रीम कोर्ट और सरकार को पत्र

सुनील बाजपेई

कानपुर। हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव व प्रदेश महामंत्री, राकेशमणि पाण्डेय ने अधिवक्ता होने की आढ़ में जमीनों मकानों पर कब्जे समेत अपराध कार्यों में लिप्त रहने वाले लोगों के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार को पत्र लिखकर उनके खिलाफ कार्रवाई किए जाने की मांग की है। उन्होंने अक्सर होने वाले पुलिस और वकीलों के बीच संघर्ष को कानून, शांति व्यवस्था और समाज के लिए खतरा भी बताया है। उन्होंने इस पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि न्यायालय की कार्यवाहियों के मामले में इसका खामियाजा वादकारियों को भुगतना पड़ता है।

छोटे-छोटे विवादों को लेकर अधिवक्ताओं द्वारा घेराव, मारपीट और आन्दोलन करके न्याय व्यवस्था को ध्वस्त करने के प्रयासों को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए चर्चित वरिष्ठ श्रमिक नेता और समाजसेवी राकेश मणि पाण्डेय ने कहा कि जनहित के स्थान पर अपना हित पहले देखने वाले अधिकांश अधिवक्तागण न्यायालय के माध्यम से न्याय दिलाने बजाय स्वयं ही एक जुट होकर न्याय को अपने हाथ में लेने का प्रयास करते हैं। यही नहीं जब न्याय पक्ष में नहीं होता तो जज के विरूद्ध टिप्पणियां और कार्य बहिष्कार किये जाते हैं।

अधिवक्ता होने आढ़ में अधिकांश लोगों द्वारा अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए जमीनों मकानों और दुकानों आदि पर जबरन कब्ज़ा समेत हर तरह के अपराधों को भी अंजाम देने की लगातार बढ़ रही खतरनाक प्रवृत्ति को देश समाज और कानून व्यवस्था के लिए घातक बताते हुए हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव व प्रदेश महामंत्री, राकेशमणि पाण्डेय ने कहा कि वर्तमान में हजारों अधिवक्ताओं जिनके पास कार्य नहीं है। वह ऐसे अवांछनीय कार्यों में लगे रहते हैं।

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और सरकार को लिखे गए पत्र में वरिष्ठ श्रमिक नेता और समाजसेवी राकेश मणि पांडेय ने यह भी कहा कि विविदित स्थलों पर अपने नाम का बोर्ड लगाकर डर व भय का माहौल पैदा करके कानून का गला घोटते रहने वाले अनेक अधिवक्ताओं के नाम जमीन कब्जे, मकान कब्जे और छोटी-छोटी घटनाओं में भी नाम आने से भी इस कथन की पुष्टि होती है।

श्रमिक नेता राकेश मणि पांडेय ने यह भी कहा कि पुलिस व प्रशासन और सरकार भी कानून की सदैव धज्जियां उढ़ाने वाले वकीलों के विरूद्ध कार्यवाही तो दूर उल्टे जब तब सरकार पुलिस अधिकारियों व विभाग को अपमानित करने और उनके कार्यों को प्रभावित करने में अधिवक्ताओं की मदद भी करती रहती है। जिसके लिए वकीलों के पक्ष में निर्दोष पुलिस वालों को भी बलि का बकरा बनाने से भी नहीं चूका जाता।

सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार को लिखे पत्र में राकेश मणि पांडे ने यह भी कहा है कि अक्सर ऐसा भी होता है कि सरकार भी अधिवक्ताओं को संतुष्ट करने की नियत से दोषी नहीं होने के बाद भी अपना कर्तव्य निष्ठा के साथ निभाने के बाद भी पुलिस वालों के स्थानान्तरण, निलम्बन, लाईन हाजिर कार्यवाही के रूप में प्रशासनिक व्यवस्था के मनोबल को तोड़ने वाला कार्य भी करती रहती है, और यही स्थितियां सुरक्षा, संरक्षा व न्याय के लिए चिन्ताजनक है।

श्रमिक नेता राकेश मणि पांडे ने सुप्रीम कोर्ट को लिखे गए अपने पत्र में आपराधिक छवि और अराजक तत्वों को न्याय व्यवस्था से जुड़ी अधिवक्ता कार्यवाहियों से दूर रखने के लिए अधिवक्ता सुरक्षा एक्ट में वांछित प्रविष्टियों को योजित करने और बार काउन्सिल द्वारा भी इस दिशा में कोई प्रभावी नियम बनाने की भी मांग की है ताकि उपद्रव, कार्य बहिष्कार, मार पीट और कब्जा आदि करने वाले आपराधिक स्वभाव वाले अधिवक्ताओं के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जा सके।

सुप्रीम कोर्ट और सरकार को भेजे गए पत्र में हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव व प्रदेश महामंत्री, राकेशमणि पाण्डेय ने यह भी कहा कि शांति, कानून व्यवस्था, देश और समाज के हित में अपराधी प्रवृत्ति के अधिवक्ताओं के खिलाफ जल्द से जल्द प्रभावी कार्रवाई इसलिए की जानी चाहिए ताकि सभी को ना केवल सही और व्यवस्थित न्याय मिल सके बल्कि पुलिस कर्मियों का मनोबल भी बरकरार रखते हुए अधिवक्ता पेशे की गरिमा को भी सुरक्षित किया जा सके।

पत्रकार को लोकतंत्र का स्तंभ कहा जाता है, लेकिन तीनों स्तंभ पत्रकार हित की बात नहीं करते: पत्रकार विष्णु सिकरवार, जिलाध्यक्ष

पत्रकारों के लिए कोई सहायता नहीं, संस्थान भी पीछे हटते हैं : पत्रकार विष्णु सिकरवार
संगठन से जुड़कर अपने हक और सम्मान के लिए संघर्ष करना आवश्यक : पत्रकार विष्णु सिकरवार

आगरा, संजय सागर सिंह। पत्रकारों की सुरक्षा और हितों की चिंता करते हुए ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन जिला इकाई आगरा के जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार ने कहा, ₹पत्रकार को लोकतंत्र का स्तंभ माना जाता है, लेकिन लोकतंत्र के तीनों स्तंभ पत्रकारों के हित की बात नहीं करते। जब पत्रकार संकट में होते हैं या उनका निधन होता है, तो कोई सहायता के लिए आगे नहीं आता, न ही उनके संस्थान। हम खबर लिखकर पक्ष बन जाते हैं, लेकिन हमारी सुरक्षा और हितों की कोई चिंता नहीं करता। इसलिए, चाहे संगठन कोई भी हो, हर पत्रकार को अपने हक और सम्मान के लिए संघर्ष करना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा, ₹हमारा संगठन देशभर में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग कर रहा है। पत्रकार समाज का आईना होते हैं, और जनता व सरकार के बीच पुल का कार्य करते हैं। पत्रकार को चौथा स्तंभ माना जाता है, क्योंकि वह लोकतंत्र की आवाज उठाता है। हालांकि, आज के समय में पत्रकारों का अधिकांश समय आर्थिक तंगी और समस्याओं से जूझने में निकलता है, जबकि मीडिया भ्रष्टाचार की शिकार हो गया है। जैसे में, हमें अपने हक, अधिकार और सम्मान से कोई समझौता नहीं करना चाहिए। देश में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू होने से ही पत्रकार और पत्रकारिता की सुरक्षा हो सकेगी, और लोकतंत्र मजबूत होगा।

पत्रकार सिकरवार ने यह भी बताया कि संगठन नैतिक मूल्यों पर आधारित पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण शिविर, जिला सम्मेलन, पत्रकार राहत कोष, पत्रकारों के टोल टैक्स माफ करने, आयुष्मान कार्ड बनाने, और बीमा सुरक्षा की मांग को लेकर लगातार चर्चा कर रहा है। इसके अलावा, संगठन पत्रकार कल्याण के लिए केंद्र और राज्य सरकार से पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग कर रहा है।

अंत में, जिलाध्यक्ष ने कहा, ₹हमारा संगठन देश-प्रदेश में लगातार पत्रकारों के अधिकारों और हितों के लिए संघर्ष कर रहा है। अब पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करना हमारे संगठन का मुख्य उद्देश्य है। देश में सभी के लिए कानून हैं, लेकिन पत्रकारों के लिए कोई विशेष कानून नहीं है। इसके लिए, राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्देश पर इस कानून को लागू करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। हर जिले से ज्ञापन भेजे जाएंगे और राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल तथा, मुख्यमंत्रियों को इस संदर्भ में ज्ञापन सौंपे जाएंगे। पत्रकारों के हक और सम्मान के लिए हम सख्ती से आवाज उठाएंगे और सरकार से जल्दी से जल्दी पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग करेंगे।

हमारी संस्कृति ,सभ्यता और तहज़ीब से जुड़ा हुआ है योग

योगा एक पुराना फन है , हुनर है, वादिए शिंद की (सभ्यता)तहजीब की तलाश में एक खुदाई के दौरान कई मुर्तियां मिली जो पांच हजार वर्ष पुरानी थी । जिन पर योगा के विभिन्न अदाज थे , अमेरिका युरोप में भी योगा के फायदों से प्रभावित होकर अपनी स्कूलों में एक पाठ के रूप में बढ़ाया जाता है । हिन्दूग्रंथ उपनिषद जो आठसौ वर्ष पूर्व लिखी गई थी । उसमें भी योगी के बारे में विस्तृत वर्णन पाया जाता है । लोक गीतों भारतीय मजहब और तहजीब के साथ योगा का बहुत गहरा ताल्लुक है । यह पुराने जमाने से ही हमारी संस्कृति का अहम अंग रहा है । योगा संस्कृत भाषाका शब्द है । जिसका मतलब है काबू पाना । योगाकेजरिए ना सिर्फहम शारीरक रूप से फिट रहते हैं , बल्कि जहनी और जज्बाती तौर पर भी शख्सियत बेलेंस में रहती है । योगा की मदद से हम अपनी जिन्दगी को खुशगवार बना सकते हैं । योगा के जरिए हम अपनी फीटनेस बरकरार रख सकते हैं । वजन में कमी और थकान से निजात पाना भी आसान हो जाता है । योगा करने से पहले हमें किसी भी काबिल योगा एक्सपर्ट से सलाह एवं मार्गदर्शन ले लेना चाहिए । योगा की जगह साफ - सुथरी होनी चाहिए एवं कपड़े डीले डाले होने चाहिए । योगासन सुबह के नास्ते से पहले खाली पेट किया जाना चाहिए । योगा के बाद नियमित रूपसे आधा घंटे बाद पौष्टिक भोजन एवं दूध पिया जा सकता है । योगा शाम को भी किया जा सकता है । आइए आपको गौमुखासन के सम्बंध में बताते हैं । यह आसन छाती , फेफड़ोव ह्रदय को सुदृढ़बनाता है और इसलिए यह आसन दमावश्वसनसंबंधी समस्याओं में लाभकारी होता है । यह आसन ऊपरी बांह को पीठ तथा जांग को मजबूत बनाता है ।

गोमुखासन करने का तरीका भूमि पर सीधै तनी अवस्था में बैठे , दोनों पैर सामने सीधे रखे , बाएं पैर को मोड़कर एड़ी नितम्व के पास रखे अथवा एड़ी पर बैठसकते है , इसी प्रकार दाएं पैरको मोडकर बाये पैर के ऊपर इस प्रकार रखे कि दोनों घुटने एक दूसरे से स्पर्श करते हुए हो । दाई ऐड़ी को बाएं तिम्ब के साथ मिलाए , अब दायें हाथ को ऊपर उठाकर पीठ की ओर मोड़िए तथा बायें हाथ को पीठ के पीछे से लेकर हाथ को पकड़िए कुछ सेकण्ड के लिए इसी अवस्था में रहे । जब तक कि आप इसे आराम से कर सकें । गर्दन व कमर सीधी रखें , अपने हाथों व पैरों की स्थिति को बदलकर इस प्रक्रिया को दोहराएं । योग करने से किसी भी प्रकार का रोग , तनाव , अनिन्द्रा और छोटी - मोटी से बिमारी से बचा जा सकता है । योगासन करें और रखें अपने आपको चुस्त दुरुस्त,और सेहतमंद ।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह ,

आखिर क्यों चर्चा में ग्रोक एआइ मॉडल ?

आज पूरा विश्व धीरे-धीरे ही सही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(एआइ) के युग में प्रवेश कर रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के इस युग में व्यवसाय और सरकारी संस्थाएँ ग्राहकों के अनुभवों को बेहतर बनाने, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ बढ़ाने और समुदायों में सुरक्षा और संरक्षा में सुधार करने के लिए मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) जैसे कम्प्यूट-इंटेंसिव अनुप्रयोगों की ओर तेज़ी से बढ़ रही हैं। इन दिनों चैटजीपीटी, गूगल जेमिनी, मेटा एआई और डीपसीक जैसे एआइ चैटबॉट के बीच ग्रोक एआइ(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) इंटरनेट की दुनिया में काफी चर्चा का विषय बना हुआ है। एआइ का यह(ग्रोक) एक नया-नवेला प्लेटफॉर्म है, और इसे इन दिनों भारत में भी बहुत पसंद किया जा रहा है। वास्तव में,ग्रोक एक नया, सरल प्रोसेसिंग आर्किटेक्चर पेश कर रहा है, जिसे विशेष रूप से मशीन लर्निंग अनुप्रयोगों और अन्य कम्प्यूट-गहन कार्यभार की प्रदर्शन आवश्यकताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है। पाठकों को बताता चलूं कि ग्रोक को एक्स एआइ नामक एक कंपनी ने विकसित किया है, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका(यूएसए) में है। वास्तव में,इस चैटबॉट को एलन मस्क के एआइ रीसर्च ऑर्गनाइजेशन (एक्स एआइ) की ओर से बनाया गया है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि सॉफ़्टवेयर-प्रथम मानसिकता से प्रेरित, ग्रोक की चिप वास्तुकला एक नया प्रसंस्करण प्रतिमान प्रदान करती है, जिसमें निष्पादन और डेटा प्रवाह का नियंत्रण हार्डवेयर से कंपाइलर में स्थानांतरित हो जाता है। सभी निष्पादन योजनाएँ सॉफ़्टवेयर में होती हैं, जिससे अतिरिक्त प्रसंस्करण क्षमताओं के लिए मूल्यवान सिलिकॉन स्थान खाली हो जाता है। यह दृष्टिकोण ग्रोग को पारंपरिक, हार्डवेयर-केंद्रित वास्तुशिल्प मॉडल की बाधाओं को मौलिक रूप से बायपास करने की अनुमति देता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रोक की सरलीकृत वास्तुकला चिप से बाहरी सर्किटरी को हटा देती है ताकि प्रति वर्ग मिलीमीटर अधिक प्रदर्शन के साथ अधिक कुशल सिलिकॉन डिज़ाइन प्राप्त किया जा सके। इससे कैशिंग, कोर-टू-कोर संचार, सट्टा और आउट-ऑफ-ऑर्डर निष्पादन की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। कुल क्रॉस-चिप बैंडविड्थ और गणना के लिए उपयोग किए जाने वाले कुल ट्रांजिस्टर के उच्च प्रतिशत को बढ़ाकर उच्च कंप्यूट घनत्व प्राप्त किया जाता है ।ग्रोक सिस्टम आर्किटेक्चर की सरलता हाथ अनुकूलन, प्रोफाइलिंग और विशेष डिवाइस ज्ञान की आवश्यकता को समाप्त करती है जो पारंपरिक हार्डवेयर-केंद्रित डिज़ाइन दृष्टिकोणों पर हावी है। इसके बजाय ग्रोक कंपाइलर पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे सॉफ़्टवेयर आवश्यकताओं को हार्डवेयर विनिर्देश को चलाने में सक्षम बनाया जाता है। ग्रोक उत्पाद अगली पीढ़ी की कम्प्यूट तकनीकों के निर्माण के लिए आवश्यक विविध, वास्तविक दुनिया के कम्प्यूटेशन सेट को जल्दी से अनुकूलित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। मशीन लर्निंग की तैनाती और निष्पादन को सरल बनाकर, ग्रोक एआई अनुप्रयोगों और अंतर्दृष्टि के लाभों को बहुत व्यापक दर्शकों तक विस्तारित करना संभव बनाता है। संपूर्ण प्रणाली - सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर - ग्रोक की तकनीक का उपयोग करने वाले सभी लोगों के लिए अनुभव को काफी सरल और बेहतर बनाता है।ग्रोक एआई अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए डीप लर्निंग इंफरेंस प्रोसेसिंग के लिए आदर्श है, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि ग्रोक चिप एक सामान्य-उद्देश्य, ट्यूरिंग-पूर्ण, कंप्यूट आर्किटेक्चर है। यह किसी भी उच्च-प्रदर्शन, कम विलंबता, कंप्यूट-गहन कार्यभार के लिए एक आदर्श प्लेटफ़ॉर्म है ।पाठकों को बताता चलूं कि इसको बनाने के पीछे का उद्देश्य ये है कि ये लोगों के पूछे गए सवालों का जवाब देने और बाकी अन्य कामों को आसान बनाएगा ।यदि कोई भी यूजर ग्रोक से कोई भी सवाल करना चाहता है, तो उसे एक्स पर @ग्रोक को टैग करके पूछ सकते हैं। इसके अलावा, ग्रोक एआइ की आधिकारिक वेबसाइट ग्रोक डाट कॉम पर जाकर भी कोई भी व्यक्ति ग्रोक से अपने कोई भी सवाल पूछ सकते हैं। उल्लेखनीय है कि ग्रोक 3 एआइ मॉडल, अपने पिछले जनरेशन(ग्रोक 2 एआइ मॉडल) से दस गुना तेज और एक बहुत ही पावरफुल एआइ चैटबाट मॉडल है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह सुपीरियर रीजनिंग और बड़े प्रीट्रेनिंग नॉलेज का ब्लेंड कहा जा सकता है। ये चैटबॉट कोडिंग, मैथमेटिक्स, इमेज क्रिएशन, इंस्ट्रक्शन-ड्रिवन टास्क्स और रीजनिंग जैसे कई काम कर सकता है। ये प्रॉब्लम्स सॉल्व करने के साथ-साथ गेम्स भी बना सकता है। सच तो यह है कि यह तकनीकी रूप से बहुत ही सक्षम, संवाद-कला में अद्वितीय(बेबाकी से जबाब देने वाला) मॉडल है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह मानव जैसे तर्क(लोजिक) और ह्यूमर के साथ जवाब देता है। यहां तक कि यह स्लैंग और अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने से भी परहेज नहीं कर रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में ग्रोक द्वारा अभद्र भाषा के इस्तेमाल की हरकत के कारण बात इतनी ऊपर तक पहुंच गई कि आईटी मंत्रालय ने ग्रोक एआइ को बनाने वाली कंपनी एक्स (जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था) को जवाब तलब किया है। पाठकों को बताता चलूं कि ग्रोक अन्य चैटबॉट से काफी अलग है। वास्तव में, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि ग्रोक को एक्स पर मौजूद डेटा से प्रशिक्षित किया गया है, जिसमें सोशल मीडिया पोस्ट, बातचीत और ट्रेंड्स शामिल हैं। इससे यह इंटरनेट पर ट्रेंडिंग लैंग्वेज और स्लैंग जैसी जानकारियों को समझता है और उसी अंदाज़ में जवाब देता है ।सच तो यह है कि इसे इस तरह से डिजाइन/निर्माण किया गया है कि यह यूजर्स के साथ मजाकिया और संवादात्मक तरीके से बात करे। दूसरे शब्दों में कहें तो, यह मजाकिया (ह्यूमर) और बग़ावत वाले लहजे में जबाब देता है ।इसे हम कुछ यूं समझ सकते हैं। मतलब कि अगर यूजर सीधा सवाल पूछता है, तो जवाब भी सीधा होता है, लेकिन अगर यूज़र अनौपचारिक या तीखी भाषा इस्तेमाल करता है, तो ग्रोक भी उसी लहजे में जवाब दे सकता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रोक, यूजर्स के सवालों का जवाब देने के लिए दो मोड्स का इस्तेमाल करता है। इसमें पहला 'रेगुलर मोड' है, जिसमें यह संयमित और सामान्य भाषा में जवाब देता है। वहीं 'अनहिंज्ड मोड' में यह बिना फ़िल्टर के जवाब देता है, जो कभी-कभी चौंकाने(आपत्तिजनक/अनफिल्टर्ड) वाला हो सकता है। वास्तव में, यह इसका

अनहिंज्ड मोड ही वजह है कि ग्रोक यूजर्स को रिप्लाई में कई बार अपशब्द(अनफिल्टर्ड लैंग्वेज)तक कह देता है। ग्रोक अपनी सर्वांगीण क्षमताओं के कारण यूजर्स के बीच इन दिनों खास चर्चा का विषय बना हुआ है। एक्स एआई ने ग्रोक को इस विचार के साथ विकसित किया है कि यह मानवता के लिए सहायक सिद्ध हो सके। कंपनी का मिशन है कि वह ब्रहमांड के मूलभूत सवालों जैसे कि जीवन का उद्देश्य, ब्रह्मांड की उत्पत्ति, और अंतरिक्ष में हमारी स्थिति को समझने में मदद करे। वास्तव में,ग्रोक एआइ एक बड़ा भाषा मॉडल है, जिसे टेक्स्ट बनाने, बदलने या उसका विश्लेषण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह इंटरनेट सर्च कार्यक्षमता और छवि निर्माण सहित उन्नत जनरेटिव एआई क्षमताएँ भी प्रदान करता है, जो इसे विभिन्न कार्यों के लिए एक बहुमुखी उपकरण बनाता है ।ग्रोक का एक अनूठा और मौलिक लाभ यह है कि इसे एक्स प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से दुनिया का वास्तविक समय का ज्ञान है। यह उन मसालेदार सवालों के भी जवाब देने में सक्षम है, जिन्हें अधिकांश अन्य एआइ सिस्टम द्वारा खारिज कर दिया जाता है ।ग्रोक वर्तमान घटनाओं के बारे में वास्तविक समय के उत्तर देने के लिए एक्स का लाभ उठाता है। ग्रोक एक्स एआइ के ऑरोरा, जो एक अलग वीडियो मॉडल है, का उपयोग करके छवियां उत्पन्न करता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ऑरोरा एक ऑटोरिग्रैसिव इमेज जेनरेशन मॉडल है ।ऑटोरिग्रैसिव सांख्यिकीय तकनीक को संदर्भित करता है, जिसका उपयोग मॉडल यह अनुमान लगाने के लिए करता है कि अनुक्रम में आगे कौन सी सामग्री आने की सबसे अधिक संभावना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रोक और चैटजीपीटी या लामा जैसे अन्य जनरेटिव एआई उत्पादों के बीच एक बड़ा अंतर यह है कि ग्रोक पूरी तरह से एक्स सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के भीतर काम करता है। ग्रोक उत्पादकता से संबंधित सवालों के जवाब दे सकता है, टेक्स्ट का विश्लेषण कर सकता है और गणित और कोडिंग समस्याओं को हल कर सकता है। यह कई अन्य कार्य भी कर सकता है जो जनरेटिव एआई व्यवसाय के लिए कर सकता है। हालाँकि, इसका डेटा एक्स प्लेटफ़ॉर्म के भीतर ही रहता है। वास्तव में ग्रोक का लक्ष्य उपयोगकर्ताओं को एक बाहरी, नया दृष्टिकोण प्रदान करना है, जो सामान्य मानवीय सोच से परे हो। ग्रोक की खास बात यह है कि यह जटिल सवालों के जवाब में भी स्पष्टता और संक्षिप्तता बनाए रखता है। जैसा कि ऊपर बता चुका हूं कि इसकी शैली संवादात्मक शैली है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ग्रोक की जानकारी लगातार अपडेट होती रहती है, जिससे यह नवीनतम घटनाओं और खोजों के बारे में भी बता सकता है। इसकी बहुभाषी क्षमता के कारण यह हिंदी सहित कई भाषाओं में आसानी से संवाद कर सकता है, जिससे यह वैश्विक उपयोगकर्ताओं के लिए सुलभ है। भारत में भी यह इसीलिए लोकप्रिय हो रहा है, क्यों कि यहां अधिकतर हिंदी का प्रयोग किया जाता है। ग्रोक उपयोगकर्ताओं द्वारा अपलोड की गई सामग्री, जैसे कि चित्र, कोई पीडीएफ और कोई टेक्स्ट फाइल्स, आदि को आसानी से समझ सकता है। ग्रोक न केवल नवीनतम वैज्ञानिक अनुमानों के आधार पर जवाब देने में सक्षम है, अपितु यह जवाबों को रोचक तरीके से प्रस्तुत करने की अभूतपूर्व क्षमताएं रखता है ।यह असामान्य(एब्नार्मल), फिलासीफिकल (दार्शनिक) सवालों तक के जवाब देने में सक्षम है। बहरहाल कहना ग़लत नहीं होगा कि हालांकि, ग्रोक एक बेहद शक्तिशाली ए आइ है, लेकिन इसकी अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। उदाहरण के लिए, यह स्वतंत्र रूप से नैतिक निर्णय नहीं ले सकता है। वास्तव में सच तो यह है कि मशीन में इंसान की भांति स्वाभाविक बुद्धिमत्ता और ज्ञान का अभाव होता है। एक इंसान अपनी बुद्धिमत्ता, ज्ञान, और समझ से संज्ञान में होता है। इंसान नई सांदर्भिक स्थितियों का सामना करने के लिए अपने अनुभव और सीख से सीधे निर्णय ले सकता है, वहीं मशीन कितनी ही आधुनिक क्यों न हो जाए, मशीन आखिर मशीन ही होती है ।साथ ही, पाठकों को बताता चलूं कि ग्रोक केवल वही चित्र संपादित कर सकता है, जो उसने पहले उत्पन्न किए हों। हाल फिलहाल,ग्रोक के बारे में यह बात कही जा सकती है कि यह लगातार उन्नत किया जा रहा है ।आने वाले समय में यह अधिक भाषाओं तक अपनी पहुंच बना सकेगा, और अधिक अच्छे से चीजों का विश्लेषण कर सकेगा, टेक्स्ट, पीडीएफ को और अधिक बेहतरी से समझ सकेगा, ऐसी उम्मीदें की जा सकतीं हैं ।आने वाले समय में यह मानवीय भावनाओं को भी और अधिक बेहतरी से समझ सकेगा, लेकिन यह मानव का हूबहू विकल्प नहीं हो सकता है ।आने वाले समय में, शिक्षा, अनुसंधान, और यहाँ तक कि व्यक्तिगत सहायता के क्षेत्र तक में भी यह क्रांति ला सकता है। यहां यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि ग्रोक आज ग्रोथ लालबुझक्कड़ की तरह लोगों के सवालों का धड़ाधड़ जवाब दे रहा है, लेकिन यह कोई अजूबा नहीं है। दरअसल, आज सोशल मीडिया पर हम सभी ने जाने अनजाने में बहुत सा डाटा शेयर कर दिया है और ग्रोक वही सब रिकार्डेड बातें/मैटीरियल एआइ एल्गोरिद्म की सहायता से हमें अविलम्ब बता रहा है। सच तो यह है कि आज हम भारतीयों की नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की महत्वपूर्ण जानकारियां तकनीक में एडवांस लोगों के पास उपलब्ध हैं। अंत में यही कहूंगा कि यह ठीक है आज हम तकनीक के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ते चले जा रहे हैं, लेकिन तकनीक का सही इस्तेमाल किया जाना बहुत आवश्यक है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

ग्राम पंचायत चंदौरा में आकस्मिक निरीक्षण के समय पंचायत घर बंद मिला

परिवहन विशेष न्यूज

24 मार्च को ग्राम पंचायत चंदौरा का आकस्मिक निरीक्षण किया गया निरीक्षण के समय पंचायत घर बंद मिला पंचायत सहायक बिना किसी सूचना के गायब थी और महिला केयर टेकर भी सामुदायिक शौचालय पर विगत कई कई दिनों तक नही आती है शौचालय में बहुत गंदगी पाई गई शौचालय भी मरम्मत योग्य पाया गया शौचालय के सोखता गड्ढा भरजाने से उसका मल बाहर निकल रहा है जिसमे बहुत दुर्गन्ध आराही है बही पर आबादी भी है लोगों की शिकायत है की सामुदायिक शौचालय की मरम्मत एवं रंगाई पुताई कराई जाए साथ ही सोखता गड्ढा पुना बन बाए जाए ।सफाई कर्मी श्री राजवीर जो 12 बजे ही बिना बताए यह कहकर चला गया की मेरी ड्यूटी बदायूं क्लब में है जब की उसकी ड्यूटी 25 को लगी है गांव में गन्दगी फैली है पंचायत घर के सामने ही गंदगी फैली पाई गई और नाली नाले भरे पड़े है ।सफाई कर्मी अपने पदीय दायित्वों का निर्वहन नहीं कर रहा है जिससे गांव में बीमारी फैलने की पूरी आशंका बनी हुई है ब्लॉक साल्लपुर बदायूं।

वृक्ष की 18वी वर्षगांठ पर वृक्ष जन्मोत्सव कार्यक्रम व शहीद दिवस मनाया गया

परिवहन विशेष न्यूज। पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत वृक्ष संरक्षण संजीव सक्सेना (बैनामा लेखक) द्वारा लगाए गए वृक्ष की 18वी वर्षगांठ वृक्ष जन्मोत्सव कार्यक्रम व शहीद दिवस मनाया गया

कार्यक्रम में श्री संजीव सक्सेना बैनामा लेखक जिनके द्वारा वृक्ष का 18 वर्ष संरक्षण हुआ और बदायूं से ये पहल शुरू हुई कि एक वृक्ष का 18वा जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि संजीव कुमार प्रजापति जी प्रांत गौरक्षा प्रमुख मुख्यवक्ता देवदत्त शर्मा जी कार्यक्रम अध्यक्ष मोहन लाल मौर्य जी कार्यक्रम के आयोजक श्री संजीव सक्सेना जी मयंक प्रताप जी अभिनव सक्सेना जी अनुज जी सूर्या जी आदि लोग उपस्थित रहे कार्यक्रम कार्यक्रम में पर्यावरण क्षेत्र में कार्य कर रहे योगेश सक्सेना जी राजवीर पटेल जी और कार्यक्रम के आयोजक संजीव सक्सेना जी को सम्मानित किया गया. मंच का कुशल संचालन सत्यम मिश्रा जी ने किया।

पानी से जुड़ी बुरी आदतें आपके लिए बन सकती हैं जहर

पानी के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कहते हैं शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनभर में कम से कम आठ से दस गिलास पानी जरूर पीना चाहिए। पानी पीना फायदेमंद तो होता ही है लेकिन तब जब सही मात्रा में और सही तरीके से पीया जाए। अगर पानी को गलत तरीके से पीया जाए या गलत समय में अधिक मात्रा में पीया जाए तो वह शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है, ऐसा आयुर्वेद में वर्णित है। आयुर्वेद को जीवन का विज्ञान माना जाता है,भोजन से लेकर जीवनशैली तक की चर्चाएं इस शास्त्र में समाहित हैं। आज हम आयुर्वेदिक ग्रन्थ अष्टांग संग्रह (वाग्भट्ट) में बताए गए पानी पीने के कुछ कायदों से आपको रूबरू कराने का प्रयास करते हैं। चलिए जानते हैं पानी कब, कैसे और कितना पीना चाहिए

1. भक्तस्यादौ जलं पीतमग्निसादं कृशा अङ्गताम!! खाना खाने से पहले यदि पानी पिया जाए तो यह जल अग्निमांद (पाचन क्रिया का मंद हो जाना) यानी डायजेशन में दिक्कत पैदा करता है।

२. अन्ते करोति स्थूल्त्वमूध्वच्चामाशयात कफम! खाना खाने के बाद पानी पीने से शरीर में भारीपन और आमाशय के ऊपरी भाग में कफ की बढ़ोतरी होती है। सरल शब्दों में कहा जाए तो खाने के तुरंत बाद अधिक मात्रा में पानी पीने से मोटापा बढ़ता है व कफ संबंधी समस्याएं भी परेशान कर सकती हैं।

३. प्रयातिपित्तश्लेष्मत्वम्ज्वरितस्य विशेषत:!! आयुर्वेद के अनुसार बुखार से पीड़ति व्यक्ति प्यास लगने पर ज्यादा मात्रा में पानी पीने से बेहोशी, बदहजमी, अंगों में भारीपन, मितली, सांस व जुकाम जैसी स्थिति पैदा हो सकती है।

4. आमविष्टबध्यो :कोश्नम निष्पिपासोह्यप्यप: पिबेत !आमदोष के कारण होने वाली समस्याओं जैसे अजीर्ण और कब्ज जैसी स्थितियों में प्यास न लगने पर भी गुनगुना) पानी पीते रहना चाहिए।

5. मध्येमध्यान्व्तामसाम्यं धातूनाम जरणम सुखम!!खाने के बीच में थोड़ी माPत्रा में पानी पीना शरीर के लिए अच्छा होता है। आयुर्वेद के अनुसार खाने के बीच में पानी पीने से शरीर की धातुओं में समानता आती है और खाना बेहतर ढंग से पचता है।

6. अतियोगेसलिलं तृषय्तोपि प्रयोजितम! प्यास लगने पर एकदम ज्यादा मात्रा में पानी पीना भी शरीर के लिए बहुत नुकसानदायक होता है। ऐसा करने से पित्त और कफ दोष से संबंधित बीमारियां होने की संभावना बढ़ जाती है।

7. यावत्य: क्लेदयन्त्यन्नमतिक्लेदोह्य ग्निनाशन:!! पानी उतना ही पीना चाहिए जो अन्न का पाचन करने में जरूरी हो, दरअसल अधिक पानी पीने से भी डायजेशन धीमा हो जाता है। इसलिए खाने की मात्रा के अनुसार ही पानी पीना शरीर के लिए उचित रहता है।

8. बिबद्ध : कफ वाताभ्याममुक्तामाशाया बंधन: ! पच्यत* क्षिप्रमाहार:कोष्णतोयद्रवी कृत:!! कफ और वायु के कारण जो भोजन नहीं पचा है उसे शरीर से बाहर कर देता है। गुनगुना पानी उसे आसानी से पचा देता है।

मारुति ब्रेजा के एएमटी वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद कितनी जाएगी ईएमआई

रिवहन विशेष न्यूज

मारुति की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर Maruti Breeza को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के AMT वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में Maruti Breeza की बिक्री की जाती है। अगर आप इस एसयूवी के ऑटोमैटिक वर्जन को खरीदना चाहते हैं तो दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट देने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Breeza AMT Price

मारुति की ओर से ब्रेजा को VXI वेरिएंट के साथ AMT ट्रांसमिशन के विकल्प में ऑफर किया जाता है। कंपनी इस एसयूवी के VXI AMT वेरिएंट को 11.15 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 11.15 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 1.12 लाख रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 33 रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इनके अलावा फास्टैग, एमसीडी, स्मार्ट कार्ड और टीसीएस चार्ज के तौर पर 16835 रुपये भी देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 12.77 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Maruti Breeza के VXI AMT वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 10.77 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 10.77 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 17329 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 10.77 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 17329 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Breeza के VXI AMT वेरिएंट के लिए करीब 3.78 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 16.55 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Maruti की ओर से Breeza को सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Venue, Kia Syros, Kia Sonet, Tata Nexon, Mahindra XUV 3XO, Citroen Basalt जैसी एसयूवी के साथ होता है।

रात के समय हाई बीम पर कार चलाने की बुरी आदत में करें बदलाव, बढ़ जाता है हादसे का खतरा

परिवहन विशेष न्यूज

दिन के साथ ही रात के समय भी बड़ी संख्या में लोग कार से सफर करते हैं। इनमें से ज्यादातर लोगों को इस बात की जानकारी नहीं होती कि रात में कार चलाते हुए हाई बीम पर लाइट को नहीं रखना चाहिए। ऐसा करने से क्या नुकसान होता है। किस तरह ऐसी आदत के कारण हादसा होने का खतरा बढ़ता है। आइए जानते हैं।

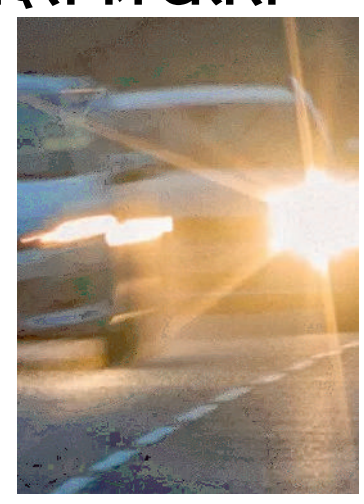

नई दिल्ली। अक्सर लोग दिन के मुकाबले रात के समय कार चलाने में ज्यादा सहूलियत महसूस करते हैं। लेकिन रात में हाई बीम पर कार चलाना आपके साथ ही अन्य लोगों की सुरक्षा पर खतरा बढ़ा देता है। किस तरह से हाई बीम लाइट के साथ सफर करना खतरनाक हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

बुरी आदत को बदलें

रात के समय हाई बीम पर कार चलाना एक बुरी आदत है। अपने साथ ही अन्य लोगों की सुरक्षा के लिए इस बुरी आदत को बदलना जरूरी होता है। इसकी जगह रात के समय कार को लो बीम लाइट पर ही चलाना चाहिए।

क्या है समस्या

रात के समय अगर कार की हेडलाइट को हाई बीम पर सेट करके चलाया जाता है तो इससे सामने से आने वाले वाहन के ड्राइवर को असुविधा होती है। सामने से आ रहे वाहन के ड्राइवर की आंखों पर आपकी गाड़ी की हाई बीम लाइट सीधी पड़ती है और इससे समस्या बढ़ जाती है।

बढ़ जाता है हादसा होने का खतरा

कार की हेडलाइट को अगर हाई बीम पर चलाया जाता है तो सामने से आने वाले वाहन के ड्राइवर को देखने में परेशानी होती है। जिस कारण यह अंदाजा नहीं लग पाता कि वह आपसे कितनी दूरी से वाहन को निकाले। ऐसे में कई बार हादसा हो जाता है और इसका नुकसान आपको भी होता है।

यह भी है कारण

रात के समय अक्सर कार चलाते हुए ड्राइवर को थकान होती है। कई बार नींद आने की समस्या भी हो जाती है। ऐसी स्थिति में अगर आंखों में तेज रोशनी पड़ती है तो फिर सड़क पर सही अंदाजा लगा पाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है और हादसा होने का खतरा बढ़ जाता है।

हाई बीम की जगह करें इसका चुनाव

रात के समय कार चलाते हैं तो हाई बीम की जगह कार की लाइट की सेटिंग को लो बीम पर रखना चाहिए। इससे न सिर्फ आपको अपनी जरुरत के लिए रोशनी मिलती है बल्कि इससे सामने से आ रहे वाहन के ड्राइवर को भी सुरक्षित सफर करने में आसानी होती है।

हो सकता है चालान

यातायात नियमों के मुताबिक भी रात के समय कार को चलाते हुए हेडलाइट को लो बीम पर रखना चाहिए। ऐसा न करते हुए हाई बीम पर लाइट रखकर कार चलाते हैं तो पुलिस की ओर से भी कार्रवाई की जा सकती है। ऐसी स्थिति में पुलिस की ओर से चालान किया जा सकता है।

इस साल लॉन्च होंगी चार नई MPVs, एमजी से लेकर किआ तक कर रही तैयारी, मिलेगा छह और सात सीटों का विकल्प

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों के साथ ही MPV सेगमेंट के वाहनों को भी काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। इस साल अलग अलग निर्माताओं की ओर से चार नई MPVs को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस निर्माता की ओर से किस सेगमेंट में किस गाड़ी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में बड़ी कारों को काफी पसंद किया जाता है। जिसे देखते हुए वाहन निर्माता भी SUV और MPV सेगमेंट में कई कारों को ऑफर करते हैं। कई निर्माताओं की ओर से जल्द ही नई MPVs को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस कंपनी की ओर से किस सेगमेंट में कब तक इनको लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG M9 MPV होगी लॉन्च

ब्रिटिश वाहन निर्माता MG की ओर से अभी तक एमपीवी सेगमेंट में किसी भी वाहन की बिक्री नहीं की जाती। लेकिन कंपनी जल्द ही M9 MPV को भारतीय बाजार में लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इलेक्ट्रिक सेगमेंट में इस एमपीवी को लाया जाएगा जो लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में लॉन्च होगी। इस गाड़ी को जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो में भी दिखाया जा चुका है।

Kia Carens Facelift की हो रही है तैयारी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ भी अपनी बजट एमपीवी कैरेंस के फेसलिफ्ट को लाने की तैयारी कर रही है। हालांकि निर्माता की ओर से अभी इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन गाड़ी को लगातार टेस्टिंग के दौरान देखा जा रहा है। जिसके बाद यह उम्मीद की जा रही है कि इसके फेसलिफ्ट को जल्द ही भारत में लॉन्च किया जाएगा। फेसलिफ्ट में कई कॉस्मैटिक बदलाव किए जा सकते हैं।

Kia Carens EV भी होगी लॉन्च

रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से कैरेंस फेसलिफ्ट के अलावा इसे इलेक्ट्रिक वर्जन में भी लाने की तैयारी की जा रही है। इसके लिए भी निर्माता की ओर से आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन इसे भी लगातार टेस्टिंग के दौरान देखा जा रहा है। जिसके बाद यह उम्मीद की जा रही है कि फेस्टिव सीजन तक किआ कैरेंस इलेक्ट्रिक को भी भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

Renault Triber का भी आएगा फेसलिफ्ट

रेनो की ओर से बजट एमपीवी के तौर पर ट्राइबर की बिक्री की जाती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इसकी भी टेस्टिंग की जा रही है। ट्राइबर एमपीवी के फेसलिफ्ट को भी कई बार देखा जा चुका है और इसे भी फेस्टिव सीजन के आस-पास तक लॉन्च किया जा सकता है। मौजूदा वर्जन के मुताबिक फेसलिफ्ट वर्जन में कई कॉस्मैटिक बदलाव किए जाएंगे लेकिन इसके इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा।

मारुति सुजुकी की गाड़ियां अप्रैल से और हो जाएंगी महंगी

परिवहन विशेष न्यूज

अप्रैल 2025 से मारुति सुजुकी की गाड़ियां और महंगी होने जा रही है। Maruti अपनी गाड़ियों की कीमत में फिर से 4 फीसद तक की बढ़ोतरी करने जा रही है। कंपनी ने कीमतों को बढ़ाने के पीछे का कारण कच्चे माल की बढ़ती लागत और ऑपरेशनल खर्चों को बताया है। कीमतों का इजाफा मॉडल के आधार पर होगा।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी की गाड़ियां और महंगी होने वाली है। कंपनी अप्रैल 2025 से अपनी गाड़ियों की कीमत को फिर से बढ़ाने जा रही है। इस बार भी कंपनी अपनी गाड़ियों की कीमत में 4% तक की बढ़ोतरी करने जा रही है। देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी ने नियामकीय फाइलिंग के दौरान इसके बारे में बताया। कंपनी की तरफ से कहा गया है कि गाड़ियों की कीमतों में 4 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो सकती है और यह मॉडल पर अलग-अलग होगी।

कंपनी ने बताया ये कारण

मारुति सुजुकी ने गाड़ियों की कीमत को बढ़ाने के पीछे का कारण बताते हुए कहा कि कंपनी लगातार लागतों को अनुकूलित करने और अपने ग्राहकों पर प्रभाव को कम करने का प्रयास करती है, लेकिन बढ़ी हुई लागत का कुछ हिस्सा बाजार में डालने की आवश्यकता हो सकती है। मारुति सुजुकी इंडिया ने कहा है कि कार की कीमतें बढ़ाने का फैसला, कच्चे माल की बढ़ती लागत और ऑपरेशनल खर्चों के कारण लिया गया है।

कंपनी की तरफ से यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि किन मॉडलों की कीमतों से सबसे ज्यादा बढ़ोतरी देखने के लिए मिलेगी। मारूती भारतीय बाजार में एंट्री-लेवल हैचबैक से लेकर प्रीमियम एसयूवी तक की गाड़ियों को पेश करती है।

2025 में कब-कब बढ़ी कीमत

कंपनी इससे पहले भी 4% की बढ़ोतरी कर चुकी है। इसकी घोषणा कंपनी ने पिछले साल दिसंबर में की गई थी और उसे जनवरी में लागू किया गया था। इस दौरान अलग-अलग मॉडल की कीमतों में 1,500 रुपये से 32,500 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई थी। इसकी तरह से फरवरी 2025 में भी गाड़ियों की कीमत में बढ़ोतरी की गई थी।

मारुति सुजुकी भारत में ये मॉडल करती है पेश

देश की सबसे बड़ी ऑटोमेकर मारुति सुजुकी हाल के समय में भारतीय बाजार में Alto K10 to the S-Presso, Eeco, Celerio, Wagon R, Ignis, Swift, Baleno, Dzire, Fronx, Brezza, Ertiga, Ciaz, Grand Vitara, XL6, Jimny और Invicto को ऑफर करती है।

2025 सुजकी एवेनिस और बर्गमैन स्कूटर हुए लॉन्च, नए रंग और बेहतर माइलेज मिलेगी, जानें कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

Suzuki Avenis and Burgman 2025 जापानी की प्रमुख दो पहिया निर्माता Suzuki की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से 24 March 2025 को अपने दो स्कूटर्स को अपडेट के साथ लॉन्च किया है। 2025 Suzuki Avenis और Burgman में क्या बदलाव किए गए हैं। किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापान की दो पहिया निर्माता Suzuki भारतीय बाजार में कई बेहतरीन मोटरसाइकिल और स्कूटर की बिक्री करती है। कंपनी की ओर से हाल में ही अपने दो स्कूटर्स को अपडेट के साथ लॉन्च किया है। किन स्कूटर्स के 2025 वर्जन को अब लॉन्च किया गया है। इनमें क्या बदलाव किए गए हैं। किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

2025 Suzuki Avenis और Burgman स्कूटर लॉन्च

सुजुकी ओर से 2025 Avenis और Burgman स्कूटर को लॉन्च कर दिया है। इन दोनों ही स्कूटर के इंजन को अब OBD-2B के साथ अपडेट किया गया है और कुछ नए रंगों के विकल्प भी दोनों स्कूटर में दिए गए हैं।

किस स्कूटर में कौन से रंग का विकल्प

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक Suzuki Avenis 2025 स्कूटर के स्पेशल एडिशन को साथ में लॉन्च किया गया है। जिसमें Metallic Matte Black और Matte Titanium Silver जैसे रंग दिए गए हैं। वहीं Suzuki Burgman Street EX स्कूटर में Mattellic Matte Steller Blue रंग को दिया गया है।

सुजुकी की ओर से Burgman Street 2025 स्कूटर को नए रंग के साथ ही Glossy Sparkle Black / Pearl Mira Red, Champion Yellow No 2 / Glossy Sparkle Black, Glossy Sparkle Black / Pearl Glacier White और Glossy Sparkle Black रंग के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है।

वहीं Suzuki Burgman स्कूटर में Metallic Matte Black No. 2 (YKC), Pearl Mirage White, Metallic Matte Titanium Silver, Pearl Matte Shadow Green, Pearl Moon Stone Gray, Metallic Matte Stellar Blue और Metallic Matte Black No. 2 (4TX) रंगों के विकल्प के साथ ऑफर किया गया है।

कितना दमदार इंजन

Suzuki Avenis स्कूटर में कंपनी की ओर से 124.3 सीसी की क्षमता के इंजन को दिया है। सिंगल सिलेंडर फोर स्ट्रोक इंजन से 8.7 पीएस की पावर और 10 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ SEP और एडवांस फ्यूल इंजेक्शन तकनीक को भी दिया गया है।

वहीं Suzuki Burgman स्कूटर में भी 124 सीसी की क्षमता के सिंगल सिलेंडर फोर स्ट्रोक इंजन को दिया गया है। इस इंजन से स्कूटर को 8.7 पीएस की पावर और 10 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसमें भी SEP तकनीक के साथ ईको परफॉर्मेंस एल्फा इंजन तकनीक, ऑटो स्टॉप/स्टार्ट, साइलेंट स्टार्टर सिस्टम जैसी तकनीक को दिया गया है।

कितनी है कीमत

Suzuki Avenis स्कूटर को भारत में 93200 रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च (Suzuki scooter price) किया गया है। वहीं Suzuki Burgman EX स्कूटर की एक्स शोरूम कीमत 116200 रुपये रखी गई है। Burgman Street स्कूटर को स्टैंडर्ड एडिशन और राइड कनेक्ट के साथ 95800 रुपये की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत से खरीदा ।

विजय गर्ग

वर्ष 2022 में 175 देशों ने प्लास्टिक उत्पादन, उपयोग और निपटान से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए 2024 तक प्लास्टिक प्रदूषण पर कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता विकसित करने पर सहमति व्यक्त की है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ठोस अपशिष्ट धरती को एक नए नुकसान की ओर धकेल रहा है।

चुनौती बनता ठोस कचरे का निपटान

बढ़ती जनसंख्या के साथ यह समस्या आम है कि उपयोग में लाई गई वस्तुओं को जब कचरे में बदलते हैं, तो फिर उनका क्या होता है? ठोस अपशिष्ट ऐसी ही चुनौतियों में शुमार है। इससे अनेक खतरे भी हैं। वैश्विक ताप में वृद्धि से दुनिया जूझ ही रही थी कि अब ठोस अपशिष्ट भी नई-नई शक्लो- सूरत में मुंह चिढ़ा रहा है। भारत में हरित विकास की अवधारणा अभी जोर नहीं पकड़ पाई है, जबकि दूसरी ओर ठोस कचरा तेजी पसर रहा है। नतीजा यह कि दुनिया एक नई समस्या की ओर बढ़ चली है। भारत में सालाना छह करोड़ बीस लाख टन कचरा उत्पन्न होता है। इसमें प्लास्टिक और चिकित्सीय जैव कचरा भी शामिल है। इसके अतिरिक्त खतरनाक अपशिष्ट उत्पादन लगभग अस्सी लाख टन है और पंद्रह लाख टन ई- कचरा भी एक बड़ी समस्या है।

अब यह भी समझना होगा कि आखिर ठोस कचरा होता क्या है। घर, ,कारोबार, उद्योग, संस्थाओं और कृषि से निकलने वाले बेकार या अवांछित ठोस या अर्ध ठोस पदार्थों को ठोस अपशिष्ट कहते हैं। ठोस अपशिष्ट में कई तरह पदार्थ शामिल होते हैं, जैसे कागज, प्लास्टिक, कांच, कार्डबोर्ड, खाद्य अपशिष्ट, उपकरण और निर्माण अपशिष्ट आदि । इसके अलावा, चिकित्सा जैव अपशिष्ट यानी अस्पतालों से निकलने वाला अपशिष्ट इलेक्ट्रानिक अपशिष्ट (ई-कचरा) मसलन, बैटरी, कंप्यूटर और मोबाइल फोन जैसी बेकार वस्तुएं। निर्माण स्थलों का मलबा, ,जिसमें ईंटें, सीमेंट और लकड़ी समेत रेडियोधर्मी अपशिष्ट जिसमें रेडियोधर्मी पदार्थ होते हैं जो गैस, तरल या ठोस रूप में हो सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनइपी) की वैश्विक अपशिष्ट प्रबंधन रपट 2024 के अनुसार, जैसे-जैसे देश अमीर होते जाते हैं, उद्योगीकरण और शहरीकरण की दर, आवास और खपत में वृद्धि होती है। यह अपशिष्ट 2030 तक ढाई अरब सवा तीन अरब टन और 2050 तक से अधिक तथा 2040 अन पौने चार अरब टन हो सकता है। आंकड़ों के 1 के मुताबिक, प्रति व्यक्ति ठोस कचरा उत्पादन में उत्तर अमेरिका अव्वल है, जबकि कुल ठोस अपशिष्ट के मामले में पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया पहले नंबर पर है। वैसे बीते ते कुछ वर्षों के आंकड़ों में चीन को विश्व स्तर पर सबसे अधिक प्रदूषक के । पहचाना गया है। चीन ने पिछले पंद्रह वर्षों में ठोस कचरे के संग्रह और प्रसंस्करण के बुनियादी ढांचे और सेवाओं में बड़े पैमाने पर निवेश किया

है।

वर्ष 2022 में 175 देशों ने प्लास्टिक उत्पादन, उपयोग और निपटान से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए 2024 तक प्लास्टिक प्रदूषण पर कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता विकसित करने पर सहमति व्यक्त की है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ठोस अपशिष्ट धरती को एक नए नुकसान की ओर धकेल रहा है। स्वास्थ्य संबंधी खतरे भी अपनी जगह हैं। मसलन, ठोस कचरा हवा और पानी में हानिकारक रसायन छोड़ सकता है, जिससे मस्तिष्क क्षति और कैंसर जैसी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। ठोस कचरे को अनुचित तरीके से संभालने से चोट लग सकती है। ठोस अपशिष्ट जल आपूर्ति को दूषित कर सकता है, हवा को प्रदूषित कर सकता है और भूमि को भी खराब कर सकता है। इतना ही नहीं, इसके खराब प्रबंधन से हैजा, मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियां फैल सकती हैं। ठोस कचरे का अनुचित निपटान जलवायु संकट बढ़ा सकता है। खतरनाक कचरे में पेंट, सालवेंट, 'आटोमोटिव' अपशिष्ट, कीटनाशक और पारायुक्त अपशिष्ट शामिल हैं। खतरनाक पदार्थ विस्फोट कर सकते या आग लगने का कारण बन सकते हैं और कुछ मनुष्यों या पर्यावरण में विषाक्त प्रभाव पैदा सकते हैं। उपभोक्ता उत्पाद और उनकी 'पैकेजिंग' में भी कुछ रसायन मात्रा में पाए जाते हैं।

संयुक्त राज्य पर्यावरण संरक्षण एजंसी की 2023 की रपट में भी ऐसे ठोस अपशिष्ट के खतरों से आगाह किया गया है। कार्बनिक प्रदूषक चिंता का कारण हैं, क्योंकि ये हवा और पानी से लंबी दूरी तक चले जाते हैं। ठोस अपशिष्ट कई ऐसी बीमारियों का भी कारण हैं जिन्हें पहचानना शायद अभी बाकी है। वहीं अपशिष्ट न्यूनीकरण और अपशिष्ट प्रबंधन में कम निवेश हुआ है। भारत वर्तमान में स्वच्छ भारत मिशन के हिस्से के में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर लगभग सात हजार 366 खर्च कर देश भर में अपशिष्ट प्रबंधन पहल के लिए आबंटित समग्र कार्यक्रम बजट का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। 'नेचर जर्नल' के अनुसार भारत सालाना नब्बे लाख तीस हजार टन उत्सर्जन कर दुनिया में सबसे बड़े प्लास्टिक प्रदूषक के रूप में शीर्ष पर है। यह वैश्विक प्लास्टिक उत्सर्जन का लगभग पांचवां हिस्सा है। जाहिर है, यह भारत के लिए चिंता का विषय है।

ठोस अपशिष्ट दुनिया के लिए चुनौती है। मगर इनमें कुछ आर्थिक अवसर भी छिपे हैं। अनुमान के मुताबिक भारत द्वारा अपनाई गई चक्रीय अर्थव्यवस्था से 40 लाख करोड़ रुपए का वार्षिक लाभ हो सकता है। आवश्यक संसाधनों की प्राप्ति समेत कई संदर्भों में यह रोजगार का एक जरिया भी बना हुआ । कबाड़ से करोड़ों बनाने की अवधारणा को भी ठोस अपशिष्ट में देखा जा सकता है। रोजमर्रा की जिंदगी के बीच कचरा बीनने वाले को देखा जाना आम है। इसमें बच्चों से लेकर बड़े तक शामिल हैं। स्पष्ट है कि ठोस अपशिष्ट नुकसान के साथ कई लोगों के लिए रोजी-रोटी है। है। बावजूद इसके अपशिष्ट प्रबंधन के समाधान का रास्ता खोजा ही जाना चाहिए। अकेले शहरी भारत में प्रतिदिन लगभग डेढ़ करोड़ टन ठोस अपशिष्ट उत्पन्न होता है। मगर देखा जाए तो भारत में अपशिष्ट प्रबंधन कानून और नीतियां जिस सक्रियता के साथ लागू होनी चाहिए, वह अभी भी मजबूत धरातल नहीं बना पा रही हैं। यह सच है कि भारत में उचित निपटान और पुनर्चक्रण के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम है। ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022 इलेक्ट्रानिक कचरे को संभालने के लिए है, जिसे दो नवंबर, 2022 को अधिसूचित किया गया। इसके अलावा बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022 भी हमारे यहां है, जिसके अंतर्गत अपशिष्ट बैटरियों का पर्यावरण के प्रबंधन सुनिश्चित किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में देखें, तो प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2021 एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देते हैं। फिलहाल, ठोस अपशिष्ट से दुनिया अनजान नहीं है। ऐसे में, इसके उत्पादन और निपटान में संतुलन ही आने वाले खतरे को कम कर सकेगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पता नहीं क्यों

विजय गर्ग

एक सवाल हमेशा हर किसी के जेहन में उठता है कि ऐसा पता नहीं क्यों होता है या ऐसा पता नहीं क्यों नहीं होता ! किसी भी विषय या मसले पर बात की जाए, सवाल उठेगा ही कि पता नहीं क्यों ! एक जमाने में स्कूलों में अध्यापक मासूम बच्चों के भी कान खींचते थे, गालों पर थप्पड़ रसीद कर देते थे, कोमल हथेलियों पर फट्टे तक से पीटते थे, लेकिन कोई बच्चा स्कूल में अवसाद के कारण आत्महत्या के बारे में नहीं सोचता था या फिर आत्महत्या नहीं करता था । इसके क्या कारण रहे होंगे ? हर किसी के बचपन में रोज-रोज नए और महंगे खिलौनों के लिए जिद करना, मिलने पर उनसे खेल कर आनंदित होना, लेकिन एक-दो बार खेलने के बाद मन भर जाना। ऐसा पता नहीं क्यों ? ज्यादातर घर कच्चे थे, कमरे कम थे, लेकिन किसी के बुजुर्ग माता-पिता कभी वृद्ध आश्रम नहीं जाते थे। पता नहीं क्यों ? परिवार बहुत बड़े होते थे, पड़ोसियों के बच्चे भी दिन भर आस-पड़ोस की छत और आंगन में खेलते थे, घरों में ही शादियों जैसे बड़े समारोह हो जाते थे । पता नहीं क्यों ?

सुबह और शाम गली-मुहल्ले के हर घर के बाहर कोयले या फिर उपले से अंगीठी सुगलाई जाती थी, गली - घरों में घुस जाता था, कोई चूं नहीं करता था और प्रदूषण का रोना नहीं था। पता नहीं क्यों ? घर-परिवार में रोज गाय के खाने के लिए रोटियां सेंकने और निकालने की परंपरा के बावजूद गृहस्थी का बजट डगमगाता नहीं था और आमतौर पर संतुलित रहता था । जबकि आज परिवार के अपने खाने- पीने का बजट ही भारी पड़ने लगा है। पता नहीं क्यों ? खाने को सादी दाल- रोटी होती थी, बावजूद इसके किसी को भी खून की कमी नहीं होती थी । रोग भी कम थे। पता नहीं क्यों ?

पुरुषों की तरह महिलाओं के लिए तब 'जिम' नहीं थे। दिन भर चूल्हा- चौका करते-करते हुए भी आमतौर पर सेहतमंद रहती थीं। पता नहीं क्यों ? सगे भाई - भाई और भाई- बहन छोटी-छोटी बातों पर खूब लड़ते-झगड़ते थे । आपस में कुट्टी और कुटाई तक की नौबत आ जाती थी, लेकिन कुछ देर में फिर घुल-मिल जाते थे । मनमुटाव लंबा नहीं खिंचता था । पता नहीं क्यों ? माता-पिता भी कई बार किसी मामूली बात पर भी बच्चों को थप्पड़ मार देते थे, लेकिन उनका मान-सम्मान कभी कम नहीं होता था । पता नहीं क्यों ? आज यह समझना मुश्किल हो गया है कि लोग अनमोल रिश्ते दांव पर लगा देते हैं, लेकिन अपनी बेमानी जिद पर अड़े रहते हैं। कई लोग शुरुआत में अच्छे लगते हैं, लेकिन समय के साथ अपने तेवर दिखाने लगते हैं। पता नहीं क्यों ?

आज सोच बदल रही है। जैसे हर मोबाइल या उपकरण का नया माडल पहले के या पुराने से बेहतर होता है। नई युवा पीढ़ी की सोच पुरानी और दरम्यानी पीढ़ी से हट कर है। कुछ समय पहले एक बार किसी के घर की नाली बंद हो गई। रसोई, स्नान गृह वगैरह में सीवर का गंदा पानी बाहर निकलने लगा। गंदा पानी घर में घुसने से सारे काम रुक गए। गृहिणी ने प्लंबर को फोन किया। संयोग से वह खाली था। साइकिल दौड़ाता कुछ देर में आ गया। उसने कुछ ही देर में नाली खोल दी । मेहनताने के तौर पर पांच सौ रुपए मांगे तो घर की मालकिन भौंचक्की रह गई । बोली, 'मैं सरकारी स्कूल में शिक्षक हूं। मुझे तो बच्चों को एक घंटा पढ़ाने के भी पांच सौ रुपए नहीं मिलते। तुम दो सौ रुपए ले लो... यही जायज है ।' प्लंबर नहीं माना। अपनी बात पर अड़ा रहा । कहा-सुनी सुन कर भीतर से घर की बुजुर्ग महिला बाहर आ गईं। सारी बात सुनने-समझने के बाद बहू से उन्होंने कहा कि ' तूने तो दो सौ रुपए ज्यादा बोल दिए हैं। मुश्किल से बीस रुपए का काम है। इसे पचास रुपए देकर हिसाब करो ।' मगर प्लंबर नहीं मान रहा था। इतने में घर की मालकिन का नौजवान बेटा बाहर से घर आया । वह मां का हाथ पकड़ कर अंदर ले गया। समझाने लगा कि 'मां, वह दस मिनट में दौड़ा आया और फटाफट मिनटों में नाली खोल दी। उसने तुम्हारा कितना परेशानी कम कर दी । तुम्हारा तनाव दूर कर दिया। वह नहीं आता, तो दिन भर तुम्हारा काम न निपट पाता । इसे पांच सौ रुपए तो दो ही, ऊपर से पचास रुपए का इनाम भी दे दो !' मां और दादी नौजवान की समझ सुन कर हैरान हुए ।

शायद इसी को पीढ़ियों का अंतराल कहते हैं। बीते कल, आज और आने वाले कल की तीन पीढ़ियों की समझ में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है। विचारक जोनाथन मार्टेसन का मानना है कि भावनाएं और विचार लहरों की तरह होते हैं। आप उन्हें आने से रोक नहीं सकते, लेकिन आप यह चुन सकते हैं। कि किन लहरों की सवारी करनी है ?

जाहिर है कि एक जाने वाला कल होता है, और दूसरा आने वाला कल । यानी कुछ भी स्थिर नहीं होता । सब कुछ बदलने वाला होता है। हर चीज पाने या मिलने के सुख के संग-संग बिछुड़ने या न मिलने का दुख साथ चलता है। एक अमेरिकी उपन्यासकार जैक ने लिखा है कि हाथ में सदा अच्छे पत्ते आना ही जीवन नहीं है... खराब पत्तों के साथ अच्छा खेलना ही जीवन है । दोनों में अंतर यह होता है कि बीता कल एक गुजर चुका समय होता है, जिसमें हमारे पास कोई नियंत्रण नहीं होता, जबकि आने वाला कल एक अवसर होता है, जिस पर हम कर्म या क्रिया से नियंत्रित और बेहतर बना सकते हैं । इसलिए सीखने और सुधारने की प्रक्रिया बीते कल और आने वाले कल के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होती है ।

आखिर हम फिनलैंड की तरह खुश क्यों नहीं हुए ?

जीवन फूलों की सेज नहीं है। यहां यह पल कहीं न कहीं संघर्ष है, परेशानियां हैं, कष्ट हैं, लेकिन इन संघर्षों, परेशानियों और कष्टों में भी जो व्यक्ति हमेशा सकारात्मक सोच और ऊर्जा से जीवन को बहुत ही सहजता, धैर्य, संयम और खुशी(प्रसन्नता) से जीता है, वही तो वास्तव में असली जीवन है। वास्तव में, जीवन के हर क्षण में आनंद और संतोष का अनुभव करना ही प्रसन्नता है। महात्मा गांधी जी ने कहा है कि 'प्रसन्नता तब होती है जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सब एक साथ हों।' यह ठीक है कि व्यक्ति जब किसी उपलब्धि विशेष, सफलता को प्राप्त कर लेता है तो उसे खुशी या प्रसन्नता का अनुभव होता है, लेकिन यदि वास्तव में देखा जाए तो किसी उपलब्धि या स्थिति विशेष तक पहुंचना ही खुशी नहीं है। दरअसल, खुशी या प्रसन्नता का भाव हमेशा अंतर्मन में निहित होता है, यह(खुशी) आंतरिक होती है, बाह्य नहीं। संपत्ति, पद और प्रतिष्ठा(नेम एंड फेम) या सफलता प्राप्त करना ही खुशी या प्रसन्नता नहीं है, यह इससे भी ऊपर थोड़ा हटकर है। खूब सारी संपत्ति हमें प्रसन्नता दे सकती है, इसी तरह से प्रतिष्ठा से भी हमें खुशी का अहसास हो सकता है, लेकिन यदि प्रसन्नता का भाव देखा जाए तो यह भौतिकता में तो कतई नहीं है। वास्तव में, यह हमारे भावनात्मक और मानसिक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। असल में हमारे भीतर (अंतर्मन) की शांति और संतोष ही असली प्रसन्नता है। हाल ही में 'विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट' जारी की गई है। पाठकों को बताता चलूं कि २० मार्च २०२५ गुरुवार को यह रिपोर्ट जारी की गई है, जो यह बताती है कि खुशी सूचकांक में भारत का स्कोर 10 में से 4.389 पर आ गया है, जो पहले 4.054 था। निश्चित रूप से स्कोर बढ़ा है, लेकिन खुशी इतनी नहीं। मामूली सी बढ़ोत्तरी हुई है इसमें। यहां यह भी गौरतलब है कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वेलबीइंग रिसर्च सेंटर ने गैलप, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क के साथ साझेदारी में वर्ल्ड हैप्पीनेस डे (२० मार्च) पर वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट (डब्ल्यू एच आर) २०२५ जारी की है। इस रिपोर्ट में जिन 147 देशों का विश्लेषण शामिल किया गया, उनमें भारत 118वें नंबर है। हालांकि, यह रैंकिंग अभी भी भारत को यूक्रेन, मोज़ाम्बिक और इराक सहित कई संघर्ष-प्रभावित देशों से पीछे रखती है। पूर्व में 143 देशों में यह १२६वें स्थान पर था। मतलब यह है कि भारतीय लोग पिछले सालों की तुलना में अब थोड़ा सा अधिक प्रसन्न रहने लगे हैं। यानी विश्व में खुश रहने के मामले में भारत की रैंकिंग में कुछ सुधार तो हुआ है, लेकिन यहां यह गौरतलब है कि हमारे पड़ोसी नेपाल (९२) और पाकिस्तान (109) प्रसन्नता के मामले में हमसे आगे हैं। क्या यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि जो पाकिस्तान लगातार आर्थिक चुनौतियों, महंगाई, आतंकवाद और अराजकता से जूझ रहा है, वह भी प्रसन्नता के मामले में हमारे देश से आगे है ? रिपोर्ट बताती है कि पाकिस्तान का प्रदर्शन भारत से बेहतर रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि हैप्पीनेस इंडेक्स पर उसका स्कोर 4.657 से बढ़कर इस बार 4.768 दर्ज किया गया है, लेकिन उसकी रैंकिंग 108 से गिरकर 109 पर आ गई है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि विभिन्न देशों की प्रसन्नता पर आधारित यह रैंकिंग लोगों के जीवन मूल्यांकन के तीन वर्षों के औसत से तैयार की जाती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस 'खुश स्कोर' में भिन्नता की व्याख्या करने के लिए रिपोर्ट में प्रति व्यक्ति जीडीपी, स्वस्थ जीवन प्रत्याशा, सामाजिक स्थिति, जीवन जीने की आजादी, उदारता और भ्रष्टाचार जैसे छह संकेतकों को मापा जाता है, लेकिन खुशहाली रैंकिंग इन छह कारकों में से किसी पर भी आधारित नहीं होती है। बहरहाल, यहां पाठकों को यह जानकारी देना चाहूंगा कि प्रति व्यक्ति आय जैसे गणनात्मक पैमाने पर भारत की स्थिति पाकिस्तान से कहीं बेहतर दर्शायी गई है। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार भारत में जहां वर्ष २०२३ में प्रति व्यक्ति आय जहां २,480.8 डॉलर रही, वहीं पाकिस्तान में यह 1,365.3 डॉलर के स्तर पर ही अटक गई। यहां गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष २०२१ में पाकिस्तान की स्वास्थ्य जीवन प्रत्याशा (जन्म के समय) जहां 56.9 साल थी, वहीं भारत की स्वास्थ्य जीवन प्रत्याशा 58.1 साल थी। इसके अतिरिक्त ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल द्वारा जारी भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक, २०२४ रिपोर्ट में भ्रष्टाचार के मामले में पाकिस्तान जहां 135वें नंबर रहा, वहीं भारत का स्थान इसमें ९६वां था। बहरहाल, यदि हम यहां 'विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट' में टॉपर्स की लिस्ट की बात करें तो एकबार फिर फिनलैंड (लगातार आठवीं बार) नंबर 1 पर कायम है। गौरतलब है कि फिनलैंड ने 7.74 का प्रभावशाली औसत स्कोर किया, जिससे वैश्विक स्तर पर सबसे खुशहाल राष्ट्र के रूप में अपनी पोजीशन बरकरार रखी है। जानकारों के अनुसार फिनलैंड में दिन में केवल चार घंटे सूरज निकलता है। यहां बहुत ठंड का मौसम रहता है, लेकिन कितनी बड़ी बात है इन सब विकट परिस्थितियों के बावजूद फिनलैंड के लोग दुनिया में सबसे प्रसन्न हैं। सूची में फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, नीदरलैंड, कोस्टा रीका, नार्वे , इजरायल, लक्ज़मबर्ग, मेक्सिको और स्वीडन का स्थान है। वास्तव में, इन देशों ने अपनी स्ट्रांग सोशल सपोर्ट सिस्टम, हाई स्टैंडर्ड ऑफ लीविंग और वर्क-लाइफ बैलेंस के प्रति प्रतिबद्धता के कारण लगातार खुशी रिपोर्ट में टॉप रैंक को प्राप्त किया है। दिलचस्प बात यह है कि कोस्टा रिका और मैक्सिको ने शीर्ष 10 में अपनी शुरुआत की, क्रमशः ६वां और 10वां स्थान हासिल किया। वहीं पर दूसरी ओर, संयुक्त राज्य अमेरिका २४वें स्थान पर अपनी सबसे निचली रैंकिंग पर आ गया, वहीं पर यूनाइटेड किंगडम २३वें स्थान पर है। रिपोर्ट में चीन ६8वें स्थान पर रखा गया है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा दक्षिण एशियाई देशों में म्यांमार (१२६वाँ), श्रीलंका (133वाँ), बांग्लादेश (134वाँ) का स्थान पर रखे गए हैं। वहीं पर अफगानिस्तान (147वाँ) (लगातार चौथे वर्ष) स्थान पर है। वास्तव में, अफगानिस्तान को दुनिया का सबसे दुखी देश माना गया है। देश की निम्न रैंकिंग का मुख्य कारण अफ़गान महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले संघर्ष हैं, जिन्होंने बताया कि उनका जीवन लगातार कठिन होता जा रहा है। अन्य देशों में क्रमशः सिएरा लियोन (146वाँ), लेबनान (145वाँ), मलावी (144वाँ) और ज़िम्बाब्वे (143वाँ) का प्रदर्शन सबसे निम्नतम रहा है। वास्तव में, अफगानिस्तान के बाद, सिएरा लियोन और लेबनान क्रमशः दूसरे और तीसरे सबसे दुखी देश हैं। इन देशों ने संघर्ष, गरीबी और सामाजिक अशांति सहित महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना किया है। पाठकों को बताता चलूं कि यह रैंकिंग लोगों के जीवन मूल्यांकन के ३-वर्षीय औसत पर आधारित है, जिसमें प्रतिक्रियादाता अपने वर्तमान जीवन को 0 से 10 के पैमाने पर रेट करते हैं। यहां यदि हम हैप्पीनेस के निर्धारक कारकों की बात करें तो इनमें क्रमशः विश्वास, सामाजिक संबंध, शेयर्ड मील और सामुदायिक दयालुता जैसे कारक शामिल हैं, जो सामान्यतः धन से भी अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। गौरतलब है कि वर्ष २०२५ में विश्व प्रसन्नता दिवस की थीम: 'केयरिंग एंड शेयरिंग' रखी गई थी तथा 'वर्ल्ड हैप्पीनेस डे'(विश्व प्रसन्नता दिवस) की पहल सर्वप्रथम भूटान द्वारा की गई थी, जिसने 1970 के दशक से ही ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस (जीएनएच) को जीडीपी से अधिक प्राथमिकता दी है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि जुलाई २०१२ में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा २० मार्च को 'वर्ल्ड हैप्पीनेस डे' के रूप में मनाने का निर्णय अंगीकृत किया गया था। बहरहाल, यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर हमारा देश प्रसन्नता के मामले में इतना पीछे क्यों है ? जबकि हमारे देश की स्थिति नेपाल और पाकिस्तान से तो हर मायने में बहुत ज्यादा बेहतर है। दरअसल, इसके पीछे कुछ कारण निहित हैं। कारण यह है कि आज हम अपनी परेशानियों को ज़्यादा बड़ा बना कर देखते हैं। यह भी कि हमारे देश में 'जीवन की स्वतंत्रता' के पैमाने अन्य देशों की तुलना में कुछ अलग हैं, जिनको शायद इस रिपोर्ट में शामिल नहीं किया गया, इसलिए हम प्रसन्नता के मामले में पाकिस्तान और नेपाल जैसे देशों से भी पिछड़ गए। आज हम प्रकृति के भी उतने निकट नहीं रह गये हैं, जितने कि आज से पच्चीस तीस पहले थे। बहरहाल, वास्तव में यह क्रूर मज़ाक नहीं तो और क्या है कि युद्धों में मटियामेट फिलिस्तीनी और यूक्रेनी लोग भी भारतीयों से कहीं ज़्यादा खुशहाल व प्रसन्न हैं। बहरहाल, हमें यहां जरूरत इस बात की है कि प्रसन्नता के मामले में हम फिनलैंड से कुछ सीखें। कहना ग़लत नहीं होगा कि फिनलैंड दुनिया भर में खुशी के सूचकांक में हर बार शीर्ष पर रहता है। संभवतः, यह प्रवृत्ति इसलिए है, क्योंकि फिनलैंड के लोग सरल सुखों का आनंद लेते हैं-जैसे स्वच्छ हवा , शुद्ध पानी और जंगल में घूमना -पूरी तरह से, लेकिन हमारे यहां दूसरी चीजें हैं। मसलन, हम घंटों घंटों तक ट्रैफिक जाम में फंसे रहते हैं, लोकल ट्रेनों में धक्के खा रहे होते हैं। हमारे यहां प्रदूषण का स्तर भी कुछ कम नहीं है। हमारे यहां मेट्रो सीटीज में बहुत प्रदूषण है। शहरों में अस्वच्छता भी है। हमारे यहां आज भी भ्रष्टाचार की जड़ें काफी गहरी हैं, लेकिन फ़िनलैंड में सब कुछ ठीक चलता है; मसलन, वहां पर सार्वजनिक सेवाएँ सुचारु रूप से चलती हैं, अपराध और भ्रष्टाचार का स्तर कम है, और सरकार और जनता के बीच एक अर्जित विश्वास है। यह सब मिलकर एक कार्यशील समाज और सभी का ख्याल रखने की संस्कृति बनाने के लिए काम करता है। फ़िनलैंड में 40 से ज़्यादा राष्ट्रीय उद्यान हैं, जो हाइकिंग रूट, नेचर ट्रेल और कैम्पफ़ायर साइट्स से भरे हुए हैं, जहाँ आप तारों के नीचे एक रात बिता सकते हैं। फ़िनलैंड के सभी जंगल अलग-अलग आकार और साइज़ में आते हैं ; हरे-भरे दक्षिणी जंगलों से लेकर उत्तर के आर्कटिक अजूबों तक, बहुमुखी प्रतिभा और विविधता खिलती है। प्रकृति से लोगों का विशेष जुड़ाव है, जो उन्हें प्रसन्न और खुश रहने में मदद करता है। हम भारतीयों को यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि प्रकृति के साथ निकटता रचनात्मकता और नवीनता को बढ़ावा देती है। वास्तव में, कहना ग़लत नहीं होगा कि फ़िनलैंड की कम तनाव वाली जीवनशैली रचनात्मकता को बढ़ावा देती है, जिससे यह दुनिया के सबसे नवोन्मेषी देशों में से एक बन गया है। सच तो यह है कि फिनलैंड की खुशहाली का कारण, वहां के समाज में विश्वास और स्वतंत्रता का उच्च स्तर है। फिनलैंड के सबसे अधिक खुश व प्रसन्न होने के पीछे एक कारण यहां की आबादी भी है। दरअसल, आबादी कम होने के कारण लोगों को मिलने वाली सुविधाएं काफी अच्छी होती हैं। यह भी कि फिनलैंड के निवासी अपने पड़ोसियों से अपनी तुलना नहीं करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि सच्ची खुशी की ओर पहला कदम दूसरों से अपनी तुलना करने के बजाय अपने खुद के मानक निर्धारित करना है, जो कि फिनलैंड के लोगों ने करके दिखाया है। इतना ही नहीं, फिनलैंड के निवासी न तो प्रकृति के लाभों को नज़रअंदाज़ करते हैं और न ही विश्वास का कम्यूनिटी सर्कल को तोड़ते हैं, इसलिए वे हमेशा खुश और प्रसन्न रहते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा फिनलैंड में काम-जीवन संतुलन पर बहुत ज़ोर दिया जाता है, जिसमें काम के घंटे कम करना, माता-पिता को छुट्टी देने की उदार नीतियाँ और पर्याप्त छुट्टी का समय शामिल है। यह दृष्टिकोण फिन्स को अवकाश, परिवार और व्यक्तिगत गतिविधियों को प्राथमिकता देने की अनुमति देता है, जिससे समग्र कल्याण और संतुष्टि को बढ़ावा मिलता है। इतना ही नहीं, फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली समानता, सुलभता और बालकों के समग्र विकास को प्राथमिकता देती है। फिनलैंड में लैंगिक समानता, महिला सशक्तीकरण, एक समावेशी समाज में योगदान करते हैं। यहां की सौना संस्कृति भी उनकी(फिनलैंड वासियों) प्रसन्नता का एक बड़ा कारण है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि सौना, फिनिश संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है, जो विश्राम, सामाजिक मेलजोल और कायाकल्प के लिए एक पोषित परंपरा के रूप में कार्य करता है। देश में तीन मिलियन से अधिक सौना के साथ, फिनिश लोग सौना स्नान को अपने स्वास्थ्य का एक मूलभूत पहलू मानते हैं, जो सामाजिक संबंधों और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हुए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। इतना ही नहीं, फिनलैंड में भ्रष्टाचार का स्तर दुनिया में सबसे कम है, जिससे सार्वजनिक संस्थाओं में विश्वास बढ़ता है और नागरिकों में निष्पक्षता और न्याय की भावना को बढ़ावा मिलता है। पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक शासन फिनलैंड की एक भरोसेमंद और विश्वसनीय समाज के रूप में प्रतिष्ठा में योगदान करते हैं। फिनलैंड में समुदाय में भावना बहुत ही प्रबल है। वास्तव में, फिनिश समाज समुदाय और सामूहिक कल्याण पर बहुत ज़ोर देता है। घनिष्ठ पड़ोस से लेकर जीवंत सामाजिक मंडलियों तक, फिनिश लोग रिश्तों, एकजुटता और आपसी सहयोग को प्राथमिकता देते हैं, जिससे एक दूसरे से जुड़ाव और जुड़ाव की भावना पैदा होती है जो समग्र खुशी को बढ़ाती है। अंत में यही कहूंगा कि यदि हमें भी प्रसन्नता में नंबर वन बनना है तो हमें फिनलैंड से प्रेरणा लेते हुए बहुत से सुधार अपने यहां करने होंगे तभी हम प्रसन्नता सूचकांक में सिरमौर देश बन सकते हैं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

वैज्ञानिकों ने खुलासा किया कि हम अपने शुरुआती वर्षों को क्यों याद नहीं कर सकते

विजय गर्ग

शिशु शिशु मस्तिष्क चित्रण वर्षों से, वैज्ञानिक इस बात से हैरान हैं कि हम अपने शुरुआती वर्षों को क्यों याद नहीं कर सकते। 12 महीने के रूप में युवा यादों को एनकोड कर सकते हैं, सिद्धांतों का खंडन करते हुए कि स्मृति निर्माण शैशवावस्था में असंभव है।

इसके बजाय, प्रारंभिक जीवन को याद करने में असमर्थता स्मृति हानि के बजाय पुनर्प्राप्ति विफलताओं से उपजी हो सकती है।

शिशु स्मृति के बारे में चुनौतीपूर्ण मान्यताओं एक नया fMRI अध्ययन लंबे समय से आयोजित विश्वास को चुनौती देता है कि शिशु यादें नहीं बना सकते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि 12 महीने से कम उम्र के बच्चे यादों को एनकोड कर सकते हैं, यह सुझाव देते हुए कि शिशु भूलने की बीमारी, बचपन के शुरुआती अनुभवों को याद करने में असमर्थता, पहले स्थान पर यादें बनाने में असमर्थता के बजाय पुनर्प्राप्ति विफलताओं के कारण अधिक संभावना है।

शिशु भूलने की बीमारी का रहस्य बचपन में तेजी से सीखने का समय होने के बावजूद, अधिकांश लोग अपने पहले तीन वर्षों के जीवन से घटनाओं को याद नहीं कर सकते हैं। इस घटना, जिसे शिशु भूलने की बीमारी के रूप में जाना जाता है, ने वैज्ञानिकों को वर्षों से हैरान कर दिया है। एक सिद्धांत से पता चलता है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि एपिसोडिक मेमोरी के लिए आवश्यक मस्तिष्क क्षेत्र हिप्पोकैम्पस बचपन के दौरान पूरी तरह से विकसित नहीं होता है। हालांकि, कृन्तकों में अध्ययन इस विचार को चुनौती देते हैं, यह दिखाते हुए कि स्मृति चिह्न, या एंग्राम, शिशु हिप्पोकैम्पस में बनते हैं, लेकिन समय के साथ दुर्गम हो जाते हैं।

शिशुओं को आश्चर्यजनक तरीकों से स्मृति दिखाते हैं मनुष्यों में, शिशु नकल, परिचित उत्तेजनाओं की मान्यता और वातानुकूलित प्रतिक्रियाओं जैसे व्यवहारों के माध्यम से स्मृति प्रदर्शित करते हैं। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि ये क्षमताएं हिप्पोकैम्पस या अन्य मस्तिष्क संरचनाओं पर निर्भर करती हैं या नहीं। इसकी जांच करने के लिए, ट्रिस्टन येट्स और सहयोगियों ने 4 से 25 महीने की उम्र के शिशुओं के दिमाग को स्कैन करने के लिए fMRI का उपयोग किया, जबकि उन्होंने एक मेमोरी कार्य पूरा किया। यह कार्य, आमतौर पर वयस्क अध्ययनों में उपयोग की जाने वाली विधि से अनुकूलित होता है, जिसमें चेहरे, दृश्यों और वस्तुओं के शिशुओं की छवियों को दिखाना

शामिल होता है, इसके बाद तरजीही दिखने के आधार पर एक स्मृति परीक्षण होता है, सभी न्यूरोइमेजिंग के दौरान आयोजित किए जाते हैं।

बच्चे व्यक्तिगत यादों को एन्कोड कर सकते हैं परिणामों से पता चला है कि लगभग 12 महीने तक, शिशु हिप्पोकैम्पस व्यक्तिगत यादों को एन्कोड कर सकता है। यह खोज मजबूत सबूत प्रदान करती है कि यादें बनाने की क्षमता शैशवावस्था में शुरू होती है। शोधकर्ताओं के अनुसार, इन यादों की अस्थायी प्रकृति के बावजूद मेमोरी एन्कोडिंग तंत्र की उपस्थिति, इस विचार का समर्थन करती है कि शिशु भूलने की बीमारी मुख्य रूप से यादों को बनाने में असमर्थता के बजाय पुनर्प्राप्ति विफलताओं के कारण होती है।

बनावटी तस्वीरों से बढ़ता अवसाद : विजय गर्ग

सामाजिक आयोजन, पारिवारिक समारोह, सांस्कृतिक सम्मेलन या व्यक्तिगत भेंट। सुखद वाकया हो या किसी के संसार छोड़ जाने का पीड़ादायी प्रसंग । सब कुछ तस्वीरों तक सिमट रहा है। छवियां, जो कभी स्मृतियां सहेजने का माध्यम समझी जाती थीं, अब साझे पलों को वर्चुअल संसार में साझा करने के उद्देश्य से ली जाने लगी हैं। संवाद का दायरा घटा है तो लोग डिजिटल मेकअप के भी लती हो रहे हैं। तकलीफदेह है कि फिल्टर यानी तस्वीर को सुंदर बनाने की तकनीक का इस्तेमाल करने की आदत अवसाद के घेरे में भी ला रही है।

वस्तुतः तकनीकी सुविधाओं से मिला नकलीपन ओढ़ने का यह व्यवहार कई मोच पर पीड़ादायी भी बन गया है। लोगों पर आम आयोजनों में भी सज-धजकर पहुंचने का मानसिक दबाव बढ़ा है। हर पल चौकन्ने रहने की एक बाध्यता मिलने-बैठने की सहजता पर भारी पड़ रही है। हर पल को कैमरे में कैद करने की मनोवृत्ति ने सामाजिकता के भाव को ही बदल दिया है। फिल्टर्ड तस्वीरों ने अपने ही चेहरे की असली छवि भुला दी है। हर आयु वर्ग के लोग इस वर्चुअल निखार- संवार के जाल में फंस रहे हैं। कुछ समय पहले गूगल द्वारा किए गए एक वैश्विक अध्ययन में सामने आया था कि अच्छी सेल्फी लेने के लिए अमेरिका और भारत में फिल्टर इस्तेमाल सबसे ज्यादा होता है। अध्ययन के मुताबिक भारतीय महिलाएं अपनी तस्वीरों को सुंदर बनाने के लिए अधिक उत्साहित रहती हैं। इसके लिए वे कई फिल्टर एप और एडिटिंग माध्यमों का इस्तेमाल करती हैं।

विडंबना यह भी है कि मेल-मुलाकात की यादगार के तौर पर ली जा रही तस्वीरें वास्तव में याददाश्त को कमजोर करने लगी हैं। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार लोग सोचते हैं कि फोटो लेने उन्हें कुछ बेहतर याद रखने में मदद मिलेगी, लेकिन वास्तव में यह बिल्कुल विपरीत है। अध्ययनकर्ता जूलिया सोरोस का कहना है कि 'मैं यह नहीं कह रही हूं कि लोगों को कभी भी तस्वीरें नहीं लेनी चाहिए, लेकिन उन्हें ऐसा कब करना चाहिए इसके प्रति सजगता आवश्यक है।' बावजूद इसके सब कुछ दूसरों तक पहुंचाने की रुग्ण मानसिकता के चलते मृतक स्वजन के साथ तस्वीरें लेकर इंटरनेट मीडिया पर डालने के उदाहरण भी कम नहीं। सब कुछ स्क्रीन में सहेजने की आदत दुर्घटनाओं का भी कारण बन रही है। हार्वर्ड सहित अन्य प्रमुख विश्वविद्यालयों के शोध बताते हैं कि एक तस्वीर लेने की इच्छा उसी तस्वीर को इंटरनेट मीडिया मंचों पर साझा करने की इच्छा से और बढ़ जाती है। समझना कठिन नहीं कि अपने असली व्यक्तित्व के बजाय फिल्टर्ड छवियों में सुंदर दिखने की चाहत इस लत को और बढ़ाती है। मौजूदा दौर में तकनीक के सधे - सार्थक इस्तेमाल की समझ ही इस खुद आमंत्रित किए जा रहे अवसाद से हमें बचा सकती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

"भूत, वर्तमान का भविष्य है"

जब यह वाक्य पढ़ने में आया तो अजीब सा लगा पर जब उस पर विचार किया तो ठीक लगा।

हमेशा वर्तमान ही होता है।

यह वर्तमान स्मृति के रूप में भूतकाल होता है।

वर्तमान में यह स्मृति भूत-भविष्य को प्रभावित करता है।

वर्तमान में शांत, स्थिर, स्वस्थ रहने के बजाय हम भविष्य की योजनाएं बनाते रहते हैं।

भविष्य, भूतकाल की स्मृतियों से प्रभावित होता है इसलिए भूत, भविष्य को आकार देता रहता है।

हम भविष्य में सुखी होना चाहते हैं, पीछे होती हैं भूत की दुखद स्मृतियां। इसी तरह जीवन चलता रहता है।

हमेशा वर्तमान ही होता है यह ठीक से समझ में आ जाय तो वर्तमान में ही बने रहने की कोशिश होगी, बिना भूत की स्मृतियों को बीच में लाये। वे वर्तमान को भी प्रभावित करती हैं और भविष्य को भी।

कृष्ण ने योग बताये हैं ऐसे शिव ने ध्यान बताये हैं।

कृष्ण योगेश्वर हैं, शिव योगीश्वर हैं। एक जगह उन्होंने कहा है-

किसी चीज को ऐसे देखो जैसे पहली बार देख रहे हो।

हम चीजों को देखते आये हैं ऐसे ही लोगों को देखते आये हैं और उनकी अच्छाई बुराई से परिचित हैं।

इस तरह का परिचय नवीनता का अनुभव नहीं होने देता।

नवीनता तो तभी हो सकती है जब ऐसे देखा जाय जैसे पहली बार देखा जा रहा हो।

तब चित्त में नवीनता की वृत्ति सक्रिय हो जाती है। पहले का सब धुलता रहता है।

हर चीज नयी लगती है।क्रोध, प्रेम, घृणा, अभिमान।

एक बच्चा जब अभिमान करता प्रतीत हो तो उस पर हंसी आ सकती है। उसे पहली बार देखा जा सके तो किसी बड़ी उम्र वाले में भी यह बच्चे जैसा ही लगेगा।

गीता की दृष्टि से प्रकृति के गुण अपना कार्य करते हैं। उनमें पुराने पन का कोई काम नहीं। प्रकृति सतत नया नया सर्जन करती रहती है तब उसकी हर वृत्ति को नये रुप में देखा और अनुभव किया जा सकता है। ऐसा करके वर्तमान में रहा जा सकता है। तब हर चीज नयी होती है। एक ही नदी में दोबारा नहीं उतरा जा सकता। ₹तुम एक ही व्यक्ति को दोबारा नहीं देख सकते।

क्यों? क्यों कि जगत में कुछ भी स्थायी नहीं है। हर चीज नदी की भांति है-प्रवाहमान और प्रवाहमान। यदि तुम अतीत से मुक्त हो जाओ और तुम्हें वर्तमान को देखने की दृष्टि मिल जाए तो तुम अस्तित्व में प्रवेश कर जाओगे। वर्तमान द्वार है और सभी ध्यान किसी न किसी रुप में तुम्हें वर्तमान से जोड़ने की चेष्टा करते हैं ताकि तुम वर्तमान में जी सको।' दोष दृष्टि से देखने का कारण है अहंकार की दृष्टि से देखना। अहंकार भूतकाल की दृष्टि से देखता है। पहले की स्मृतियों को बनाये रखता है।

हर चीज को ऐसे देखा जाय जैसे पहली बार देखा जा रहा हो तो अहंकार निष्क्रिय होने लगता है।

अहंकार को माया कहा है मन।

मन तीनों कालों को एक साथ जीता है। सब मिला देता है।

भूतकाल इसलिए वर्तमान को भविष्य का आकार देने लगता है यदि अपने को अतीत से तोड़कर चला जाय तो केवल वर्तमान रहता है। वर्तमान सदा स्वस्थ होता है इसलिए जैसे जैसे क्षण व्यतीत होता है स्वस्थता अपना कार्य करती रहती है। ऐसे लोगों का व्यवहार स्थित प्रज्ञ जैसा होता है। वे शांत, संयत होते हैं।

ऐसे लोग देखे होंगे जो बिल्कुल पास खडे हैं फिर भी इतने जोर से बोलते हैं मानों सामनेवाला बहुत दूर खडा हो ऐसा क्यों होता है? बोलने वाला अपने आपे में नहीं है, अपने आपे से बाहर है।

वह उखडा हुआ है और सामने वाले को अपनी इच्छानुसार चलाना चाहता है। यह भी संभव है लेकिन संदेह होता है कि शायद उसकी बात को नहीं माना जायेगा इसलिए आवाज और अधिक ऊंची होती जाती है मानो सुननेवाला बहुत दूर खडा हो।

हम उसकी इस आदत से परेशान हो सकते हैं लेकिन उसे ऐसे देखें जैसे पहली बार देख रहे हैं, सुन रहे हैं तो कौतूहल होगा। बस की, ट्रेन की यात्रा में ऐसे मुसाफिर मिल जाते हैं जोर से बोलने वाले।तब सिवाय कौतूहल के और कुछ नहीं होता फिर भी इसकी कोशिश संभव है। यह एक विशिष्ट ध्यान है। हर बार जब उसे नये रुप में देखा जाता है तो उसकी स्मृति संग्रहित नहीं होती।सुखद स्वतंत्रता बनी रहती है।

हम ही अहंकार विमूढात्मा की तरह जीएं तो मुश्किल है।

अहंकार झूठ है। स्मृति का संग्राहक होने से सच लगता है।

अहंकार अर्थात मैं, वह मैं जिसे खोजने पर वह मिलता ही नहीं।

ज्ञानी कहते हैं -₹आत्मा (सेल्फ) वह है जिसमें मैं विचार पूरी तरह से अनुपस्थित है। उसे मौन कहा जाता है।₹ यह मैं झुठ है। अभी हम आत्मा (सतचित आनंद) की तरह कहां जी रहे हैं, हम झूठे मैं की तरह जी रहे हैं। वही मन-उसके विचार भी झूठे, विचार करने वाला भी झूठा।

फिर भी इतना उपद्रव है।

इसे मिटाया जा सकता है।

महर्षि के कथनानुसार चलें तो दिखाई देगा- सतत झूठे विचार उठ रहे हैं। किसे? झूठे मैं को।

झूठा मैं कौन है? झूठा मैं है ही नहीं। जो है वह है। इसे सहजावस्था कहा है। यह सहजावस्था रहस्य है। रहस्य मन के अर्थ में नहीं, आत्मा के अर्थ में। 'आत्मा सहज स्वाभाविक अस्तित्व है।' जो है वह बेहद सरल है, सहज है, स्वाभाविक है जैसे प्रकृति उसकी सहजता में अपना कार्य करती रहती है।

उसे रहस्य की तरह देखने जायेंगे तो उसका अंत ही नहीं है मगर उसके स्वाभाविक रुप में उसका सहज स्वीकार संभव है। इसी तरह आत्मा, परमात्मा, अस्तित्व, ब्रह्म जो कहें वह है और अपनी सहज स्वाभाविक अवस्था में है।

यही उसका रहस्य है। इसलिए सहजता से, सरलता से जीवन जीया जाय इतनी ही बात है।

या फिर हर क्षण उसे नूतन, नवीन रुप में अनुभव किया जाय इससे सबके गुण-दोष से दृष्टि हट जाती है और जीवन जीने योग्य होता है। एक आदमी जो अपने विचारों से, मानसिक दृश्यों से परेशान है वह हर बार उन्हें इस तरह देखे मानों पहली बार देख रहा हो तो उसकी जकडन समाप्त होने लगती है। उसका प्रभाव समाप्त होने लगता है।

इसलिए यह ध्यान करने जैसा है। जो लोग ऐसा कहते हैं कि ध्यान होने की चीज है, करने की नहीं, वे भूल जाते हैं कि करने के अभ्यास से होना घटित होता है जैसे अजपाजप। पहले करना पड़ता है बाद में स्वतः होने पर उसमें लीनता घटित होने लगती है, सहज ध्यानावस्था निर्मित होने लगती है। ऐसे लोग विज्ञान या अन्य किसी भी क्षेत्र में हों तो उनकी रचनात्मक शक्ति बडा योगदान कर सकती है। लोग फल तो चाहते हैं मगर कर्म की ओर ध्यान नहीं देते। कर्म है अभ्यास, साधना, तप। इसीलिए कृष्ण कहते हैं -

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

तुम अपना ध्यान कर्म पर दो अपने में रहकर, वर्तमान में रहकर। फलाकांक्षा भूत-भविष्य में ले जाती है, वर्तमान एकाग्रता को भंग करती है। शक्ति एक जगह केंद्रित हो तो बडे परिणाम आते हैं। बिखरी हुई हो तो क्या हो सकता है?

समस्त सनातन धर्म प्रेमी परिवारो से विनम्र आग्रह है कि गर्वित हिन्दू चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी संवत 2082 (30 मार्च 2025) दिन रविवार को है। हिन्दू सनातन धर्म के अनुसार नववर्ष है, उस दिन यह कार्य अवश्य करें

1. पुरुष सफेद वस्त्र व महिलाए पीला या भगवा वस्त्र पहनें,
2. मस्तिष्क पर उस दिन तिलक अवश्य लगायें,
3. घर पर मिष्ठान्न बनायें,
4. घर की छत पर भगवा झंडा अवश्य लगायें,
5. रात्रि को घर पर घर के बाहर दीप अवश्य जलायें,
6. घर के द्वार को सजाएँ,
7. रंगोली बनाएँ,
8. फूल और पत्तों के तोरण लगाएँ,
9. नववर्ष की शुभकामनाएँ देवें

हम सदा अशांत रहते हैं।

हम शांत होने/रहने की मालकियत भी नहीं रखते और सोचते हैं कि पूरे जीवन/जन्म को अपनी आकांक्षा के अनुकूल ढाल लें, जबकि मन की एक छोटी-सी तरंग भी हम सम्हाल नहीं पाते। यदि हम चौबीस घंटे भी अपने मन में, 'यह विचार न आए' या 'उस विचार' को भी आने से रोक नहीं सकते, तो यह बहुत बड़ी गुलामी है। जब हम अभी और यहीं ऐसी क्षमता नहीं रखते तो जीवन के अंतिम क्षण में इतनी मालकियत कैसे पैदा कर लेंगें? इसीलिए अभी का क्षण हमारे हाथ में है, जिससे पूरे जीवन की दिशा/दशा को निर्धारित करना अपने हाथ में होगा। लेकिन हम आज़ के क्षण को कल पर टाले जा रहें हैं कि 'जब प्यास लगेगी, तब कुंआ खोदेंगे।' यदि अभी कोई निर्णय/संकल्प नहीं है, तो आखिरी क्षण में कैसे सम्हाल सकते हैं? यदि सम्हालने की ही ताकत है, तो अभी सम्हालने में कोई तकलीफ नहीं है। अभी का क्षण हमारे हाथ में है जागरूक होना है तो

शिवजी के 5 रूप

1. महादेव – संहार और सृजन के देव, त्रिशूलधारी भोलेनाथ।
2. नटराज – तांडव नृत्य के स्वामी, सृष्टि और संहार के प्रतीक।
3. अर्धनारीश्वर – शिव और शक्ति का संगम, स्त्री-पुरुष समानता का प्रतीक।
4. पशुपतिनाथ – करुणामय, समस्त जीवों के रक्षक।
5. भैरव – रौद्र रूप, अधर्म का नाश करने वाले कालभैरव।

पापमोचिनी एकादशी

हर साल चैत्र माह में पापमोचनी एकादशी मनाई जाती है। यह पर्व चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है। पापमोचनी एकादशी के दिन जगत के पालनहार भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है। साथ ही उनके निमित्त एकादशी का व्रत रखा जाता है। इस व्रत को करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होती है। साथ ही जीवन में सुखों का आगमन होता है।

विष्णु पुराण में वर्णित है कि एकादशी व्रत करने से व्यक्ति द्वारा जाने-अनजाने में किए पाप नष्ट हो जाते हैं। साथ ही साधक पर भगवान विष्णु की कृपा बरसती है। उनकी कृपा से साधक को पृथ्वी लोक पर सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

पापमोचनी एकादशी शुभ मुहूर्त वैदिक पंचांग के अनुसार, चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 25 मार्च को सुबह 05 बजकर 05 मिनट पर शुरू होगी और 26 मार्च को देर रात 03 बजकर 45 मिनट पर समाप्त होगी। सनातन धर्म में उदया तिथि मान्य है। इसके लिए 25 मार्च को पापमोचनी एकादशी मनाई जाएगी। वहीं, वैष्णव जन 26 मार्च को पापमोचनी एकादशी मनाएंगे।

पापमोचनी एकादशी पारण समय पापमोचनी एकादशी का पारण 26 मार्च के दिन किया जाएगा। 26 मार्च को दोपहर 01 बजकर 41 मिनट से लेकर शाम 04 बजकर 08 मिनट के मध्य साधक स्नान-ध्यान कर विधि-विधान से लक्ष्मी नारायण की पूजा करें। इसके बाद अन्न का दान कर एकादशी का पारण करें।

पापमोचनी एकादशी शुभ योग ज्योतिषियों की मानें तो पापमोचनी एकादशी पर दुर्लभ शिववास योग का निर्माण हो रहा है। इसके साथ ही शिव और सिद्ध योग का भी संयोग बन रहा है। इन योग में भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा करने से साधक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। साथ ही सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति मिलेगी।

शिवोहम' और 'अहम्ब्रह्मास्मि' दोनों ही आत्मा के लिए कहे गए श्लोक हैं.

'शिवोहम' का मतलब है कि "मैं ही शुभ, पवित्र, और मंगल हूँ". वहीं, 'अहम् ब्रह्मास्मि' का मतलब है कि "मैं ब्रह्मांड में हूँ".

'शिवोहम' और 'अहम् ब्रह्मास्मि' के बारे में ज़्यादा जानकारी:

'शिवोहम' का संधिच्छेद करने पर 'शिव: + अहम' मिलता है.

'शिवोहम' में समय का भान है, जबकि 'अहम् ब्रह्मास्मि' में क्षेत्र का भान है.

कहा जाता है कि शून्य की प्राप्ति के लिए एक का संक्रमण दूसरे में और दूसरे का संक्रमण पहले में करते हुए, साधक समय और क्षेत्र दोनों के परे चला जाता है.

चूंकि साधक के लिए दोनों ज़रूरी हैं, इसलिए एक के साधन के बाद दूसरा स्वयंमेव सहज हो जाता है.

इसीलिए लोग दोनों को एक ही समझते हैं, लेकिन चित रूप में बहुत अंतर है.

शिव जी की आराधना के लिए ये मंत्र भी जपे जाते हैं: ॐ नमः शिवाय, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः, ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात.

धर्म महत्व :- किस देवता का है क्या कार्य है?

सनातन धर्म में अनेक देवताओं का उल्लेख है उन देवताओ को किसी नाम विशेष से जाना जाता है। देवताओं का यह नामकरण उनके कार्य और गुण-धर्म के आधार पर किया गया है। हम यहाँ कुछ प्रमुख देवताओं के विषय में जाकारी प्राप्त करेगें।

ब्रह्मा - ब्रह्मा को जन्म देने वाला कहा गया है।

विष्णु - विष्णु को पालन करने वाला कहा गया है।

महेश - महेश को संसार से ले जाने वाला कहा गया है।

त्रिमूर्ति - भगवान ब्रह्मा-सरस्वती (सर्जन तथा ज्ञान), विष्णु-लक्ष्मी (पालन तथा साधन) और शिव-पार्वती (विसर्जन तथा शक्ति)। कार्य विभाजन अनुसार पत्नियां ही पतियों की शक्तियां हैं।

इंद्र - बारिश और विद्युत को संचालित करते हैं। प्रत्येक मन्वंतर में एक इंद्र हुए हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं- यज्न, विपस्चित, शीबि, विधु, मनोजव, पुरंदर, बाली, अद्भुत, शांति, विश, रितुधाम, देवास्पति और सुचि।

अग्नि - अग्नि का दर्जा इन्द्र से दूसरे स्थान पर है। देवताओं को दी जाने वाली सभी आहूतियां अग्नि के द्वारा ही देवताओं को प्राप्त होती हैं। बहुत सी ऐसी आत्माएं है जिनका शरीर अग्निरूप में है, प्रकाश रूप में नहीं।

सूर्य - प्रत्यक्ष सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है तो इस नाम से एक देवता भी हैं। दोनों ही देवता हैं। कर्ण सूर्यपुत्र ही था। सूर्य का कार्य मुख्य सचिव जैसा है। सूर्यदेव जगत के समस्त प्राणियों को जीवनदान देते हैं।

वायु - वायु को पवनदेव भी कहा जाता है। वे सर्वव्यापक हैं। उनके बगैर एक पत्ता तक नहीं हिल सकता और बिना वायु के सृष्टि का समस्त जीवन

क्षणभर में नष्ट हो जाएगा। पवनदेव के अधीन रहती है जगत की समस्त वायु।

वरुण - वरुणदेव का जल जगत पर शासन है। उनकी गणना देवों और दैत्यों दोनों में की जाती है। वरुण को बर्फ के रूप में रिजर्व स्टॉक रखना पड़ता है और बादल के रूप में सभी जगहों पर आपूर्ति भी करना पड़ती है।

यमराज - यमराज सृष्टि में मृत्यु के विभागाध्यक्ष हैं। सृष्टि के प्राणियों के भौतिक शरीरों के नष्ट हो जाने के बाद उनकी आत्माओं को उचित स्थान पर पहुंचाने और शरीर के हिस्सों को पांचों तत्व में विलीन कर देते हैं। वे मृत्यु के देवता हैं।

कुबेर - कुबेर धन के अधिपति और देवताओं के कोषाध्यक्ष हैं।

मित्र - मित्र देव और देवगणों के बीच संपर्क का कार्य करते हैं। वे ईमानदारी, मित्रता तथा व्यावहारिक संबंधों के प्रतीक देवता हैं।

कामदेव - कामदेव और रति सृष्टि में समस्त प्रजनन क्रिया के निदेशक हैं। उनके बिना सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती। पौराणिक कथानुसार कामदेव का शरीर भगवान शिव ने भस्म कर दिया था अतः उन्हें अनंग (बिना शरीर) भी कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि काम एक भाव मात्र है जिसका भौतिक वजूद नहीं होता।

अदिति और दिति - अदिति और दिति को भूत, भविष्य, चेतना तथा उपजाऊपन की देवी माना जाता है।

धर्मराज और चित्रगुप्त - संसार के लेखा-जोखा कार्यालय को संभालते हैं और यमराज, स्वर्ग तथा नरक के मुख्यालयों में तालमेल भी कराते रहते हैं।

अर्यमा या अर्यमन - यह आदित्यों में से एक हैं और देह छोड़ चुकी आत्माओं के अधिपति हैं अर्थात पितरों के देव।

गणेश - शिवपुत्र गणेशजी को देवगणों का अधिपति नियुक्त किया गया है। वे बुद्धिमत्ता और समृद्धि के देवता हैं। विघ्ननाशक की ऋद्धि और सिद्धि नामक दो पत्नियां हैं।

कार्तिकेय - कार्तिकेय वीरता के देव हैं तथा वे देवताओं के सेनापति हैं। उनका एक नाम स्कंद भी है। उनका वाहन मोर है तथा वे भगवान शिव के पुत्र हैं। दक्षिण भारत में उनकी पूजा का प्रचलन है। इराक, सीरिया आदि जगहों पर रह रहे यजीदियों को उनकी ही कौम का माना जाता है, जो आज दरबदर हैं।

देवऋषि नारद - नारद देवताओं के ऋषि हैं तथा चिरंजीवी हैं। वे तीनों लोकों में विचरने में समर्थ हैं। वे देवताओं के संदेशवाहक और गुप्तचर हैं। सृष्टि में घटित होने वाली सभी घटनाओं की जानकारी देवऋषि नारद के पास होती है।

हनुमान - देवताओं में सबसे शक्तिशाली देव रामदूत हनुमानजी अभी भी सशरीर हैं। उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त है। वे पवनदेव के पुत्र हैं। बुद्धि और बल देने वाले देवता हैं। उनका नाम मात्र लेने से सभी तरह की बुरी शक्तियां और संकटों का खात्मा हो जाता है।

देवताओं के नाम का अर्थ - ईश्वर का उनके गुणों के आधार पर देववाची नामकरण किया गया है, जैसे- अग्नि- तेजस्वी। प्रजापति- प्रजा का पालन करने वाला। इन्द्र- ऐश्वर्यवान।

ब्रह्मा- बनाने वाला। विष्णु- व्यापक। रुद्र- भयंकर। शिव- कल्याण कारक। मातरिश्वा- अत्यंत बलवान। वायु- वेगवान। आदित्य- अविनाशी। मित्र- मित्रता रखने वाला। वरुण- ग्रहण करने योग्य। अर्यमा- न्यायवान। सविता- उत्पादक। कुबेर- व्यापक। वसु- सब में बसने वाला। चंद्र- आनंद देने वाला।

मंगल- कल्याणकारी। बुध- ज्ञानस्वरूप। बृहस्पति- समस्त ब्रह्माण्डों का स्वामी। शुक्र- पवित्र। शनिश्चर- सहज में प्राप्त होने वाला। राहु- निर्लिप्त। केतु- निर्दोष। निरंजन- कामनारहित। गणेश- प्रजा का स्वामी। धर्मराज- धर्म का स्वामी। यम- फलदाता। काल- समय रूप। शेष- उत्पत्ति और प्रलय से बचा हुआ।

शंकर- कल्याण करने वाला।

नामजप की अद्भुत महिमा

भगवान के नाम जप की इतनी महिमा है कि रोते तो दोनों हैं, नाम जपने वाले भी, और न जपने वाले भी पर कारण में बड़ा अंतर है, न जपने वाला रोता है कि अगर नाम जप और अधिक कर लिया होता तो इतना कष्ट न उठाना पड़ता। और खूब नाम जपने वाला रोता है कि जब थोड़ा बहुत नाम जपा था, उसका इतना फल मिल रहा है, अगर भगवान का नाम और जप लेता तो क्या न मिल जाता..??

नामजप की तो इतनी महिमा है, कि यह बैठकर भी करना है और चलते फिरते भी करते रहना है, विशेष बात यह है कि भगवान नाम जप करते समय के साथ में अपने उन ₹एक₹ इष्ट के मुखमंडल, माने चेहरे का ध्यान करते रहें..

जैसे कि आप अपने दो दिन के बच्चे को गोद में लेकर, लाखों की भीड़ में चलते हों। चलते भी हो, उस बच्चे का ध्यान भी रहता है, वैसे ही नाम भी मुख पर चलता रहे, रूप भी ध्यान में रहे। बस इतनी ही विधि है अब मन नाम छोड़कर भागे तो भागे, परेशान नहीं होना, बस फिर पकड़ लाओ। नाम भूला, फिर याद आया, तो भूलने पर रोओ मत कि हाय भूल गया, बल्कि याद आने का धन्यवाद करो कि याद आ गया।

समझो की भगवान स्वयं ही तुम्हें याद कर रहे हैं, तभी तो तुम्हें नाम पुनः याद आया।

जय सियाराम जय जय सियाराम

इच्छापूर्ति विश्वास से

जीवन जितना सादा होगा तनाव उतना आधा होगा। संबंध ही एक ऐसा वृक्ष है, जो भावनाओं के सामने झुक जाता है, स्नेह के साथ संबंध अंकुरित होता है और शब्दों के द्वारा टूट जाता है। आशा सदा दुख का कारण बनी है, चाहे वो अपनों से हो या किसी और से। हमारे साथ हमें स्वयं चलना होगा, किसी से आशा करना सदा से दुखदाई रहा है। विश्वास रखें कि हमारा जीवन बहुत भव्य है और एक दिन यही विश्वास इसे वास्तविकता बना देगा। जीवन कभी भी सरल नहीं है, लेकिन क्या सही है और क्या गलत, हमारे मन और विवेक के द्वारा जाना जाता है? कितनी भी त्रुटि करें, कितनी बार अपयश हुए, कितनी बार गिरे लेकिन सबसे विशेष बात यह है कि हमने उस समय कैसे प्रतिक्रिया दी। जीवन में अनैतिकता हमें अनैतिक मार्ग पर चलने का लाइसेंस नहीं देती, सदा याद रखना है कि जीवन कुछ बिंदुओं पर कठिन हो सकता है, लेकिन भाग्य हमारे द्वारा पहने जाने वाले जूतों से नहीं बल्कि हमारे द्वारा उठाए गए कदमों से बनता है। किससे कहें कि छत की मुंडेर से गिर पड़े हमने ही इच्छापूर्ति में स्वयं पतंग उड़ाई थी।

हम बदलें तो दुनिया बदले

आओ रिश्ते, आतिथ्य सत्कार मज़बूती से निभाएं

बात सह गए तो रिश्ते रह गए – बात कह गए तो रिश्ते ढह गए

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वर्ष 1959 में रिलीज हुई पैगाम फिल्म में गायकलेखक कवि प्रदीप का गीत इंसान को इंसान से हो भाईचारा, यही पैगाम हमारा, यही पैगाम हमारा गीत को इंसानी रिश्ते मजबूत करने के परिपेक्ष में खासकर युवाओं को सुनना चाहिए क्योंकि वह हमारे भविष्य हैं क्योंकि खूबसूरत अनमोल पृथ्वी पर भारत देश की हजारों वर्ष से यह अनमोल वसीयत रही है कि हमारी हमारे पूर्वजों सहित हम अपने निजी और सार्वजनिक रिश्तो को निभाने में वैश्विक स्तरपर सर्वश्रेष्ठ रहे हैं। मेरा मानना है कि हमारी अनेक विरासतों में से एक परिवार, समाज, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय समुदाय में खूबसूरत सकारात्मक रिश्ते कायम रखने में भारत को महारत हासिल है। हम भारत वासी संबंधों को कायम रखने में आने वाली बड़ी से बड़ी समस्याओं को शांतिप्रिय, सकारात्मक वाणी, व्यवहार, हृदय से समाधान की ओर ले जाते हैं जो हमारे लिए वैश्विक स्तरपर प्रतिष्ठा का प्रतीक है परंतु आज के बदलते परिपेक्ष में रिश्ते निभाने के अनेक गुणों में सहनशीलता, सहिष्णुता, उद्धारदिली माफ़ी का जज्बा, छोटा देखने कीदरियादिली में अपेक्षाकृत पायदान से नीचे घसने की ओर बढ़ रहे हैं, जिसे तात्कालिक रेखांकित करना जरूरी है इसलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से आओ रिश्ते, आतिथ्य सत्कार मजबूती से निभाने पर गंभीरता से चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम वर्तमान परिपेक्ष में सिकुड़ते परिवारों, टूटते रिश्तों, बढ़ती वैचारिक खाई की करें तो, आजकल जहां देखो वहीं छोटी छाटी बातों पर टकराव और विवाद नजर आते हैं। फिर चाहे स्थान हमारा घर हो, ऑफिस या फिर व्यापारिक क्षेत्र, कारण मतभिन्नता हैं। जिसके चलते सास बहू के बीच खींचा तानी, पति पत्नी में बहस, पिता पुत्र का झगड़ा और चाहे बॉस एम्प्लौयी के बीच झड़प होती है। कई बार इन समस्याओं से परेशान होकर हम रत्न धारण कर लेते हैं, लेकिन सिर्फ रत्न पहनने से या कोई जप करने मात्र से वे संबंध नही सुधर सकते। हमारे संबंध अपने आचरण और अपने व्यवहार में परिवर्तन से सुधरेंगे, तभी हम संबंधों में मधुरता ला पाएंगे, याने बात सह गए तो रिश्ते रह गए बात कह गए तो रिश्ते ढह गए।

साथियों बात अगर हम रिश्तो को गंभीरता से संभालने जोड़ने की करें तो सहनशीलता सहिष्णुता और त्याग का मंत्र अपनाना होगा। यदि हम पीड़ित है तो हमें स्वयं से परेशानियां होती हैं, जानबूझकर गलतियां दोहराई जाती है।जिसका उपाय स्वयं से मैत्री करें, आत्मनिरीक्षण करें स्वयं की गलतियों और खूबीयों को पहचान कर जातक स्वयं की उन्नति कर सकता है। पीड़ित होने से कुटुंब परिवार समाज में विवाद बने रहते हैं। बात बात पर कलह की स्थिति बनती रहती है। इससे उबरने के उपाय हैं, अहंकार दबाकर, सबसे विनम्रता से पेश आएं। छोटों से प्यार करें, बराबर वालों से मित्रता और बड़ों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करें।संस्कृति के श्लोक में भी आया है कि, अरावप्युचितं कार्यमातिथ्यं गृहमागते। छेत्तुः पार्श्वगताच्छायां नोपसंहरते द्रुमः॥

अर्थ-शत्रु भी यदि अपने घर पर आ जाए तो उसका भी उचित आतिथ्य सत्कार करना चाहिए, जैसे वृक्ष अपने काटने वाले से भी अपनी छाया को कभी नहीं हटाता है।

साथियों बात अगर हम रिश्तो में पड़ोसियों की करें तो, कहते हैं कि पहला सगा पड़ोसी होता है, क्योंकि जब भी व्यक्ति पर कोई मुसीबत आती है तो उसके सगे-संबंधी व रिश्तेदार तो बाद में पहुंचते हैं, लेकिन पड़ोसी तुरंत मदद के लिए आता है। इसलिए कहा जाता है कि हर व्यक्ति को अपने पड़ोसियों से अच्छे संबंध बनाकर रखने चाहिए। लेकिन आज के समय में हम खुद में कुछ इस कदर व्यस्त हो गए हैं कि हमें अपने आसपास रहने वाले लोगों का ख्याल ही नहीं आता। यहां तक कि जब भी रिश्तों की बात आती है तो हम पति, बच्चे या परिवार को ही महत्ता देते हैं। पड़ोसियों के साथ आपसी संबंधों को मधुर बनाने के बारे में शायद ही कोई सोचता हो। हालांकि उनके साथ भी रिश्ता उतना ही महत्वपूर्ण होता है।

साथियों बात अगर हम रिश्तो को समय देने की करें तो, आज के समय में किसी भी रिश्ते के कमजोर होने की एक मुख्य वजह होती है समय का अभाव। खासतौर से, शहरों में तो बहुत से लोगों को यह तक पता नहीं होता कि उनके पड़ोस में कौन रहता है। इसलिए पड़ोसियों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने के लिए आप थोड़ा समय निकालें। अगर आप कुछ खास व अलग बनाते हैं, तो अपने पड़ोसियों के साथ शेयर करें। इस तरह आपको उन्हें जानने का मौका मिलेगा। इसके अलावा आप चाहें तो उनके साथ एक मार्निंग वॉक का रूटीन भी बना सकतें हैं। गॉसिप करते-करते आपकी वॉक भी हो जाएगी। याद रखें कि किसी भी रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए थोड़ा समय निकालने की जरूरत होती है।

साथियों बात अगर हम रिश्तो में कर्मचारियों और बॉस की करें तो, ऑफिस में कर्मचारी और बॉस के बीच मधुर संबंध होना सभी पक्षों के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, अगर हम अपने बॉस से अच्छे कामकाजी रिश्ते बनाकर रखते हैं तो इसका सकारात्मक प्रभाव हमारे करियर ग्रोथ पर पड़ता है।बॉस से हेल्दी रिलेशन बनाने का यह मतलब कतई नहीं है कि हम इस बात का फायदा उठाएं, हमेशा ध्यान रखें कि हम अच्छे कर्मचारी तभी कहलाएंगे जब हम अपनी सीमा में रहकर काम करेंगे, काम के प्रति सजग रहेंगे. वहीं बॉस के लिए भी ये जरूरी है कि वो भी अपने कर्मचारी के साथ अपने रिश्ते को हेल्दी रखें। दोनों के बीच मधुर संबंध हमारे वर्क प्लेस के लिए फायदेमंद सिद्ध होगा साथ ही इसके सकारात्मक प्रभाव पड़ेंगे।

साथियों बात अगर हम रिश्तो में वैवाहिक जीवन की करें तो, कुछ लोगों के वैवाहिक जीवन में आये दिन जरा जरा सी बातों को लेकर अनबन होती रहती है ।एक साथ रहने, एक दूसरे का हमेशा साथ देने का वादा करने वाले पति पत्नी जब मौका मिले छोटे बच्चों की तरह लड़ाई झगड़े करने लगते हैं ।कभी कभी तो इनका विवाद तलाक तक पहुंच पाता है, और खुशहाली से भरा पूरा परिवार बिखर जाता है।

साथियों बात अगर हम रिश्तो को समझने की करें तो, रिश्ते को बदलने से समस्या का समाधान जरूरी नहीं है। देर-सबेर हम किसी भी अन्य रिश्ते में एक ही स्थिति में होंगे, क्योंकि सभी रिश्तों में सबसे महत्वपूर्ण है हमारी अपनी भावनाओं की समझ, हमारा अपना मन, स्थिर होने की हमारी अपनी क्षमता, और देखने की हमारी अपनी क्षमता चीजों को व्यापक दृष्टिकोण से। और इसके लिए ज्ञान महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ज्ञान ही है जो हमको जीवन में शक्ति, स्थिरता और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। अधिकांश समय, हम एक संपूर्ण स्वस्थ संबंध के लिए कहीं और देखते हैं; बहुत कम लोग अपने भीतर देखते हैं, जहां से वे संबंधित हैं। एक अच्छा रिश्ता बनाने के लिए, हमको सबसे पहले यह देखना होगा हम खुद से कैसे संबंधित हैं। हमको अंदर देखने की जरूरत है।

साथियों दूसरों को देने के लिए कुछ जगह छोड़ दो रिश्ते का मतलब समायोजन है, यह दे रहा है। लेकिन साथ ही दूसरे पार्टनर को देने के लिए कुछ जगह छोड़ दें। इसके लिए थोड़े कौशल की आवश्यकता होती है - दूसरे को भी बिना मांगे योगदान देने के लिए। अगर आप डिमांड करेंगे तो रिश्ता ज्यादा दिन तक नहीं चलने वाला। मांग और दोष प्रेम को नष्ट कर देते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि

अरावप्युचितं कार्यमातिथ्यं गृहमागते।
छेत्तुः पार्श्वगताच्छायां नोपसंहरते द्रुमः।।

आओ रिश्ते, आतिथ्य सत्कार मजबूती से निभाए, बात सह गए तो रिश्ते रह गए-बात कह गए तो रिश्ते ढह गए!! कुछ कह गए कुछ सह गए कुछ कहते कहते रह गए मैं सही तुम गलत के खेला में न जाने कितने रिश्ते ढह गए यह सराहनीय विचार है।

पार्यावरण पाठशाला - "हर जगह हरियाली का सपना" : प्रदीप त्रिपाठी का पर्यावरण संरक्षण अभियान - डॉ. अंकुर शरण : (अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस विशेष)

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के अवसर पर, डॉ. अंकुर शरण (पार्यावरण पाठशाला) ने पर्यावरण संरक्षण और वनीकरण के क्षेत्र में क्रांति लाने वाले श्री प्रदीप त्रिपाठी से विशेष बातचीत की। उन्होंने अब तक 160 से अधिक शहरी वनों का निर्माण, 25 लाख से अधिक स्थानीय प्रजातियों के पौधों का रोपण, और 50+ लैंडफिल व डंपिंग याड्र्स को हरित क्षेत्रों में परिवर्तित किया है। उनके प्रयासों ने न केवल जैव विविधता को पुनर्जीवित किया है, बल्कि शहरी क्षेत्रों में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाने और जल संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने का संकल्प

प्रदीप त्रिपाठी बचपन से ही प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता रखते थे। उन्होंने देखा कि कैसे बढ़ता शहरीकरण और औद्योगीकरण जंगलों को समाप्त कर रहा है और शहरों में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इसी चिंता ने उन्हें ग्रीन यात्रा की शुरुआत करने के लिए प्रेरित किया। इस अभियान के तहत उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, शहरी वनीकरण, और जैव विविधता को पुनर्जीवित करने के लिए अनेक प्रयास किए हैं।

डंपिंग यार्ड से हरियाली तक का सफर

श्री त्रिपाठी और उनकी टीम ने कई ऐसे क्षेत्र पुनर्जीवित किए हैं, जिन्हें पहले बेकार माना जाता था। डंपिंग यार्ड, लैंडफिल साइट्स और बंजर भूमि को उपजाऊ बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इस प्रक्रिया में उन्होंने मिट्टी को पुनर्जीवित करने के लिए जैविक खाद और प्राकृतिक उपचार विधियों का उपयोग किया। इसके साथ ही, उन्होंने स्थानीय प्रशासन, उद्योगों और नागरिकों को इस मिशन से जोड़ने के लिए विभिन्न जागरूकता अभियानों और कार्यशालाओं का आयोजन किया।

शहरीकरण के बीच हरियाली कैसे बढ़ाएं?

बढ़ते शहरीकरण के बीच हरियाली बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है, लेकिन श्री त्रिपाठी का मानना है कि इसे संभव बनाया जा सकता है। उन्होंने ग्रीन रूफ, वर्टिकल गार्डन, सड़क किनारे वृक्षारोपण, और सामुदायिक वन को शहरी विकास का अभिन्न अंग बनाने पर जोर दिया। इसके अलावा, वे कॉर्पोरेट्स को उनके ESG (पर्यावरणीय, सामाजिक और प्रशासनिक) लक्ष्यों के तहत वृक्षारोपण और वनीकरण गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

मियावाकी पद्धति से उगाए गए घने वन

उनके कुछ सबसे प्रभावी प्रोजेक्ट्स में से एक मियावाकी शहरी वन हैं, जिनमें जापानी तकनीक का उपयोग करके घने, तेज़ी से बढ़ने वाले जंगल बनाए जाते हैं। यह पद्धति न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करती है बल्कि शहरी इलाकों में ऑक्सीजन की उपलब्धता भी बढ़ाती है। दिल्ली-एनसीआर, मुंबई, बेंगलुरु और पुणे में ऐसे कई वनों का निर्माण किया गया है, जो अब स्थानीय जैव विविधता के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल बन चुके हैं।

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस पर संदेश

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस पर, श्री प्रदीप त्रिपाठी सभी नागरिकों, संगठनों और नीति निर्माताओं से अपील करते हैं कि वे वनों के पुनर्जागरण, जैव विविधता के संरक्षण और एक हरित भविष्य की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएं। उनका कहना है कि, ₹वन हमारे ग्रह के फेफड़े हैं, यदि हम इन्हें नहीं बचाएंगे, तो हमारा भविष्य भी असुरक्षित हो जाएगा।₹ वे सभी से अनुरोध करते हैं कि वे पौधे लगाएं, जंगलों की रक्षा करें और हर जगह हरियाली फैलाने में योगदान दें। श्री प्रदीप त्रिपाठी का "ग्रीन ओएसिस" का सपना केवल एक कल्पना नहीं, बल्कि एक आंदोलन है। इस अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस पर हम भी इस हरित क्रांति का हिस्सा बनें और अपनी धरती को फिर से हरा-भरा बनाने का संकल्प लें। एक पौधा, एक जंगल और एक स्वस्थ भविष्य—इसी में हमारी पृथ्वी की सुरक्षा है।

indiangreenbuddy@gmail.com

राष्ट्रपति का ओडिशा आगमन: हवाई अड्डे पर गर्मजोशी से स्वागत

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सोमवार को निर्धारित समय पर वायुसेना के विशेष विमान से भुवनेश्वर के बीजू पटनायक हवाई अड्डे पर पहुंचीं। हवाई अड्डे पर उनका भव्य स्वागत किया गया।बाद में राष्ट्रपति हेलीकॉप्टर से नयागढ़ के लिए रवाना हुए। वहां पहुंचने के बाद राष्ट्रपति नयागढ़ के कालियापल्ली में विश्वावसु समुदाय द्वारा आयोजित महायज्ञ में भाग लेंगे।वहां से वे कोंटिलो जाएंगे और भगवान नीलमाधव के दर्शन करेंगे। सुबह 6 बजे भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर पहुंचेंगे और राजभवन के लिए प्रस्थान करेंगे। वह रात वहीं बितायेगा। राष्ट्रपति का मंगलवार सुबह 9 बजे दिल्ली लौटने का कार्यक्रम है। राष्ट्रपति की यात्रा के लिए सुरक्षा कड़ी कर दी गई है।

भुवनेश्वर मेट्रो रेल परियोजना और 400 इलेक्ट्रिक बसों को केंद्र सरकार का समर्थन मिलेगा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने रविवार को ओडिशा में प्रमुख शहरी विकास पहलों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के कार्यान्वयन और प्रगति की समीक्षा की।समीक्षा बैठक में केंद्रीय मंत्री ने क्षेत्रीय आर्थिक विकास को गति देने के लिए भुवनेश्वर, कटक, पुरी और खोरधा को विकास केन्द्रों के रूप में विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।बैठक में ग्रेटर भुवनेश्वर क्षेत्र के हिस्से के रूप में एक नए शहर के विकास पर चर्चा की गई। केंद्रीय मंत्री ने परियोजना के लिए समर्थन का वचन दिया तथा राज्य सरकार को 15वें वित्त आयोग और शहरी चुनौती निधि के अंतर्गत वित्तपोषण के अवसर तलाशने की सलाह दी।

टिकाऊ शहरी गतिशीलता को बढ़ावा देने के लिए, केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री ई-बस सेवा योजना के तहत ओडिशा के लिए 400 इलेक्ट्रिक बसों की तैनाती को मंजूरी दी है। केंद्रीय मंत्री ने प्रस्तावित भुवनेश्वर मेट्रो परियोजना की भी समीक्षा की और शहर की बढ़ती सार्वजनिक परिवहन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के पूर्ण समर्थन की बात दोहराई।

ऐतिहासिक आदेश का अवहेलना के कारण जगन्नाथ का रथ बनायेंगे भक्त

सरायकेला में उपेक्षा का शिकार जगन्नाथ की संस्कृति !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, आजाद भारत में ओडिशा में विलय हुए एक ओडिया देशी रियासत सरायकेला जो एक राजनीतिक घटना क्रम का शिकार होकर कभी 52 वरष बिहार फिर 24 वर्ष पुनः झारखंड में रहने के वाबजूद ओड़िया लोगो के देवता को भोग नहीं लगे , रथयात्रा में सरकारी सहायता विलय दस्तावेज वर्णित तथ्यों के अनुरूप न मिले तो आप इसे क्या समझेंगे ? इन सबके बावजूद लोग आज भी जगन्नाथ महाप्रभु के रथ को स्वयं बनाने हेतु आगे आये है तों निश्चित रूप से झारखंड में ओडिया भाषा संस्कृति की तरह उनके देवता भी उपेक्षित है !

जगन्नाथ सेवा समिति ने इस दिशा में आज महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन कर रथ निर्माण हेतु प्रस्ताव पारित किया ।

सरायकेला जगन्नाथ मंदिर प्रांगण स्थित जगन्नाथ भवन कार्यालय में जगन्नाथ संस्कृति संरक्षण की सेवा में लगे श्री जगन्नाथ सेवा समिति का एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई ।इस बैठक में मुख्य रूप से तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए । इस वर्ष रथयात्रा के लिए नया रथ निर्माण पर चर्चा करते हुए ओडिशा पुरी के रथ निर्माण कारीगरों से संपर्क कर रथ के सुचारू रूप से यात्रा के लिए पथ के निरीक्षण कर जल्द से जल्द निर्माण कार्य को शुरू करने की निर्णय लिया गया और प्रस्ताव संख्या ।इसके साथ जगन्नाथ मन्दिर संलग्न जगन्नाथ भवन की रथयात्रा

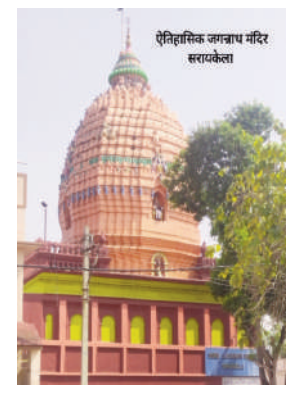

पूर्व चारदीवारी एवं सौंदर्यीकरण कार्य के लिए संभावित स्रोतों पर भी विचार किया गया। अन्तिम प्रस्ताव सरायकेला जगन्नाथ मंदिर को जिला पर्यटन संवर्धन समिति द्वारा पर्यटन स्थल हेतु राज्य पर्यटन विभाग को भेजी गई अनुशंसा में पर्यटन स्थल घोषणा में विलंब पर पुन इस विषय को प्रशासन के ध्यान में का निर्णय लिया गया। अंत में इस बैठक में पिछले व्यवस्थाओं पर भी समीक्षा किया गया एवं कमियों पर ध्यान देते हुए भविष्य में मंदिर व्यवस्था में और भी ज्यादा सुधार करने पर जोर दिया गया।

बैठक में श्री जगन्नाथ सेवा समिति के अध्यक्ष राजा सिंहदेव, उपाध्यक्ष सानंद आचार्य, उपाध्यक्ष सुदीप पटनायक, सचिव पार्थसारथी दाश उनके मार्गदर्शक मंडली के बादल दुवे, चन्द्रशेखर कर, चित्रा पटनायक, चीरंजीवी महापात्र, प्रशान्त महापात्र, गणेश सतपथी, परशुराम कवि, सुमित महापात्र, दिपेश रथ, सीपु मंहान्ती, दीपक मोदक एवं मुख्य पुजारी ब्रम्हानंद महापात्र सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

बैंगलुरू कोरमंगला महिला मंडल गुप दशा माता पुजा अर्चना में भाग लेती हुई पिस्ता, ममता, लक्ष्मी, सैनकी ,गीता, सुनीता, पुष्पा देवी , प्रेमा, मिश्री, लीला, लीला, मजु बाई कमला देवी, पारी बाई प्रेम, मजू बाई ,कमली, पानी बाई, गनकी, व अन्य।

कलयुग नहीं नवयुग कहो...!

आज भले ही घूम रहे विषधारी,
न हो गमजदा बहुत से है प्रहरी।
रहो न सकारात्मक हो बलिहारी,
बांट जोहते रहते हैं कृष्णबिहारी।
अब अबला ना कहो ये हैं 'नारी',
ये नवयुग की मॉडर्न जींसधारी।

आज भले ही घूम रहे विषधारी,
न हो गमजदा बहुत से है प्रहरी।
हटाओ अपनी नजरों से ये पर्दा,
जताओ इसके प्रति असीम श्रद्धा।
ये बन चुकी है ये अब तो 'सबला',
गौर से देखों इसे ये न रही रमला।

आज भले ही घूम रहे विषधारी,
न हो गमजदा बहुत से है प्रहरी।
सर्वत्र घूमने दो नररुपी विषधारी,
देखना बहादुर सजा तो है दुधारी।
अब न कल्पना कर उस वेदना की,
अली को ही जगाना है 'चेतना' भी।
इसलिए कलयुग नहीं नवयुग कहो!

संजय एम तराणेकर

अपने को पहचान।

तेरा अपना वजूद है,
तू कमजोर नहीं
फिर क्यों हार रहा है ज़िंदगी से,
अपने को पहचान।

नफ़रत के इस माहौल में,
तू राह मत भटक
आगे की सोच, क्यों परेशान है!
अपने को पहचान।

एक-दूसरे का सहारा बन,
जीवन में आगे बढ़
ज़िन्दगी है, दोबारा नहीं मिलती,
अपने को पहचान।

परेशानियों में तू हार मत मान,
संघर्ष ही जीवन की कहानी है।
जीत जाएगा एक दिन तू,
अपने को पहचान॥

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़
नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

तकनीकी विषयों पर नवीन शैली में दोहे प्रस्तुत हैं—

1. डिजिटल युग

डिजिटल युग अब दौड़ता, बदल-बदलकर चाल।
जो सीखे, वो बढ़ चले, चमके उसका भाल।।

2. सोशल मीडिया

लाइकों की भीड़ में, खोया सबका ध्यान।
आभासी इस दौर में, ढूंढ रहे पहचान।।

3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और भविष्य

सोच रहा है यंत्र भी, सीख रहा हर भेद।
नित मानव के ज्ञान में, करकर के अब छेद।।

4. साइबर सुरक्षा

पासवर्ड जो लीक हो, आए संकट घोर।
आभासी संसार में, काबू में रख डोर।।

5. ऑनलाइन शिक्षा

पढ़े सभी अब नेट से, खुली नयी है राह।
पर गुरु जैसा ज्ञान दे, कहे कौन अब वाह।।

6. मशीनों पर निर्भरता

यंत्र करेंगे काम सब, मनुज रहेगा मौन।
रुक जाएगी सोच गर, बुद्ध बनेगा कौन।।

7. सोशल मीडिया और समय

मोबाइल की लत लगी, थककर बैठे मौन।
इतना भी ना देखते, पास खड़ा है कौन।।

8. तकनीक और आलस्य

बटन दबे, हो काम सब, सुविधा मिले अपार।
परिश्रम घटता जो गया, जड़ता दे उपहार।।

ये दोहे आधुनिक तकनीक के फायदे और नुकसान दोनों को दर्शाते हैं।

-डॉ सत्यवान सौरभ

अस्पतालों में बिना ज़रूरत के बढ़ते सीज़ेरियन

-प्रियंका सौरभ

क्या आपको मालूम है कि सिजेरियन डिलीवरी, या सी-सेक्शन, दुनिया में सबसे अधिक की जाने वाली सर्जरी है? सीज़ेरियन सेक्शन बनाम नार्मल डिलीवरी का विषय काफ़ी चर्चा में रहता है, खासकर तब जब इसका ज़रूरत से ज़्यादा उपयोग होने लगे। कुछ लोग इसे एक रबिज़नेस मॉडलर मानते हैं, तो कुछ इसे मेडिकल साइंस की उपलब्धि के रूप में देखते हैं। सीज़ेरियन सेक्शन एक सर्जिकल प्रक्रिया है, जो तब की जाती है जब सामान्य (नार्मल) डिलीवरी संभव न हो या माँ और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए जोखिम हो। लेकिन आजकल कई जगहों पर यह मेडिकल ज़रूरत से ज़्यादा किया जा रहा है, खासकर निजी अस्पतालों में, जहाँ इसे जल्दी और सुविधाजनक समाधान के रूप में देखा जाता है। सीज़ेरियन अपने आप में ग़लत नहीं है, लेकिन जब यह व्यावसायिक फायदे के लिए या बिना ठोस मेडिकल वज़ह के किया जाता है, तब यह चिंता का विषय बन जाता है। सही जागरूकता और जिम्मेदारी से इसका उपयोग होना चाहिए। पिछले कुछ सालों में भारत सहित कई देशों में सीज़ेरियन की दर तेजी से बढ़ी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, केवल 10-15% मामलों में सीज़ेरियन आवश्यक होता है, लेकिन कई देशों में यह दर 50% या उससे अधिक हो चुकी है। भारत में कई निजी अस्पतालों में यह दर 50-80% तक देखी गई है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के निजी अस्पतालों में सीज़ेरियन डिलीवरी की दर 40-50% तक पाई गई, जबकि सरकारी अस्पतालों में यह लगभग 20-25% थी। स्वास्थ्य बीमा योजना और जननी-शिशु सुरक्षा कार्यक्रम जैसी योजनाओं में बिना आवश्यकता के मरीजों की सर्जरी कर दी जाती है, क्योंकि ऐसी योजनाओं में या तो प्रोत्साहन राशि मिलती है, या फिर बीमा कंपनी को लाभ होता है। इनमें सिजेरियन, हार्निया, गॉलब्लेडर, अपेंडिक्स आदि से सम्बंधित मामले अधिक हैं। यह दुखद है, क्योंकि ऐसे मामलों में सबसे ज़्यादा शोषण गर्भवती महिलाओं का होता है। सीज़ेरियन डिलीवरी का ख़र्च सामान्य डिलीवरी से 2-5 गुना अधिक होता है, जिससे अस्पतालों को अधिक मुनाफा होता है। नार्मल डिलीवरी में घंटों का समय लग सकता है, जबकि सीज़ेरियन एक तय समय में पूरा किया जा सकता है, जिससे अस्पतालों और डॉक्टरों को कम समय में अधिक डिलीवरी करने का मौका मिलता है। कुछ डॉक्टर निजी अस्पतालों में अपनी सुविधा के अनुसार डिलीवरी शेड्यूल करना पसंद करते हैं। कुछ महिलाओं को लेबर पेन का इतना डर होता है कि वे ख़ुद सीज़ेरियन करवाने के लिए तैयार हो जाती हैं। कई बार मरीजों को डराकर यह बताया जाता है कि बच्चा खतरे में है, जिससे वे सीज़ेरियन के लिए मजबूर हो जाती हैं।

कई मामलों में सीज़ेरियन ज़रूरी होता है, जैसेः बच्चे की पोज़िशन सही न हो, जैसे ब्रीच पोज़िशन। डिलीवरी के दौरान जटिलताएँ हो जाएँ, जैसे प्लेसेंटा प्रीविया, गर्भनाल का फँसना। माँ को गंभीर स्वास्थ्य समस्या हो, जैसे हाई बीपी, डायबिटीज, हृदय रोग। बच्चे को ऑक्सीजन की कमी हो और तुरंत डिलीवरी ज़रूरी हो। पहले भी सीज़ेरियन हो चुका हो और नार्मल डिलीवरी सुरक्षित न हो। लेकिन जब बिना किसी ठोस मेडिकल वज़ह के सिर्फ़ पैसे कमाने के लिए सीज़ेरियन किया जाए, तो यह नैतिक रूप से ग़लत है। कई प्राइवेट अस्पताल सीज़ेरियन को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि यह जल्दी हो जाता है और अधिक ख़र्च आता है। महिलाओं का डर और जागरूकता की कमी के चलते कई महिलाएँ दर्द से बचने के लिए सीज़ेरियन चुन लेती हैं, जबकि नार्मल डिलीवरी अधिक लाभदायक होती है। महिलाओं को इस बारे जागरूक किया जाए, ताकि वे नार्मल डिलीवरी को प्राथमिकता दें। डॉक्टर्स को ज़िम्मेदारी से काम करना चाहिए, सिर्फ़ ज़रूरत पड़ने पर ही सीज़ेरियन करना चाहिए। प्राकृतिक तरीकों को बढ़ावा दिया जाए, जैसे गर्भावस्था के दौरान योग और सही डाइट ताकि नार्मल डिलीवरी आसान हो सके।

इन सबके साथ-साथ सरकार को सख्ती से नियम लागू करने चाहिए, ताकि अनावश्यक सीज़ेरियन कम हों। नार्मल डिलीवरी को प्राथमिकता दें, जब तक कि मेडिकल कारण से सीज़ेरियन ज़रूरी न हो। गर्भावस्था के दौरान योग, सही खान-पान और व्यायाम करें, ताकि नार्मल डिलीवरी की संभावना बढ़े। अस्पतालों को अपने सीज़ेरियन और नार्मल डिलीवरी की दरें सार्वजनिक करनी चाहिए। महिलाओं को सीज़ेरियन की सिफ़ारिश मिलने पर दूसरे डॉक्टर से सलाह लेने की आदत डालनी चाहिए। सरकार को निजी अस्पतालों में अनावश्यक सीज़ेरियन रोकने के लिए सख्त नियम बनाने चाहिए। महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान सही जानकारी दी जानी चाहिए ताकि वे डॉक्टर के निर्णय को समझ सकें और सवाल पूछने में हिचकिचाएँ नहीं। अस्पतालों को नार्मल डिलीवरी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए। सिजेरियन डिलीवरी के बढ़ते मामलों पर अंकुश लगाने के लिए तेलंगाना के एक जिले ने तीन मिनट की एक लघु फ़िल्म बनाई है, 'सीजेरियन ला कू कथेरेधम' (आइए सिजेरियन डिलीवरी को कम करें)। दर्द से बचने के लिए बहुत-सी महिलाएँ नॉर्मल डिलीवरी की जगह सीज़ेरियन का विकल्प चुनतीं हैं, जो ग़लत है। सीज़ेरियन तभी सही है जब यह माँ और बच्चे की सुरक्षा के लिए ज़रूरी हो। अनावश्यक सर्जरी से बचना चाहिए क्योंकि यह शारीरिक और मानसिक रूप से माँ के लिए अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023